ISSN 2229-547X VIDEHA

विदेह ३६७ म अंक ०१ अप्रैल २०२३ (वर्ष १६ मास १८४ अंक ३६७)

[विदेह ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) www.videha.co.in]



विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन: मानुषीमिह संस्कृताम्



विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर।



Videha eJournal (link www.videha.co.in) is a multidisciplinary online journal dedicated to the promotion and preservation of the Maithili language, literature and culture. It is a platform for scholars, researchers, writers and poets to publish their works and share their knowledge about Maithili language, literature, and culture. The journal is published online to promote and preserve Maithili language and culture. The journal publishes articles, research papers, book reviews, and poetry in Maithili and English languages. It also features translations of literary works from other languages into Maithili. It is a

peer-reviewed journal, which means that articles and papers are reviewed by experts in the field before they are accepted for publication.

Font/ Keyboard Source: https://fonts.google.com/ , https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts , https://keyman.com/

These are print-on-demand books, send your queries to editorial.staff.videha@gmail.com The eBooks of some of these are available for sale on Google Play [(c) Preeti Thakur, sales.videha@gmail.com], send your queries to sales.videha@gmail.com The contents and documents e-published by Videha ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) are periodically being checked for accessibility issues. People with disabilities should not have difficulty accessing these contents/ documents.

Videha e-Journal: Issue No. 367 at www.videha.co.in

समानान्तर रामायणक रचयिता- *चित्र विदेह सम्मानसँ सम्मानित श्री पनकलाल मण्डल द्वारा*

मैथिली भाषा जगज्जननी सीतायाः भाषा आसीत्। हनूमन्तः उक्तवान- मानुषीमिह संस्कृताम्।

अक्खर खम्भा (आखर खाम्ह)

तिहुअन खेत्तहि काञि तसु कित्तिवल्लि पसरेइ। अक्खर खम्भारम्भ जउ मञ्चो बन्धि न देइ॥ *(कीर्तिलता प्रथमः पल्लवः पहिल दोहा।)*

मात्र आखर रूपी खाम्ह निर्माण कऽ ओहिपर (*गद्य-पद्य रूपी*) मंच जँ नै बान्हल जाय तँ के त्रिभुवनरूपी क्षेत्रमे ओकर कीर्तिरूपी लत्ती कोना पसरत।

Do not judge each day by the harvest you reap but by the seeds that you plant. -Robert Louis Stevenson

...

Videha: Maithili Literature Movement

ॐ द्यौ: शान्तिरन्तरिक्ष ग्वंग शान्ति:

𑓇 𑒠𑓂𑒨𑒾𑓁 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱𑒩𑒢𑓂𑒞𑒩𑒱𑒏𑓂𑒭 𑓅 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱𑓁

अनुक्रम

एहि अंकमे अछि:-

२.२.संतोष कुमार राय 'बटोही'- डायरी- 'लव यू टू' (आगाँ)

२.३.संतोष कुमार राय 'बटोही'- संस्मरण - 'कुमनजी'

२.४.नवीन्द्र नारायण मिश्र- मकान मालिक आ किरायादार

२.५.नवीन्द्र नारायण मिश्र- मातृभूमि (उपन्यास)- २४ म खण्ड

२.६.कुमार मनोज कश्यप- प्रतिदान

२.७.निर्मला कर्ण- अग्नि शिखा (खण्ड-१६)

२.८.जगदीश प्रसाद मण्डल-जिनगी स्यान बनि गेल

२.९.आचार्य रामानन्द मण्डल-गौनी आ प्रेम मे धोखा

२.१०. डॉ. किशन कारीगर- मिथिला मैथिली क घून जँका खाखेन क खा गेल (हास्य कटाक्ष)

२.११.लाल देव कामत- तीन टा पोथीक समीक्षा

३.यष्ठ खण्ड

३.१.राज किशोर मिश्र-नारी

३.२.मुन्नी कामत- नामायण

३.३.बाबा बैद्यनाथ- गजल- आधान- "रजनी छन्द"

३.४.डॉ. किशन कारीगर- ह्वौ गाम न गौआ छियरु



ॐ द्यौ: शान्तिरन्तरिक्ष ग्वंग शान्तिः पृथ्वी शान्तिराप: शान्तिरोषधय: शान्ति वनस्पतय: शान्तिर्विश्वे देवा: शान्तिर्ब्रह्म

ওঁ দ্যৌ: শান্তিৰন্তৰিক্ষ Ŵ শান্তিঃ পৃথ্বী শান্তিৰাপ: শান্তিৰোষধয: শান্তি ৰনস্পতয: শান্তিৰ্বিশ্বে দেৱা: শান্তিৰ্ব্ৰহ্ম

ब्रह्मणसँ प्रार्थना जे द्युलोकमे, अंतरिक्षमे, पृथ्वीपर, जलमे, औषधमे, वनस्पतिमे, विश्वमे, सभ देवतागणमे आ ब्रह्ममे शांति हुअय।

ॐ-ब्रह्मण, द्यौ-सूर्य-तरेगण, अंतरिक्ष- पृथ्वी आ द्यूलोकक बीच, आप:-जल, विश्वेदेवा- सभ देवता, ब्रह्म- सर्जक।

ব্রহ্মণসঁ প্রার্থনা জে দ্যুনোকমে, অংতৰিক্ষমে, পৃথ্বীপৰ, জনমে, ঔষধমে, রনস্পতিমে, রিশ্বমে, সভ দেরতাগণমে আ ব্রহ্মমে শাংতি হুঅয।

ওঁ-ব্রহ্মণ, দ্যৌ-সূর্য-তৰেগণ, অংতৰিক্ষ- পৃথ্বী আ দ্যুনোকক রীচ, আপ:-জন, রিশ্বেদেরা- সভ দেরতা, ব্রহ্ম- সর্জক।

ॐ, सहस्रशीर्षा पुरुषः। सहस्राक्षः सहस्रपात्।

ওঁ, সহস্রশীর্ষা পুরুষঃ। সহস্রাক্ষঃ সহস্রপাত্।

स भूमिं ग्वंग विश्वतो वृत्वा। अत्यतिष्ठद् दशाङ्गुलम्॥

স ভূমিং ग्वं রিশ্বতো বৃত্বা। অত্যতিষ্ঠদ্ দশাঙ্গুনম্॥

हजार माथ, हजार आँखि, हजार पएर संग विश्वकेँ आच्छादित केने अछि, दस आंगुरक गनतीक वशमे नै अछि ओ।

ॐ सहस्त्रंशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रंपात् ॥ सभूमिंसर्व्वतस्पृत्वा त्त्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥

पद्भ्यागँ् शूद्रो अंजायत॥

প↓ড্যাগ্ঁ↑ শূ↓দ্রো ঋ↑জাযত॥

पएरसँ शूद्रक उत्पत्ति भेल॥

पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रा□त्।

প↓ড্যাং ভূমি↓র্দিশঃ↓ শ্রোত্রা↑↑৯।

मुदा पएरेसँ भूमियोक उत्पत्ति।

❀ (White Florette- innocence and purity)

☸ (Wheel of Dharma)

卐 (Swastik)

꣼ (सिद्धिरस्तु, सिद्धम 𑒮𑒱𑒠𑓂𑒡𑒱𑒩𑒮𑓂𑒞𑒳, 𑒮𑒱𑒠𑓂𑒡𑒧 Devanagari Anji)

Ẇ (Gwang ग्वंग- two small circles connected by u and a dot placed over it, used in reference of Vedic texts)

𑓆 (Tirhuta Anji, Ankush of Ganeshji, placed at the beginning of something)

𑓆



१.१.गजेन्द्र ठाकुर- नूतन अंक सम्पादकीय

१.२.अंक ३६६ पर टिप्पणी

१नूतन अंक सम्पादकीय -गजेन्द्र ठाकुर.१.

१

नामवङ्क नाय प्रसिद्ध नामु सनक लघु आ दीर्घ कथाक संग्रह 'सयना साकान'

नामवङ्क नाय प्रसिद्ध नामु सनक लघु आ दीर्घ कथाक संग्रह 'सयना साकान' क कथा 'गाहीं जिगलँ हमहीं हानलों' म सवर्ण आ गजन सवर्णक मिलि झलि कऽ नहवाक वर्णनक संग ञ्छीहा ज नवीनक माय-वावुक कौवला-यागी नाकनीक यहिल दनमाहासँ कौवल-यागी यूना कनगा आ हन जकटा अन्तर्जातीय प्रम कथा, ञ्छी सरटा रटगा। प्रम-प्रसंगम अयहनधक कस दर्ज हाञ्छग छै, स जन्मी रला। मुदा नूनु रैया हन मानि गेला। 'सयना साकान' आत्मकथात्मक अछि स वूसवाम किनका राढ़0 नै हगनि। आ गनर्दैनिक उगनी उगानवाक नव निधि, जगानहटा यूनकक प्रतिष्ठा कर्मकाण्ड आ मृत्युराजक निरूद्ध। हंकाजल जिनगीम स्त्रीक जीवन, मानसिक नाग सर किछु रटगा। यगली यगली नै छलि। उाकना घनम रगमन्द वूसल जाञ्छ छलै, मुदा वियाहक वाद..।

मुदा जे संग्रहक श्रेष्ठ कथा सर अछि दीर्घकथा "निनवासित जीवन" आ "वूधनी माञ्छक वथा"।

'वूधनी माञ्छक वथा' म यंवायगक वैसानम महिलाक उयस्थिति

आह्लादित करैत अछि गँ डाक्टर बूधनी माउक ड्यूटिना अनासक्त ढनमनायल घनक वर्णन सेहो स्फुटल नै अछि। सम्पूर्ण अछि, बूधमी माउ डाक्टर खालती नाम। चन्द्रबाबू डाकना धूपकाने छथि, उत्तर याय करूया कऽ डा जीविता कना छथि? यूनक सर्ग डाकना जिह्वा जउा दवाक चाही। आ बूधनी शुनु- सर यंवकँ यैननाम! आ डँ दम मुO वाजी गँ दरयन वज्ञान खसय, अंग काज नै आवय, सीताक दुमिम प्रवेश मान यउल? बाढिम बाह्र दूटलै, गिनतो डाक्टरOाम वनान-बासन (धाक्कु कऽ बाक्कुन कऽ गुजन करैत छली मुदा डाहो नै नदऽ दलकनि। श्रा अवैत काल जगत दखन नहि..। मुदा विनु यंवैती कन यंव सर क्कूी वजैत, ज जगत नजायज कलक, चलि गेला। जगतक धाकक चलत किया वढी नै बाजल। मुदा निसीराग नागिम माय वटी गीनटा ननयूनकक कहलायन थाना विदा हली, मुदा जगतक धाक डाक्टरी नहि। मुदा गैया.. मुदा यूलिस अयन बायाक नै हाक्कु छै। मुदा आशाक किनिध अछि किछु ननयूनक सर। बूधनी माय वद्याकँ जन्म हती, डी.उन.ए. कन निषयम नै बूमल छहि मुदा स बूमल छहि ज काना टस्य हाक्कु छै आ टस्यसँ बाय जगत सिद्ध हती।

"निननासित जीवन" दीर्घकथा सेहो नीक अछि। उकर यहिल विशेषता अछि- मनूक्खक व्यंग्यात्मक शैली जकना कथाकार उठौन छथि। दनामनालीक घनम चानि! चानक वृक्कुध चानि दऽ गेल नहि की? मुदा दनामनाली सैजी कँ बूमल छहि ज क्कूी चानि नै किया उछन्नन दऽ नहल छहि। आ स सूनि गुटकून राक्कु हूनकन खिस्सा बूमैल अययाँग दऽ जाक्कु छथि।

ई दीर्घकथाक दोसर विशेषता अछि मनुक्खक जीवन शैलीक सूक्ष्मतासँ अवलोकन आ अभिलेखन। माटि-कट्टीक वस्त्र उघैत जमा गुटकुन मुदा सौजीक घरमे दलान नै छन्हि से सास आंगन कोना चलि जेता? सौजी पुरुख सभकेँ छहरक कोन-कोन माठ हिनौ देखि लजा जाइ छथि मुदा हुनका सभकेँ कोना लाज नै। मुदा से ऊँ स्त्री करय लागय तखन? आ पुरुख प्रधान समाजक दंश..। मुदा आब शिक्षित स्त्री आगाँ बढ़लथि, अदहा-अदही आरक्षण सरकार हुनका देने छन्हि।

ई दीर्घकथाक तेसर विशेषता अछि लेखकक शब्द रचना जे आवश्यक छल रचनावली सौजीक जिनगीक अभिलेखन लेल।

"विनवासित जीवन" आ "बूधनी माइक व्यथा" एकरा औपन्यासिक विस्तार देने अछि आ ऐम रूम रामू सरक नूतन मैथिली लेल एकटा रानी उपन्यासकारकेँ देखै छी।

२

११२म 'सगर राति दीप जरय' सहुरियाबरौली- मे सम्पन्न भेल

'सगर राति दीप जरय' कथासाहित्य गोष्ठीक ११२म आयोजन - मार्च २०२३क शनि दिन मधुबनी जिलाक अन्धरा दिनांक २५ बाजारक सटल शिवा पंचायत अन्तर्गत अभिनव शिक्षा निकेतन, सहुरिया बरौली केर परिसर मध्य-प्रसिद्ध कथाकार श्री राम बहादुर राय उर्फ रामू सरजीक संयोजकत्वमे सम्पन्न भेल। आयोजनक

शुरानन्द विद्वान सनकानक लाक स्वास्थ्य यांत्रिकी निरागक युर्व मंत्री डॉनामय्रीण यासवान ., साहित्य अकादमी द्वारा क्रमशआ २०२० : .२०२१क यूनस्कान य्राप्त द्वय साहित्यकान डॉकमलकान्त मा आ श्री जगदीश प्रसाद मण्डल, अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली साहित्य यनिषद्व अध्यक्ष डॉधनाकन ठाकुन ., प्रगतिशील लखक संघ, मधुवनीक सचिव श्री अनिरुद्ध प्रसाद, दिल्ली उच्च न्यायालयक अधिवक्ता श्री व्रह्मानन्द प्रसाद आ वरिष्ठ साहित्यकान श्री नामश्रेष्ठ दिनानाजी सामूहिक नूपँ दीय प्रज्ज्वलित कअ कलैन। मंचासिन अतिथिगणकँ युष्पमाला आ वन वस्त्रसँ सम्मानित कनैत उद्घाटन सत्रक मंच संचालक श्री नाम वक्ष नायजी कार्यक्रमकँ आगू वढौलैन। सर्वप्रथम सुश्री शशिप्रभा आ सुश्री वक्षा कुमानी द्वारा स्वागत गान प्रस्तुत कअल गेल। तयश्चात् हम उमश) स्वागत राषणक संग (मण्डल'सगन नाति दीय जनय'क ऐ कथा-उा कहलैन -यात्राक संक्षिप्त यनिचय प्रस्तुत कनैत वजलौं, मैथिली साहित्यक विकास हतु समर्पित अनका मंचक मध्य मात्र यएह एक उाहन मंच अछि जैयन उयस्थिति लल काना नाकटाक किनका लल -नहि। मैथिली कथाक विकासमे 'सगन नाति दीय जनय'कँ कथाकान-समीक्षक हतु वर्कशॉय कहल जाइत अछि। उद्घाटनक सत्रकँ जानी रहल विश्राम कुल दस गोट याठीक -नखैत विरिन्न साहित्यकानक रिन्न कथा सत्रम प्रवश कनैत एक विशिष्ट :लाकयांण सत्र रहल। क्रमश अध्यक्ष मण्डलक गठन रहल जइमे साहित्यश्री यीतमकुमान निषाद, श्री नाम विलास साहु, डॉशिव कुमान प्रसाद ., प्रानामश्वन प्रसाद . मण्डल, श्री कयिलश्वन नाउत, श्री उमश नानायण कर्ण आ यंशिव . कुमान मिश्रकँ मंचासिन कनौल गेलैन, संगे हनि नातिक ऐ सत्रक संचालन हतु श्री नानायण यादव, श्री दुर्गानन्द मण्डल, श्री वैजनाथ

नाम आ श्री नन्द विलास नायजी सहो मंचासिन रहला। सवहक सम्मानक संग प्रथक कथाकान ऊा समीऊक लाकनिकँ सहो नव वस्त्र आ पुष्पमालासँ सम्मानित कयेन विरिन्न यालीम कुल ३४ गोट कथाक या0 रहल आ यठित कथासरयन पुर्व गोष्ठीक रहँत समीऊाटियाणी - वऊ रिन सहो रहला ६सनम दीय आ यंजी आगामी संयाजक श्री) यंजी लोत श्री यादवजी -कँ प्रदान कजल गेलैन। दीय(नानायण यादव आगामी आयाजनक घाषणा कयेत कहलैन ज'सगन नात दीय जनय'क ऊगला दीय, नहनी गामम ज्ञन मासक अन्तिम (खुटौना) शनि दिन जनत।

अवसनियन लाकार्यित याथी आ यठित कथा सवहक विवनण निम्न अछि-

१. सयना साकान (कथा संग्रह) : श्री नाम वक्ष नाय ऊर्फ नामु) (सन;२. उयायन श्री नाज किशान मिश्र : (काव्य संग्रह); ३. जगदीश प्रसाद मण्डल जक जीवनी : : श्री नामश्चन प्रसाद मण्डल; ४. नावि नहल छलि वसुधा (उयन्यास) : श्री नवीन्द्र नानायण मिश्र;५. अन्हवैनि : (कथा संचयन) ऊँउमश मण्डल .; ६. Jagdish P. Mandal Maithili Writer : Sh. Gajendra Thakur; ७. सहन्हा सहनत नहि गेल (कथा संग्रह) : श्री जगदीश प्रसाद मण्डल; ८. सुनयना वटी श्री जगदीश प्रसाद : (उयन्यास) मण्डल; ९. मिथिला सयुत ऊँगुनमौत . : ऊँकमल कान्त . सा; १०. मावाञ्छलक लिला (ललित निवन्ध(: ऊँकमल कान्त सा .

कथा या0-

१. घटैतदिया बच्चा -बटैत बच्चा मामा-; २. गोबर बिछनीनारायण -यादव; ३. घी काओ हराओल गँ दालिमनन्द विलास -राय; ४. बहुगुनी रातीजनक लाल मण्डल -; ५. दखलपर दखल -पल्लवीमण्डल; ६. टाल्हुम पासधराकर ठाकुर -; ७. परब करा -रविन्द्रपथ कुमार; ८. मधुमाछी आ माछीराम विलास -साहु; ९. मावाल्हुल स्कुलबच्चा मारुर आचार्य -; १०. करुवी रुल -कमलकान्त झा; ११. दुर्कानालीउमेश नारायण कर्ण -; १२. बानिम कथामानव अनीश मण्डल -; १३. बकविदान रामश्वर प्रसाद -मण्डल; १४. तायनासार रुबासँ बँचाउअरविन्द प्रसाद -; १५. प्रेमक विश्वादुर्गानन्द मण्डल -; १६. परछाँहीशाली पासवान -; १७. पूनरा स्नीटरविनिगिक कुमार -; १८. असल बार कवीधा .ठाँ -प्रसाद; १९. सहादरकुमार सुनील नारायण -; २०. माल्हुक ममता -जगदीश मण्डल; २१. टलिविजनक मुसलमाननाम नरेश -यादव; २२. सरसक गाछराधाकान्त मण्डल -; २३. अप्पन आसा -प्रीतम कुमार निषाद; २४. गोबर कढनीकपिलश्वर राउत -; २५. दस नर्षक वादउमेश मण्डल -; २६. स्कानक महल्लशिव कुमार -मिश्र; २७. आमक खीम गायक पागदानवचन -ठाकुर; २८. रुगनान गुखल नरु राखय स्कथि- गोरी शंकर साहु; २९. करल्हुसकीसंतोष कुमार राय -; ३०. पनिश्रमक रुल -पनमानन्द कुमार राय; ३१. बाबूजीक अरमानसत्यनारायण -व्यास; ३२. दलित मजदुर बैजनाथी राम-; ३३. शॉर्टकट रास्ता -जगदीश प्रसाद मण्डल; ३४. नशामुक्त गामनाम बच्चा राय उर्फ -रामु सर।

सगन नागि दीय जनय यद्दिल सँ ११२ धनिक कथा यात्रा

१. मृजफ्फनयून, २१.०१.१९९०, प्रगास कुमान चौधनी; २. तउाढ, २९.०४.१९९०, जीनकान्त; ३. दनभंगा, ०१.०१. १९९०, डॉ. गीमनाथ मा, प्रदीय मैथिली यूत्र, विजयकान्त ठाकुन; ४. यटना, ३.११.१९९०, गोविन्द मा, दमनकान्त मा; ५. वगुसनाय, १३.०१.१९९१, प्रदीय विद्दानी; ६. कटिद्दान, २२.०४.१९९१, अशोक; ७. नवानी, २१.०१.१९९१, माद्दन गानद्वाज; ८. सकनी, २२.१०.१९९१, प्रो. सुनश्चन मा, डॉ. नाम वावू; ९. नद्दना, ११.१०.१९९२, ७.सी. दीयक; १०. विनाटनगन, १४ .०४.१९९२, जीगद्ध जीग; ११. वानाधसी, १८.०१.१९९२, प्रगास कुमान चौधनी; १२. यटना, १९.१०.१९९२, नाजमाद्दन मा; १३. सुयौल- १, १८.१०.१९९३, कदान कानन; १४. वाकाना, २४.०४.१९९३, वुद्धिनाथ मा; १५. यैटघाट, १०.०१.१९९३, डॉ. नमानद्द मा 'नमध' ; १६. जनकयून, ०९.१०.१९९४, नमश नंजन; १७. ह्सद्दयून, ०६.०२.१९९४, डॉ. अनविद्द कुमान 'अक्कु'; १८. सनद्दद, २३.०४.१९९४, अमिय कुमान मा; १९. मंमानयून, ०९.०१.१९९४, श्यामानद्द चौधनी; २०. घाघनडीद्दा, २२.१०.१९९४, डॉ. नानायधजी; २१. वद्द ना, २१.०१.१९९५, कमलश मा; २२. सुयौल (दनभंगा) , ०८.०४.१९९५, कमलश मा; २३. काठमांडु, २३.०९.१९९५, धीगद्ध

प्रमर्षि; २४. नाजिनाज, २४.०१.१९९६, नामनानायघ
दन; २७. कालकाणा (नजरा जयंती, २८.१२.१९९६), प्रकास कुमान
चौधनी; २६. महिषी, १३.०४.१९९१, डॉ. गानानह नियागी/ नमश
प्रायाजिग; २१. गनौनी, २०.०६.१९९१, शाराकान्त; २८. यटना, १८.
०१.१९९१, प्रकास कुमान
चौधनी; २९. वगूसनाय, १३.०९.१९९१, प्रदीय
विहानी; ३०. खजौली, ०४.०४.१९९८, प्रदीय
विहानी; ३१. सहनसा, १८.०१.१९९८, नमश; ३२
यटना, १०.१०.१९९८, श्याम
दनिहन; ३३. वलाङ्गन; नागदह, ०८.०१.१९९९, यदम
सम्रन; ३४. रुनानीयून, १०.०४.१९९९, डॉ. जिष्णू दक्ष
मिश्र; ३७. मधूवनी, २४.०१.१९९९, सियानाम
मा 'सनस', डॉ. कुलधानी सिंह; ३६. अष्टौली, २०.१०.१९९९, कमलश
मा; ३१. जनकयून, २७.०३.२०००, नमश
नंजन; ३८. का0मांतू, २७.०६.२०००, धीनह्न
प्रमर्षि; ३९. धनवाद, २१.१०.२०००, श्याम दनिहन ७वं नामवह्न
लालदास; ४०. विटशा, २१.०१.२००१, डॉ. अक्कू, प्रा.नित्यानह
मा; ४१. हटनी (घाघनडीहा), १९.०७.२००१, प्रा. यागानह
मा/अजिग कृ.आजाद; ४२. वाकाना, २७.०८.२००१, गिनिजानह
मा 'अर्धनानीश्वन', मिथिला
सा. यनिषद्; ४३. यटना, किनधजयंती, ०१.१२.२००१, अशाक, चग
ना समिति, यटना; ४४. नाँची, १३.०४.२००२, कुमान मनीष
अनविह; ४७. रागलयून, २४.०८.२००२, धीनह्न माहन
मा; ४६. यटना, (नित्यायित रुवन यटना), १६.११.२००२, अजिग

कुमार
आजाद; ४१. कालकाता, २२.०१.२००३, कर्णगोष्ठी, कालकाता; ४८. खुटौना, ०१.०६.२००३, डॉ. महेन्द्र नारायण राम; ४९. बेनीपुर, २०.०९.२००३, कमलेश झा; ५०. दरभंगा, २१.०२.२००४, डॉ. अशोक कुमार मेहता; ५१. जमशेदपुर, १०.०१.२००४, डॉ. रवीन्द्र कुमार चौधरी; ५२. राँची, ०२.१०.२००४, विवेकानन्द ठाकुर ; ५३. दरघर, ०८.०१.२००५, श्याम दरिहरे एवं अविनाश; ५४. बेगूसराय, ०९.०४.२००५, प्रदीप बिहारी; ५५. पूर्णियाँ, २०.०६.२००५, रमेश; ५६. पटना, ०३.११.२००५, अजीत कुमार आजाद; ५७. जनकपुर (नेपाल), १२.०८.२००६, रमेश रंजन; ५८. जयनगर, ०२.१२.२००६, नारायण यादव; ५९. बेगूसराय, १०.०२.२००७, प्रदीप बिहारी; ६०. सहरसा, २१.०१.२००७, किसलय कृष्ण; ६१. सुपौल-२, ०१.१२.२००७, अरविन्द ठाकुर; ६२. जमशेदपुर, ०३.०५.२००८, डॉ. रवीन्द्र कुमार चौधरी; ६३. राँची, १९.०१.२००८, कुमार मनीष अरविन्द; ६४. रहुआ संग्राम (मधुबनी), ०८.११.२००८, डॉ. अशोक अविचल; ६५. पटना, कथा गंगा-३, २१.०२.२००९, अजित कुमार आजाद/ रचना समिति; ६६. मधुबनी, ३०.०५.२००९, दिलीप कुमार झा; ६७. समस्तीपुर, ०५.०९.२००९, रमाकान्त राय 'रमा'; ६८. सुपौल- ३, ०५.१२.२००९, अरविन्द

ठाकुर; ६९. जनकपुर, ०३.०४.२०१०, राजाराम सिंह 'राठौर'; १०. कबिलपुर (दरभंगा), १२.०६.२०१०, डॉ. योगानन्द झा; ११. बनमा (झंझारपुर), ०२.१०.२०१०, जगदीश प्रसाद मण्डल, स्थानीय साहित्य प्रेमी; १२. सुपौल, ०४.१२.२०१०, अनिरुद्ध ठाकुर; १३. महिषी, कथा राजकमल, ०५.०३.२०११, विजय महायात्री; १४. हजारीबाग, १०.०९.२०११, श्याम दरिहरे; १५. पटना, दिनकर जयन्ती, १०.१२.२०११, अशोक एवं कमलमोहन 'चुन्नू'; १६. चनौर, १४.०१.२०१२, विभा रानी; १७. दरभंगा, किरण जयन्ती, ०१.१२.२०१२, अनिरुद्ध ठाकुर ; १८. घनश्यामपुर, ०९.०३.२०१३, कमलेश झा; १९. औराहा (लौकही), १५.५.२०१३, उमेश पासवान; २०. निर्मली (सुपौल), ३०.११.२०१३, उमेश मण्डल, स्थानीय साहित्य प्रेमी; २१. देवघर, (बिजली कोठी, बम्पासटॉन, देवघर), २२.०३.२०१४, ओम प्रकाश झा; २२. मेंहथ, (झंझारपुर), कथा बौध सिद्ध महथया, ३१.०५.२०१४, गजेन्द्र ठाकुर; २३. सखुआ-हपरियाही, ३०.०८.२०१४, नन्द विलास राय/भागुलाल साहु/सूरज नारायण राय 'सुमन'; २४. बनमा (मधुबनी), २०.१२.२०१४, शिवकुमार मिश्र, स्थानीय साहित्य प्रेमी; २५. भागलपुर, (श्याम कुंज, भानिकापुरी भागलपुर), ०४.०४.२०१५, ओम प्रकाश झा ; २६. लकसना (मधुबनी), २०.०६.२०१५, राजदेव मण्डल 'रमण', सत्यदेव 'सुमन'

; ८७. निर्मली (सुपौल), १९.०९.२०१५, उमेश मण्डल, स्थानीय साहित्य प्रेमी ; ८८. मध्य विद्यालय- उखनाम (बनीपुर), ३०.०१.२०१६, कमलेश झा, अमर नाथ झा ; ८९. लौकही, २६.०३.२०१६, उमेश पासवान एवं प्रेम कुमार साहु; ९०. लक्ष्मीनियाँ (मधुबनी), १८.०६.२०१६, राम विलास साहु, स्थानीय साहित्य प्रेमी; ९१. गोधनपुर (मधुबनी) २४.९.२०१६, दुर्गानन्द मण्डल; ९२. बरानी (मधुबनी), ३१.१२.२०१६, अजय कुमार दास 'विनू'; ९३. रागसारा (घाघरडीहा), २५.०३.२०१७, राजदेव मण्डल, स्थानीय साहित्यानुरागी ; ९४. लोहा (मधेपुर), २४.०६.२०१७, डॉ. योगेन्द्र पाठक वियोगी, स्थानीय प्रेमी ; ९५. जलसैन उमरा (मधुबनी), ०९.९.२०१७, नारायण यादव; ९६. धबौली (लौकही), १६.१२.२०१७, राधाकान्त मण्डल ; ९७. बनमा (लखनौर), २४.३.२०१८, कपिलेश्वर राउत, बनमा ग्रामवासी ; ९८. सिमरा (संग्रामपुर), १६.६.२०१८, डॉ. शिव कुमार प्रसाद ; ९९. मुरहद्दी, (बउकी टोल), २२.९.२०१८, प्रो. प्रीतम निषाद , १००. निर्मली (गनायंथ स्कन), २२.१२. २०१८, उमेश मण्डल, बबनन्न बंगानी, मनीष जालान ; १०१. सिरकी (मधुबनी), ३०.३.२०१९, रानग सुषम झा ; १०२. मझौना, (मधुबनी), २९.०६.२०१९, जय प्रकाश मण्डल, आलोक कुमार; १०३. रामपुर (मधुबनी), २८.९.२०१९, उमेश नारायण कर्ण 'कल्प कवि' ; १०४. बलम नगर-

महुदना (लौकही), १४.१२.२०१९, प्रेम कुमार साहु, उमेश पासवान; १०३. दरभंगा (सीतायन सभागार), १३.०२.२०२१, कमलेश झा ; १०६. हटनी (घोघरडीहा, मधुबनी), २७.०९.२०२१, लालदेव कामत; १०७. बलहा (फुलपरास), २७.१२.२०२१, जीवकान्तक स्मृतिमे, उमेश मण्डल, डॉ. शैलेन्द्र मण्डल; १०८. मधुरा (मधुबनी), २६.०३.२०२२, डॉ. श्रीशंकर झा; १०९. नरौन (मधुबनी), २७.०५.२०२२, प्रदीप पुष्प; ११०. सोनवर्षा (लौकही), २४.०९.२०२२, अम्बुलाल शास्त्री, स्थानीय साहित्य प्रेमी; १११. नरुआर संग्राम (मधुबनी) ३१.१२.२०२२, अशोक अविचल; ११२. सहुनिया (अन्धराठाढी) मे २७ मार्च २०२३, रामचन्द्र राय। ११३ म सगर राति दीप जरय जून २०२३ मासक अन्तिम शनि दिन होएत- आगामी संयोजक श्री नारायण यादव [स्थान नरही (खुटौना)ग्राम]।

१११म 'सगर राति दीप जरय' नरुआर संग्राममे सम्पन्न भेल

साहित्य अकादेमीक मैथिली परामर्शदातृ समितिक अध्यक्ष डॉ. अशोक अविचल व्यक्तिगत आवाहनपर १११म 'सगर राति दीप जरय'क आयोजन, वर्षक ३१ दिसम्बर २०२२ शनि दिन, नरुआर संग्रामक 'आदिनाथ मधुसूदन पारस मिश्र संस्कृत महाविद्यालय'क सभागारमे सफलतापूर्वक सम्पन्न करबलनि। ३३ टा नूतन कथाक पाठ भेल। पठित कथा सभपर मैथिली कथाकार लोकनि टिप्पणी केलनि।

एहि विशिष्ट विधाक ११ वार्षिक कार्यक्रम सम्पन्न भेल। ई आयोजन तीन-तीन मासपर, वर्षमे चारि बेर आयोजित होइत। प्रथम 'मार्च'मे, द्वितीय 'जून'मे, तृतीय 'सितम्बर'मे आ चतुर्थ 'दिसम्बर'मे।

एहि किछु मूलधाराक साहित्यकार नाम नै लेबाक शर्तपर सूचित कयलन्हि, जे अशोक अविचल आ तारा कान्त मिश्रक लिटरेरी असोसियेशन साहित्य अकादेमीक सम्बन्धियमे एकटा नाम आगाँ अनलक अछि- डॉ. अजय कुमार झा जे अशोक अविचलक शिष्य छथि (किछु लोकक अनुसार समधियौत पितियौत); ओ मूलधाराक कथाकार लोकनि १११म सगर राति दीप जरयक बहिष्कार कयलनि। ई पुछलापर जे तखन विभूति आनन्द, शैलेन्द्र कुमार झा, दमन कुमार झा आ अशोक कुमार मेहता कोना १११म सगर राति दीप जरयमे पहुँचला, ओ डा सेहो सूचित कयलनि जे तीनू बान्हू लोकक कहान अशोक अविचलसँ भेलन्हि जे डा एकरा ११२ म सगर राति दीप जरय लिखता, मुदा डा कोना आमंत्रणमे से नै कयलन्हि आ बैनरपर उपरमे छोट सन 'क्रम ११२' लिखलन्हि। तकरापर संचालक शैलेन्द्र कुमार झा केँ उसकेलापर अध्यक्ष विभूति आनन्द सहित दमन कुमार झा आ अशोक कुमार मेहता २-३ घण्टा बाद खाली कए डाक सँ प्रस्थान कए गेला, मुदा समानान्तर धाराक सेहो कथाकार सभ बनि गोष्ठीमे रहि एकरा सफल बनौलन्हि। एहि ई स्पष्ट कए दी जे ई कृत्य शैलेन्द्र कुमार झा पहिनहियो कने छथि जे विदेहमे अभिलेखित अछि [८९म सगर राति दीप जरय, बौनहा (लौकही), १७.७.२०१३, संयोजक- उमेश

पासवान; शैलेन्द्र झा द्वारा क्रमांक ९० नै कयलापर गोष्ठीक बहिष्कार

आ हुनका उपकुलपति अशोक कुमार मेहता सेहो बहिष्कार कएलनि]। एतऽ इहो स्पष्ट कऽ दी जे दीपेन्द्र कुमार झा लूज टॉक करैमे माहिर छथि आ अपना संङ आयल लोकक विषयमे, कनिया ऊँ ऊ सभ एम्हर-ओम्हर गेला, ई ढाकीक ढाकी विषवमन करै छथि। संगहि इहो स्पष्ट कऽ दी जे समानान्तर धाराक लेखक लोकनिक सगर राति दीप जरयमे आगमनसँ पूर्व, जखन दीपेन्द्र कुमार झा सभक बालबाला छलाह, गोष्ठीमे सभ खा पी कऽ सुति जाइ छला आ मात्र कथा पढ़निहार असगर जागल रहै छला, जकर निताधम आशीष अनचिन्हार कथा पढ़बासँ मना कऽ देल रहथिन्ह, मुदा मूलधारा स्रोतमे जे बूझू देलक तइमे ई गप नै आयल। ई सभटा खबरि हमर पोथी प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना भाग-२ मे अभिलिखित कएल गेल अछि जे उपलब्ध अछि http://videha.co.in/pothi.htm पर। साहित्य अकादेमी द्वारा गत दस वर्खसँ समानान्तर धाराक एकमात्र स्कूल सगर राति दीप जरय केँ तोड़बाक प्रयास कएल जा रहल अछि। आगामी ११२म 'सगर राति दीप जरय'क आयोजन श्री नामचन्द्र नायक संयोजकत्वमे हुनक पैतृक गाम- सहुनिया (अन्धराठाढ़ी) मे 'मार्च' २०२३ मासक अन्तिम शनि दिन हएत, से सर्वसम्मतिसँ निर्धारित भेल। दीपेन्द्र कुमार झा अपन ब्लैकमेलिंग आगाँ सेहो पूर्ण निष्ठासँ जारी राखलनि जखन ०२.०१.२०२३ केँ नामचन्द्र नायकेँ फोन कऽ आगामी गोष्ठीक क्रमांक ११२ आ ११३ करबाक दुष्टतापूर्ण ब्राह्मणवादी आग्रह कएलन्हि आ धमकेलन्हि, जइसँ काना ननहुँ साहित्य अकादेमीक गोष्ठीकेँ सगर राति दीप जरयक मान्यता भेटि जाय, फेर ०७.०१.२०२३केँ घट्टी

मानलन्हि। साहित्य अकादमी हुनका दस वर्षसँ जानि ओ बुझितो प्रयासक महत्ताकेँ देत रहलन्हि आ ओँ ने देत छथि तँ आगाँ देतन्हि। निदेशक आगामी साहित्यिक ग्रन्थागार विशेषांक मे सेहो गपक खुलासा हएत।

ओ सम्बन्धमे हुनका स्पष्ट कऽ दी जे अशोक अविचल ओ गोष्ठीक आयोजन पूर्व रूपसँ व्यक्तिगत रूपेँ कहने रहथि। दिल्लीक साहित्य अकादमीक गोष्ठी जे टैगोरक १५० जयन्ती वर्षमे आयोजित भेल आ जकरा साहित्य अकादमी अपन वार्षिक रिपोर्ट आ आय-व्यय खातामे अपन गोष्ठीक रूपमे वर्णित कएलक आ एकर पाइक विवरण देखलक आ ▯डिटरसँ अप्रूव कएलक, जे सही मदमे टैगोरक कार्यक्रम लेल खर्च भेलै (सगर राति दीप जरय लेल नै) केँ सगर राति दीप जरयक रूपमे मान्यता देबा लेल मूल धाराक पुनस्थान/ असाइनमेण्ट लोलुप आ ब्राह्मणवादी लोक गत दस वर्षसँ अपस्याँत छथि, से एक बेर फेर असफल भेल।

रहुआ संग्राम गोष्ठीमे निम्न कथाक पाठ भेल, १. डॉ. निरुगि आनन्द : आस्था, विश्वास आ परम्परा; २. रवि भूषण कुमार : राजक बहिष्कार; ३. मानव अनीष मण्डल : सपनक मृत्यु हत्या; ४. रितिक मण्डल : गेलौं गँ हम गेलौं; ५. पं. शिव कुमार मिश्र : वसुधा काहू का न हाय; ६. उमेश मण्डल : अप्पन जिम्मा; ७. आचार्य रामानन्द मण्डल : बाल वैरागी; ८. राधाकान्त मण्डल : गुमहन आगि आ अहूआ; ९. शाली पासवान : कारी नाग; १०. नारायण यादव : कनियाक जीवन; ११. कपिलेश्वर राउत : बरहनी; १२. जगदीश

प्रसाद मण्डल : कुम्हरक बतिया; १३. अमित मिश्र : अधलाहक परिणाम अधलाह; १४. बैद्यनाथ राम : हमहीं धनीक छी; १५. हरिशङ्कर झा : निनीउअ; १६. प्रीतम कुमार निषाद : बूढ़ानी गुड़क हत्या; १७. श्रवण कुमार मण्डल : प्रेम विवाह; १८. रामसेवक ठाकुर : सात युग रामकेँ; १९. रामकृष्ण पदार्थी : आति; २०. दुर्गेश मण्डल : द्वन्द्व; २१. लालदेव कामत : मधुमाछी ; २२. शारदानन्द सिंह : जानत सांझा क रात हायता तारत; २३. अनिरुद्ध प्रसाद : नंगरू आ मंगरू; २४. अशोक अविचल : मनुआ नाचय मोर; २५. नारायण झा : राजनीतिमे राजनीति; २६. उमेश नारायण कर्ण : माय; २७. दुर्गानन्द मण्डल : सपना; २८. राम विलास साहु : नीक करब गँ बजाउ किउ हउत?; २९. नन्द विलास राय : नंगल नढ़िया; ३०. रामबहादुर राय : ताहीं जितलँ हमहीं हारलौं; ३१. रामश्रन प्रसाद मण्डल : हमरा बहिन अछि; ३२. विनय मोहन जगदीश : छठु; आ ३३. रमेश कुमार शर्मा : संघर्ष।

गोष्ठीमे निम्न पोथी सभक लोकार्पण भेल- १. साहित्यकारक विवेक (कथा संग्रह) : जगदीश प्रसाद मण्डल; २. नव बनक नव फूल (कथा संग्रह) : जगदीश प्रसाद मण्डल; ३. सुचिता (उपन्यास) : जगदीश प्रसाद मण्डल; ४. प्रतिकार एखन बाँकी अछि (काव्य संग्रह) : रामकृष्ण पदार्थी; ५. असल पूजा (कथा संग्रह) : नन्द विलास राय; ६. संयोग (कथा संग्रह) : रवीन्द्र नारायण मिश्र; ७. लजकोटर (उपन्यास) : रवीन्द्र नारायण मिश्र; ८. एहने थिक जीवन (संस्मरण) : रवीन्द्र नारायण मिश्र; ९. राष्ट्र मंदिर (उपन्यास) : रवीन्द्र नारायण मिश्र

मिश्र; १०. मातृभूमि (उपन्यास) : नवीन्द्र नारायण मिश्र ; ११. सीमाक ओहि पार (उपन्यास) : नवीन्द्र नारायण मिश्र; १२. लिग नवल सुभाष चन्द्र यादव : गजेन्द्र ठाकुर ; १३. मैथिली समीक्षाशास्त्र (आलोचना) : गजेन्द्र ठाकुर ; १४. Rajdeo Mandal Maithili Writer : Gajendra Thakur; १५. सुरेन्द्रा कुमारी चौहान (निनिवन्ध) : डॉ. अशोक अविचल; १६. जाग न जाग कवि जाग जाग अनुरूपी (निबन्धात्मक गद्यांश संकलन) : डॉ. उमेश मण्डल; १७. जगदीश प्रसाद मण्डलक काव्य संग्रह (अनुसन्धान विश्लेषण) : डॉ. उमेश मण्डल।

सुभाष चन्द्र यादव समानान्तर धाराक १११म सगर राति दीप जरयक सफलता लेल संदेश पठेलन्हि आ नै आबि सकबा लेल दुख व्यक्त कलन्हि। लोकार्पित पोथी 'लिग नवल सुभाष चन्द्र यादव' लेल अपूर्व उत्साह देखल गेल, आ उपस्थित लोक माँगि-मागि कs ई पोथी ललनि आ हानयन दुन दिल्ली आ आन-आन ठामसँ ऐ पोथीक □ऊेन लोकार्पण दिन सँ आबय लागल।

- Gajendra Thakur, editor, Videha (Be part of Videha www.videha.co.in -send your WhatsApp no to +919560960721 so that it can be added to the Videha WhatsApp Broadcast list.)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

१.२.अंक ३६६ पर टिप्पणी

अंक ३६६ पर टिप्पणी

आशीष अनचिन्हार

नचिकेताक दुनू कविता हुनकर हस्तलिपिमे नीक लागल।

नित नवल सुशील आ नित नवल दिनेश कुमार मिश्र नीक जकाँ आगाँ बढ़ि रहल अछि।

यूनीकोड तिरहुता कीबोर्ड आ मैथिली संकेतलिपि सम्बन्धी सम्पादकीय उत्तम अछि।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.गद्य खण्ड

२.१.महाकान्त प्रसाद- बीहनि कथा- बुन्नी

२.२.संतोष कुमार राय 'बटोही'- डायरी- 'लव यू टू' (आगाँ)

२.३.संतोष कुमार राय 'बटोही'- संस्मरण - 'कुमरजी'

२.४.नवीन्द्र नारायण मिश्र- मकान मालिक आ किरायादार

२.५.नवीन्द्र नारायण मिश्र- मातृभूमि (उपन्यास)- २४ म खण्ड

२.६.कुमार मनोज कश्यप- प्रतिदान

२.७.निर्मला कर्ण- अग्नि शिखा (खण्ड-१६)

२.८.जगदीश प्रसाद मण्डल-जिनगी रान बनि गेल

२.९.आचार्य रामानन्द मण्डल-गौरी आ प्रेम म धोखा

२.१०. डॉ. किशन कारीगर- मिथिला मैथिली क घून जेंका खोखेर क खा गेल (हास्य कटाक्ष)

२.११.लाल देव कामत- तीन टा पोथीक समीक्षा

२.१.महाकान्त प्रसाद- बीहनि कथा- बुन्नी



महाकान्त प्रसाद

बीहनि कथा- वुन्नी

-मीना गेल छलियै आइ ?

-कतऽ यौ?

-दछिनवरिया टोल, पाखनिक महान दिस।

-गेल तऽ छलियै,देखबो कएल, लगहनि छै आकना, मुदा स बाद म बूझलियै!

-तखन?

-तखन की, हमरा तऽ ज हाएत स हवे कहत, अहाँ सरे बचि कऽ नहू- बजैत-बजैत आकन मूंह पर पसनाक वुन्नी चूनिया लगलैक। हुनु मीत गंरीत दऽ गेल छल।

तखनहि अकास सँऽ वुन्नी खऽसऽ लगलैक। हुनु अपन अपन घर दिस विदा दऽ गेल।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.२.संतोष कुमार राय 'बटोही'- डायरी- 'लव यू टू' (आगाँ)



संाष कूमान नाय 'वटाही'
डायनी -'लव यू टू' (आगाँ(

14-09-2013

मूगल गार्डन नाष्ट्रयपि स्वन :

लह्ली वान मान गदगद स' गेलै , जखन ओ मूगल गार्डनक नाम सूनलीहि। मूगल गार्डन नाष्ट्रयपि स्वन वान याँछा म छै। स्लूलक खूशबू सँ गमगम वनैत नहपि छै नाष्ट्रयपि स्वन। मूगल गार्डन म ओनाही नहि घूसि सवैत छी। मटल डिटक्टन सँ चवक वनैत छथि सवूनिटी गार्ड ।

लह्ली पिंक कलन कँ अंब्रला सूट यहिनन छथि। स्लूनकान स्ह यन ओ्ली सूट खूव जँचै छहि। स्लमना दखि कs मान स्लनखिल स्ल ज लह्ली यनी जँका लागि नहल छथि। मान म टिस मानs लागल छल। नाथ्ध-कहिया लह्ली स्लमन संयासिनी वनती ओ्ली मान मं साचि नहल ! नाथ्ध छलहूँ आओन मूगल गार्डन घूमि नहल छलहूँ। लह्ली दिस खान गेल गँ, ओ स्लमना दिस ताकि नहल छलीह। स्लम किछु यछओ

गेल छलहुँ। यादवन गली सँ आगा बढ़लौं लल्ली कँ सामा गेलहुँ हमा। लल्ली हमर आउन पास आबि गेलीह। ओ एकटा फूल दिस इशारा करैत बजलीह " -Can you guess what is the name of this flower ?

हम अकबका गेल छलहुँ। हम एहि प्रश्न कर जवाब देबा लेल तैयार नहि छलहुँ। सब देखल छल जे हम ओहि फूल कँ नहि चिन्हैत छलियै। हम लल्ली सँ कहलियै " -Sorry, can you guess ?"
ओ कहलीह जे नागि म एहि फूलक नाम कहलीह।

9 -10-2013

हंसराज कॉलेज तीयू :

नॉर्थ कैंपस उतरि कऽ हम विश्वविद्यालय दिस चलैत रहलहुँ अछि। रात कँ दूनू कात बान छै। किया रस्ता म रंट नहि रहल। शनै : हम आगाँ बढ़ैत गेलहुँ अछि। आगाँ जाक :शनैऽ रस्ता कँ दूटा रूज रऽ जैत छै। आब किछु दूनि यन एकटा आटा अबैत देखायल। ड्राइवर सँ पूछि कऽ आगाँ बढ़ैत रहलहुँ हम। हुन नाणि चलऽ यउला। दाहिना चलि कऽ 200 मीटर यन हंसराज कॉलेज कर गेट देखि कऽ मान हलिका रहल जे लल्ली आब रंट जीह।

हम अपि निकनसन चलि गेल छलहुँ। कॉलेज यन किया नजन नहि

आयल। कनिक देर गेट लग ठाढ़ रहलहुँ हम, तँ एकटा गाड़ि देखाइ देलक। समय करीब साढ़े सात बाजि रहल छलैक। गाड़ि कहलक दस बजे कॉलेज खुलतै। आब हम की करब ? मोन हड़बड़ा गेल। हम उठि पैर निंग गात दिस बिदा भेलहुँ। लल्ली सँ मिलबाक मोन बढ़ल छल।

निंग गात आबि कऽ हम बस स्टैंड पर बैस गेलहुँ। लल्ली कँ पना देखऽ लगलहुँ। लल्ली पर विश्वास छल जे ओ जरूर औतीह। साढ़े नौ बाजि गेलै। लल्ली कँ हम ध्यान लगौलियै। लल्ली ध्यान नहि उठौलक। करक मोन छोट भ गेल। एतञ्च हम सोचलहुँ नहि। फेर ध्यान लगौलियै। अहूँ बेर ओ ध्यान रिसीव कलीह। ओ आबि रहल छलीह आजादपुर मे।

हमर मोन गदगद भऽ गेल। ऊ लल्ली छथि। हमर मोन आउर दिल पर ओ कब्जा कऽ लेने छथि। आँखि तबतबा गेल। ऊ मिलन कँ बादक गान छियैय। लल्ली हमर जान अछि, हृदयक स्पंदन अछि, ओ हमर कोमल राग अछि, लगी जकाँ बढ़ैत अनुराग अछि।

हम ओकर हंस छियैय ओ हमर हंसिनी। हमरा लेल ऊँइन्द्रलोकक परी रहल अछि। लल्ली कर सामा मे मनका रहल अछि। मोन, करम, वचन सँ ओ हमर छी। हमर ओकर छियैय। ओ हमर हृदयक मर्म कँ बुझैत छथि। जहिया हम मरब ओ हमरा लेल जरूर कनतीह। हृदयक अथाह कोठरी मे ओ तिरंगी मुद्रा मे अटकल अछि। ओ

नाज बनल अछि।

25-12-2013

लल्ली हमर छी

हृदय अखना धनि नहि मानै अछि कि लल्ली हमना छाडि कऽ चलि गेलीह। मान कवारि कँ हम नहि गेलहुँ। दनायिद्म हमन संग - नहि दलका। हमन अंतिमा प्रयास बकान हला। लल्ली एक दिन धनि नवसुमि म उँटल नहलीह, यनञ्च धर्मेन्द्रजी उाकना नुम यन सँ टस-मस नहि हलाह। लल्ली कँ याया जल्न खनाक गय कहलाथि। -स लल्ली हानि गेलीह। हम हानि गेलहुँ। आव हम की कनी? जिनगी खत्म कनै कँ निचान कलहुँ , यनञ्च मायक अवस्था दखि कऽ ओ निचान छाडि दलहुँ।

गखंड कं ओ मकान मं आ मनल जकाँ हम यडल छी। हृदय टूटि गेल अछि। आँखि सँ नान वहि नहल अछि। किया सुननिहान नहि। गनीव कँ प्रम कननाक कानहुँ अधिकान नहि हाडा छी। गनीव मान निर्जीव हाया छी। लल्ली हमन नहि हलीह। हमन हृदय हानि गेल। हमन निश्वास डगमगा गेल। आव दुनिया यन सँ हमन निश्वास उठि गेल। हम वयहेन कानि कऽ कानलहुँ अछि। मान निनक हऽ गेल। यनिनान , समाज, दश सँ हमना वैनाग्य हान उत्पन्न हऽ गेल।

हमर दुनिया अन्हार भऽ गेल। अमावस सँ यारी भऽ गेल। लक्ष्मी हमरा बिसरि गेलीह, परञ्च हम ओकरा नहि बिसरलियै अखन धरि। अंतिम साँस धरि ओ हमर हृदय मे रहतीह। हम आजीवन ओकर गुलाम बनि गेलहुँ अछि। लक्ष्मी केर शब्द 'आई लव यू टू' अखन धरि हृदय मे उधम मचौने अछि। मोन मे हड़बड़ी भऽ जाइत अछि। मोन मारैत कहाँ नहि जाइत छी। हमर लक्ष्मी हमर छी चाहे दुनिया जेना बूझै।

-संतोष कुमार राय 'बटोही', ग्राम मंगरौना -

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.३.संतोष कुमार राय 'बटोही'- संस्मरण - 'कुमरजी'



संतोष कुमार राय 'बटोही'
संस्मरण -'कुमरजी'

घंटी टनटना रहल छै। विद्यार्थी सब विद्यालय मे खेल रहल छै । खाना सबक समय भ' -ऽ गेल छै। प्रभारी प्रधानाध्यापक जी माइक मे बाजऽ लगलाह , "प्रार्थना की स्थिति मे सावधान , गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु। ...."

"तु ही राम है, तु रहीम है सब कँ -भगेनह करैत खाना ."... तीन टा बालिका आगा बढ़ौलाथि।

आब ओ माटगन यना जकाँ छठी लऽकऽ याँगियाँगि घूम-ऽ लगलाह।

𑒂𑒚𑒫𑒲𑓀 𑒏𑒿 𑒂𑒬𑒳𑒞𑒼𑒭 𑒏𑒿 𑒋𑒏 𑒕𑒼𑒙𑒲 𑒠𑒧𑒼𑒮 𑒏s 𑒠𑒹𑒪𑒟𑒱𑒢𑓂𑒯। 𑒕𑒼𑒙𑒰 𑒏𑒿 𑒣𑒲𑒚 𑒌𑓀𑒔𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒻। 𑒍𑒏𑒩 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒂𑒿𑒐𑒱 𑒮𑒿 𑒢𑒼𑒩 𑒜𑒥𑒜𑒥 𑒐𑒮s 𑒪𑒑𑒪𑒻। 𑒣𑒱𑒬𑒰𑒔 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒍 𑒪𑒰𑒚𑒲 𑒥𑒖𑒰𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱𑒢𑓂𑒯।

𑒁𑒩𑒱𑒨𑒰𑒢 𑒑𑒲𑒞 𑒏𑒿 𑒍 𑒁𑒣𑒢 𑒑𑒫𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 𑒒𑒩 𑒁𑒪𑒐 -𑒒𑒩 " - 𑒖𑒰𑒨𑓀𑒑𑒹 𑒯𑒧, 𑒠𑒹𑒐𑓀𑒑𑒹 𑒖𑒧𑒰𑒢𑒰"। .....

𑒧𑒰𑒟 𑒣𑒩 '𑒠𑒹𑒫𑒰𑒢𑓀𑒠' 𑒮𑓂𑒙𑒰𑒃𑒪 𑒏𑒿 𑒏𑒚𑒲 𑒩𑓀𑒑 𑒏𑒩 𑒙𑒰𑒣𑒲 𑒣𑒯𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒥𑒖𑒻𑒥𑒖𑒻 𑒯𑒥𑒴𑒢𑒲 𑒩𑒪 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒮𑒥 𑒡𑒰𑒢 𑒥𑒰𑒃𑒮 𑒣𑒮𑒹𑒩𑒲। -𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒪𑒹𑒪 𑒏𑒱𑒨𑒼 𑒣𑒻𑒒 𑒂𑒍𑒩 𑒏𑒱𑒨𑒼 𑒕𑒼𑒙 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒟𑒱। 𑒮𑒥𑒏𑒰 𑒋𑒏 𑒪𑒰𑒚𑒲 𑒮𑒿 𑒯𑒰𑒿𑒏𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱𑒢𑓂𑒯। 𑒯𑒹𑒛𑒧𑒰𑒮𑓂𑒙𑒩 𑒮𑒿 𑒣𑒻𑒒 𑒍 𑒫𑒱𑒠𑒴𑒭𑒏 𑒕𑒟𑒱। 𑒩𑒢𑒱 𑒠𑒱𑒢 𑒢𑒱𑒨𑒙𑒰 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒮𑓂𑒏𑒴𑒪 𑒧 𑒢𑒰𑒔𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒃 𑒏𑒱𑒢𑒏𑒰 𑒢𑒲𑒏 𑒪𑒑𑒻𑒢𑓂𑒯 𑒫𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒍𑒃 𑒮𑒿 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒏𑒼𑒢𑒯𑒳𑒿 𑒣𑒩𑒫𑒰𑒯 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒢𑓂𑒯𑒱।

𑒢𑒙𑒳𑒂 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒯𑒰𑒟 𑒔𑒧𑒏𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒢𑓂𑒯𑒱। 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒚𑒱𑒏 𑒏s 𑒍 𑒢𑒯𑒱 𑒥𑒻𑒮𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱𑒢𑓂𑒯। 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒯𑒼𑒢𑒯𑒹𑒙 𑒩𑒪 𑒩𑒯𑒻𑒢𑓂𑒯 , 𑒍 𑒠𑒹𑒯 𑒏𑒿 𑒧𑒱𑒔𑒨𑒥𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱𑒢𑓂𑒯। 𑒫𑒏𑒲𑒪𑒏 𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒏𑒼𑒙 𑒩𑒢𑒱 𑒥𑒩𑒐 𑒣𑒯𑒱𑒩𑒢𑒹 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 । 𑒑𑒩𑓂𑒧𑒲, 𑒖𑒰𑒚, 𑒥𑒩𑒮𑒰𑒞 𑒮𑒥 𑒧𑒾𑒮𑒧 𑒧 𑒋𑒏 𑒣𑒯𑒩𑒰𑒫𑒰।

𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧𑒔𑓀𑒠 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒧𑒼𑓀𑒕 , 𑒩𑓀𑒑 𑒑𑒹𑒯𑒳𑓀𑒂 , 𑒕𑒯 𑒤𑒴𑒙𑒏 𑒏𑒠𑒏𑒰𑒚𑒲 , 𑒠𑒼𑒯𑒰𑒩𑒰 𑒠𑒹𑒯 , 𑒢𑒰𑒏 𑒐𑒩𑒑𑒩 𑒕𑒢𑓂𑒯𑒱 𑒯𑒱𑒢𑒏𑒩। 𑒏𑒼𑒙 𑒣𑒩 𑒬𑓀𑒏𑒩𑒰𑒧𑒰𑒃𑒮𑒱𑒢𑒏 𑒣𑒰𑒅𑒛𑒩 𑒕𑒱𑒙𑒂𑒨𑒪 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒢𑓂𑒯𑒱।

𑒏𑒼𑒢𑒯𑒳𑒿 𑒢𑒰𑒙𑒏 𑒣𑒰𑒩𑓂𑒙𑒲 𑒧 𑒣𑒯𑒱𑒩 𑒏𑒰𑒖 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒰𑒯 𑒧𑒩। 𑒧𑒅𑒑𑒲 𑒑𑒰𑒢𑒱

हुनका खुब अबैत छन्हि। ममाजी यानन अपक मजबूत आ कम्प्यूटर हुनका सामा म रूल छै।

खिस्सा कहुवा म गोलू मा कान कान काटैत छथि। 0हाका मानि क हँसैत छथि। स्वांग करना म हुनका महानत हासिल छन्हि। खन खंतित छथि किनका जयन, खन उहे लोकि सँ घूलमिल क-s गयियेत छथि। हुनका लल किया नहि यनमानंट दास्त , नहि दुश्मन।

वजैवजैत रसिया जैत छथि। की वजैत छी-, कोs वजैत छी स सुविनिवान सर कानटा यन टैंग -वृद्धि हुना जायत छन्हि। आवान-देत छथिन्ह। वरगवनी आउान रूकना कहै म उा विहैन छथि।

" धर्मशाला है ? जव मर्जी तव आउा शनम ही नहि आता है। ! आउा सनम जाउा सनम। सर जैस आयगा। जैस वाय का घन है। स्कूल हैरूतमास्टन सारूव वाजि नहल हाथ चमकवैत "स्कूल। ... छलाथि।

कलियुग आवि गेलैशिउकगध एक उ८ घंटा ! धान कलियुग.... लट अबैत अछि आउान एक उ८ घंटा यहिन स्कूल सँ हाते म लागल नहैत छथि।

हतमास्टन सारूव यूना रूायन रहल छथि , " सर कँ सर यनोन नहल अछि , अयन दान सोन नहल अछि। "

आब ओ मारगन छओ उठाबै छथि आउन स्कूल कैंपस म विद्यार्थी कँ हाजकानी देत छथिन्ह। विद्यार्थी ओन बहुँ दिस लागि नहल छै।

"नुकाओकरा विद्यार्थी दिस लयकलकिन्ह। "नुका अरी बताय हौं... ओ निछार बाहनि दिस लागल अपन ज्ञान बचौलक।

स्कूल म रनसिया सर कँ लट सँ अबैत देखि कs हुनकन याना बढि जायत छन्हि, " आशुतोष बाबू, देखियौ अकना सर कँ... हायत छै महानानी रs गेलहुँ। चान, खुनयी छुआ बेन हुआ सँ काज नहि चलतs । अयनअयन समय यक७-s। जकना हर्सी नहि अछि ओ अयन घन देखियौ। स्कूल अबै कँ काज नहि छै। "

स्ी नाजक दिनकन नुटिन छन्हि। किछु मास्टन दिनका नजन म बसी नीक छथि। हुन किछु दिनकन बाद नीक मास्टन कन हुनकन लिस्ट बदलि जैत छन्हि। यी0 यनाछ ज मान म आबैत छन्हि बाजैत छथि। सामा म सर किया कँ ओ बाबू आउन राङ्गीजी कहैत छथिन्ह। खन दुश्मन जकाँ कनs लगैत छथि, खन सर सँ मी0गन प्रमी जकाँ।

ओल ओल बी आउन ओम ओसरी कन छथि। टीचन ट्रेनिंग कला सँ यदिन ओ ओयनहार्स म ट्रेनिंग सँ आबि गेल छलथिन्ह। गैं अयना कँ ओ खोजी मानैत छथि। मधुबनी कोर्ट म किछु दिन धनि काज कन छथि। गैं कानी कारक दाबा कनैत नहैत छथि।

ॐस्कूल म माँ सनस्वती कँ मंदिन ऋ । ह्मक वनख यूजा ७वं मला लगोग ऋ। दृीन दिन ॐस्कूल यन मामांच वनल नहोग ऋ। कलश - यात्रा निकलै ऋ। खुव ह्म्य आयाजन हायग ऋ। यून विनोल ब्लाक म नामी सनस्वती यूजा लगोग ऋ। नीलकं0 महादव वावा कँ कमला नहून म सँ कलश हनल जायग ऋ।

" हा ...हा ...हउमास्हन साहुव खुव नचलाह तीज कँ गीग यन ... गनदा उ७ा दलथिह्न नाचि कs । ऋोउा सह यीहकानी मानि नहल ऋ। सह हँसि नहल ऋ ।

किछ्छ लाकनि ध्वनछिया कs नहल ऋ। किछ्छ जनीजागि कहोग ऋ , "मानधककधियायूता जकाँ नाचि ...सनधूआ...७हुन लव७ा माहुटन... नहल ऋ। वूढ़ हs गेलै नाक लगल ऋ"।.....

ॐ सह हलाक वादा दूनका मान मलिन नहि हलह्नि ज लाक की कहि नहल अछि। अयन ध्वन वाहु। नमगननमगन राखा वजोग - छथि। लालू जी कँ लंगोटिया यान मानि नहल छथि। चूटकी लना वजोग अंहसियाँग हल -म छ्यन छ्वि वहफन यंच छथि। वजोग नहोग छथि। शंकनामाॐसिन कँ उिव्बी निकालि कs मूँह म ढ्वन ललाथि। हँसोग छथि गँ अगुआ दाँग कँ गह म कानीख लागल वूसोग छह्नि।

खिलावोयिलावे म नाम कमोग छथि। किनका ७ला यन लाल चाह -

जरूर बीआबैत छथिन्ह। अहाँ बरहार म हिनकर सानी नहि।

आइ ओ रिटायर भऽ जाएत। स्कूल कँ कार्यालय सजल छै। विदाइ समारोह भऽ रहल छै। हुनका पाँच टुक कपड़ा पहिरौल गेलन्हि। पाग प्रशस्ती हेडमास्टर साहेब हुनका माथ पर सजा देलकैन्हि। नवीन मास्टर साहेब हुनका कन्हा पर साॅल ओढ़ा कऽ हुनका नमस्कार कलन्हि।

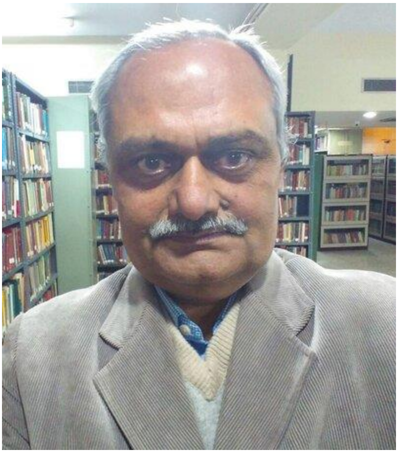
आब गाम पर चौकचौराहा पर मिमियैत रहैत छथि। -
"की हौ कुमर , कहिया अयलह ? " कियो पूछलथिन्ह।

"हँ दिन भेल अछि। रिटायर भऽ गेलहुँ अछि। हम की रिटायर होबै। आब सरकार रिटायर होइ। मूँह कँ बिचकबैत हेडमास्टर " साहेब कुमरजी साँसक आलाप लैत बजलाह।

-संतोष कुमार राय 'बटरोही', ग्राम मंगरौना -

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.४.नवीन्द्र नारायण मिश्र- मकान मालिक आ किरायादार



रवीन्द्र नारायण मिश्र

मकान मालिक आ किरायादार

आइ-काल्हिक युगमे लोकक आवास बदलैत रहैत अछि। नोकरीमे लोकक बदली होइत रहैत अछि । व्यापारीसभ सेहो अपन सहर बदलैत रहैत छथि। गाम-घरक लोक सेहो लगपासक सहरमे अपन घर बना लेने छथि । जिनकासभकेँ रोजगार बेसी संपदा देने छथिन से सभ कतेक-कतेकटा घर बनने रहैत छथि। जाहिसँ ठीक कि हाजिर घरक ओ की करताह,किराया लगौताह वा बंद रखताह । घरकेँ बंद रखनाइ सेहो कोनो लाभकर समाधान नहि अछि,तथापि किछुगोट किरायादारक संग झंझटमे नहि पड़ए चाहैत छथि आ घरकेँ बहुत-बहुत दिन धरि खालीए छोड़ि दैत छथि। ई बात सही अछि जे कतेक बेर किरायादारक संग मकान खाली करबाक हेतु,किंवा किराया वसूलीमे दिक्कति भए जाइत अछि मुदा तकर माने ईहो नहि जे सदिखन सएह होइत रहए। एहन

अहाँ जहिना गाम-घर छोड़िकए बाहर जाएब तँ किरायाक मकान चाहब करी,अथवा मकान कतए-कतए बनबैत रहब?किरायाक मकान भेटैत रहए आ दुनू पक्षकेँ ठीकसँ समय बितनि ताही उद्देश्यसँ देशभरिमे किराया नियंत्रण कानून बनल अछि।

मकान मालिक आ किरायदारक बीचमे समस्या बहुत पुरान अछि। समस्याक जड़िमे मकानक अभाव आ बढ़ैत किराया अछि। मकान मालिक चाहैत रहैत छथि जे हुनकर किराया बढ़ैत रहनि आ जखन ओ चाहथि मकान खाली भए जानि। कहक मान जे एहन नहि होइक जे किराएदार मकानपर अवैध कब्जा कए लिअए,किराया सेहो नहि दिअए। मुदा किरायदारक समस्या सेहो मानवीय दृष्टिसँ देखब बहुत जरूरी अछि। मकान मालिक बेर-बेर जँ मकान खाली करबैत रहताह तँ ओकरा नाना प्रकारक समस्या होएब स्वाभाविक। बच्चासभक इस्कूल,अथवा कार्यालय आ बढ़ैत खरचामे तालमेल बैसाएब मोसकिल भए जाइत अछि। कानून एहि समस्यासभकेँ समाधान करैत बीचक रस्ता निकालबाक प्रयास करैत अछि। मुदा कैक बेर ई संभव नहि भए पबैत अछि। दुनू पक्ष एक-दोसरसँ सामंजस्य नहि बैसा पबैत छथि आ मोकदमाबाजी धरि बात चलि जाइत अछि। जँ मकान मालिक दबंग अछि तँ जबरदस्ती सेहो करैत अछि। बदमासकेँ लगा कए किरायदारक समान कैक बेर बाहर फेकि देल जाइत अछि।

महानगर जेना कोलकाता,मुम्बई, दिल्लीमे हालति आओर बहुत खराब अछि। कैकटा किरायदार मुख्य व्यापारिक स्थानमे पाँच-दस

नूयया किनाया रौग छथि आ यचासा सालसँ अ७ल छथि,मकान खाली नहि क७ नरुल छथि। मकानक रुालि जर्जन र७ चूकल अछि। मकान मालिक माकदमा (Oकन छथि । मूदा गँ की? किनायदानसर आयसम संगOन वना क७ गकन प्रगिवाद कनौग नरुग छथि,मूदा मकान खाली रुवाक काना संरावना नहि लगौग अछि । जौँ ऊा मकानसर आ०-काल्हि किनायायन लल जा७ग गँ किनाया लाखाम र७ सकौग अछि । उदारुनथस्मनूय, ऊँ कनाटप्लेस दिल्लीक काना दाकान साविक किनायायन चलि नरुल अछि गँ किऊा कि७क खाली कनग? ऊँ ऊा ऊाहिOाम किनायायन मकान ना दाकान आव लव७ जा७ग गँ किनाया काक वढि जा७ग,सावचा मासकिल अछि। आना मरुानगनसरम गरुन रुालि अछि । अस्तु,मकान मालिकसरक विंगा सरु उचिग अछि । आखिन लाक संयमिकँ ७हि लल गँ नहि कीनलक ज ऊाकना ७हि गनरुक घनवक्कानम गमा दल जा७? मूदा उयाय की अछि?

जीवनम राजन,वस्त्र,आवास मौलिक आवश्यकगा मानल जा०ग अछि । राजन.वस्त्रक वाद नरु७ लल घन गँ चारुव कनी । लाका यूछौग अछि ज अयनक कान गाम घन रुल? मान ज घन आदमीक यनिचय थिका ग्रामीण यनिवशम गँ अखना घन मान अयन घन वूमल जा०ग छैक ,कानण ऊाहिOाम किनायाक मकान न उयलब्ध रुा०ग अछि आ न लाक लौग अछि । गामम लाकक यूस्तक-यूस्त गुजनि जा०ग छैक । ७कहिOाम लाक जीवन रनि नहि जा०ग अछि । यहिलुका समयम ०ी वाग सही छलैक । मूदा आव यनिस्थिगि वदलि (गल अछि । यढा०-लिखा०,नौकनी,व्यायान रुगु

लोक गाम-घरसँ बाहर रहैत छथि। ई संभव नहि थिक जे सभ सदिखन अपन अपन घर बनबए लेथि। ओ किरायापर मकान लए जनकी रहि जाइत अछि।

आइ सदिखन किरायाक मकान आसानीसँ भेटि जाइत अछि,किराया सेहो कम रहैत छैक आ मकान मालिक जखन-तखन खाली करए सेहो नहि कहैत छैक। मुदा ऐँ सदिखन खास कए महानगरमे हालति खराब अछि। मुम्बइमे तँ ई हाल अछि जे एकहि कोठरीमे कतेको लोक रहनाक किरायापर गुजर करैत छथि। जयपुरसँ मकान मालिककेँ पगड़ी सेहो दिऔक,मास-मास किराया तँ चाहबे करी। नहि-नहि कए मकान मालिक दुलत्ती मारिते रहत,जाहिसँ अपनेँ ओ नहि बिसरि जाइ जे मकान किरायापर लेल गेल अछि आ किछु दिनक बाद खाली करहि पड़त। अस्तु,किरायदारक हालति ठीक बड़ बदतर चिंताजनक रहि जाइत अछि। मुदा समाधान की अछि? सभ आदमी मकान नहि कीनि सकैत छथि। किरायापर मकान लेनाइ एकटा मजबूरी रहैत छैक। एहि विषयमे कतेकोबेर न्यायालयमे मामिला कएल गेल। एहि विषयपर उच्चतम न्यायालय सेहो कतेको फैसला देलक। तहिसभसँ किछु सुधार भेलैक अछि।

मकान मालिक आ किरायादारमे सामान्यतः दूटा बात लेल संघर्ष रहैत छैक:-१.किराया बढ़बए हेतु,२.मकान खाली करबाक हेतु। आओर छोट-मोट समस्यासभ सेहो रहि सकैत छैक जेना मकानकेँ मरम्मति करनाइ,किराया बकिऔता रहि गेनाइ,आदि-

आदि। एहि समस्यासभसँ निपटए हेतु दुनू पक्ष मकान किरायादार लेबए-देबएसँ पहिनहि आपसमे किरायाक एकरारनामा बनबैत छथि। जँ लीजक अवधि सालभरिसँ कम अछि तँ ओकरा निबंधित करबाक जरूरी नहि अछि अन्यथा एकर निबंधन सब-रजिस्ट्रारक ओहिठाम कराएब कानूनी बाध्यता अछि। जँ किरायाक एकरारनामा बनल अछि तँ लीजक तय अवधिमे किरायाक ओहि मकानक सभ विषय-वस्तु तकर अनुसार चलत बाद ओ किराया बढ़बाक गप्प होइक,मकान खाली करबाक गप्प होइक वा किरायाक भुगतान करब होइक। जँ किरायाक एकरारनामा नहि बनल अछि,किंवा लीजक अवधि बीति गेल अछि तँ मकान मालिक आ किरायादारक बीचमे स्थानीय सरकार द्वारा बनाओल गेल किराया नियंत्रण कानूनक अनुसार विवादक निर्णय होएत।

किरायादारक हेतु ई बहुत जरूरी अछि जे ओ तय किराया समयसँ मकान मालिककेँ दैत रहथि। किराया नहि देलाइए अपना-आपमे मकान खाली करबाक हेतु पर्याप्त कारण भए सकैत अछि। यदि मकान मालिक किराया नहि लैत छथि तँ किराया मुद्रादेशसँ पठाओल जा सकैत अछि। यदि सेहो संभव नहि होइत अछि तँ किराया नियंत्रण अधिकारीक ओहिठाम आवेदन दए किराया जमा करा देबाक चाही। सामान्यतः एहन परिस्थिति तखन होइत अछि जखन कि मकान मालिक मकान खाली कराबए चाहैत छथि।

जँ मकान मालिक आ किरायेदारक विवाद आपसमे नहि सलटाइत अछि तँ दुनू सँ किओ किराया नियंत्रण अधिकारीक पास आवेदन दऽ अपन समस्या राखि सकैत छथि। उदाहरणस्वरूप,जँ मकान मालिक मकान खाली करबऽ चाहैत छथि तँ एकर कारण देत मकान खाली करबा सकैत छथि। सामान्यतः मकान खाली करबाक हेतु प्रमुख कारण मे किराया नहि देब,मकान मालिककेँ स्वयं मकानक आवश्यकता भऽ सकैत अछि। जँ किरायेदारकेँ अपन मकान छनि तँ किरायाक मकान खाली करबाक ई महत्वपूर्ण आधार बनि जाइत अछि। मकान मालिक किराया निर्धारणक हेतु सेहो उचित अर्जी दऽ सकैत छथि।

देश भरिमे सभ राज्य अपन-अपन किराया नियंत्रण कानून बनौने अछि। कैकटा राज्यमे एहि कानूनक अधीन आबऽवला मकानक किरायाक सीमा तय कएल अछि। संगहि राज्य वा केन्द्र सरकार,स्थानीय निकायक मकानसभ सेहो एहि कानूनसँ बाहर अछि। कैकटा राज्यमे नव निर्मित मकान किंवा धर्मार्थ कार्यरत संस्थाक मकान सेहो एहि कानूनक अधिकार क्षेत्रसँ बाहर राखल गेल अछि। विभिन्न राज्यक कानूनमे समरूपता हएबाक जाहिसँ ई कानून सर्वग्राही भऽ सकए आ सामान्य लोक एकर सुविधा सरलतासँ लऽ सकए,ताहि हेतु १९९२मे संसद द्वारा आदर्श किराया नियंत्रण कानून पास कएल गेल। एहिमे किरायेदारीक विवादसभक मौजूदा प्रावधानमे सँ किछुकेँ संशोधित करबाक प्रस्ताव छल आओर किरायाक एकटा सीमा सेहो निर्धारित कएल गेल जाहिसँ बेसी होएबला किराया नियंत्रण लागू नहि होएत। एकरबाद दिल्लीमे ओहि

अधिनियम १९९१मे कानून बनबा कएल जे स्थानीय न्यायानी वर्गक विवादक कारण लागू नहि कएल गेल।

मकान मालिकक आ किरायेदारक बीच संबंध मधुर रहए आ कोनो मतभेद होयबापर सुगमतासँ एकर समाधान भए जाए ताहि हेतु ई आवश्यक अछि जे दुनू पक्ष मकानकेँ किरायादारी प्रारंभ हेबासँ पहिने स्पष्ट प्रावधानक संग किरायाक लीज एग्रीमेंट(किरायाक एकरारनामा) उचित मूल्यक स्टांप पेपरपर हस्ताक्षरित करथि। ओहिमे सभ बात जेना किराया कतेक हएत,मकान कतेक दिन किरायापर रहत,मकानक मरम्मति करा की हएत, मकान कहिआ खाली करए पड़त, स्पष्टतासँ लिखल रहए। जँ सालभरिसँ अधिक हेतु किरायापर मकान लेल जाइत अछि तँ एकरारनामाक निबंधन सेहो कराएब जरूरी अछि। एहिमे दुनू पक्षकेँ हितक समाधान भए जाइत अछि। अस्तु, मकान किराया लेबए वा देबएसँ पहिने उपरोक्त बातसभकेँ ध्यानमे रखैत कानून सम्मत किरायाक एकरारनामा बना लेबाक चाही आ एकर अनुबंधकेँ दुनू पक्षकेँ पालन करैत रहक चाही जाहिसँ सुख- शांति बनल रहए। ई सभ बात जँ ठीकसँ कएल गेल अछि तँ मकानकेँ किरायापर देबामे कोनो हर्जा नहि छैक।

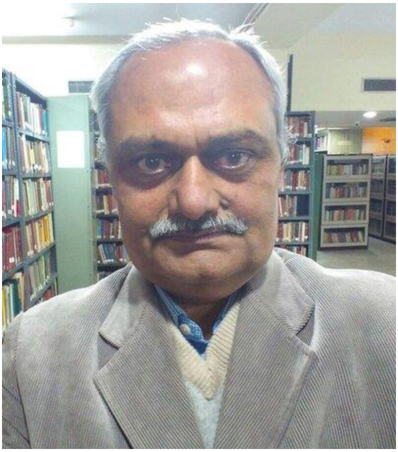
-रवीन्द्र नारायण मिश्र, mishrarn@gmail.com

-रवीन्द्र नारायण मिश्र, पिताक नाम: स्वर्गीय सूर्य नारायण मिश्र, माताक नाम: स्वर्गीया दयाकाशी देवी, वयस: ६९ वर्ष, पैतृक ग्राम: अतन तीह, मातृक: सिन्धिआ थाढी, वृत्ति: भारत सरकारक

उय सचिन (सनानिनृ्फ), स्थशल मट्रोयालिटन मजिस्ट्रट, दिल्ली(सनानिनृ्फ), शिञा: वङ्कधानी मिथिला महानिद्यालयसँ वी.ञस-सी. रौणिक निस्तानम प्रणिष्ठा : दिल्ली निश्वनिद्यालयसँ निधि स्नाणक, प्रकाशिण कृणि: मैथिलीम: प्रकाशन नर्ष॰२०११ १.रानसँ साँस धनि (आप्म कथा),२. प्रसंगनश (निनंध), ३.स्नर्ग ञाहि अछि (यात्रा प्रसंग); प्रकाशन नर्ष॰२०१८ ४. रूसाद (कथा संग्रह) ५. नमस्कथे (उयन्यास) ६. निनिध प्रसंग (निनंध) ७.महनाज(उयन्यास) ८.लजकाटन(उयन्यास); प्रकाशन नर्ष॰२०१९ ९.सीमाक ओहि यान(उयन्यास)१०.समाधान(निनंध संग्रह) ११.मातृभूमि(उयन्यास) १२.स्नप्नलाक(उयन्यास); प्रकाशन नर्ष॰२०२० १३.शंखनाद(उयन्यास) १४.ॐञह थिक जीनन(संस्मनध)१५.ढहैण दवाल(उयन्यास); प्रकाशन नर्ष॰२०२१ १६.याथिय(संस्मनध) ११.हम आवि नहल छी(उयन्यास) १८.प्रलयक यनाण(उयन्यास); प्रकाशन नर्ष॰२०२२ १९.वीणि गल समय(उयन्यास) २०.प्रणिविम्ब(उयन्यास) २१.वदलि नहल अछि सभकिछु(उयन्यास) २२.नाष्ट्र मंदिन(उयन्यास) २३.संयाग(कथा संग्रह) २४.नाचि नहल छलि नसुधा(उयन्यास) २५.दीय जनैण नहञ (उयन्यास)।

अयन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com यन यठाउ।

२.७.नवीन्द्र नारायण मिश्र- मातृभूमि (उपन्यास)- २४ म खण्ड



नवीन्द्र नारायण मिश्र

मातृभूमि धारावाहिक -(उपन्यास)

२४

गोविंद आ माधव गाम पहुँचिताह थाकल पाठशाला लग पहुँचलाह ।

"ओहिठाम गाँ किछु नहि बाँचल अछि?"

"ओक तेजीसँ ऊपरी सब बदल स साचि आश्चर्य लागि रहल अछि । उनकुसँ आश्चर्य ओहि बातसँ होइत अछि जे दछिनवारिटोलक लोकसब सबकिछु चुपचाप देखैत रहि गेल । किछु प्रतिकार नहि कए सकल । एहन गाँ नहि छल ऊपरी टोल । एक समय छल जखन ओहि टोलमे विद्वानसब रहल छलाह ।

जाहि देखू ताहि शास्त्र चर्चा भऽ रहल अछि। ओही टोलमे आइ की हाल अछि? गामक एकटा प्रतिष्ठित संस्था छल ओ पाठशाला, तकरा रक्षा नहि कऽ सकलाह।"

"जखन अपन आदमी शत्रु भऽ जाइत अछि तँ रक्षा करब ककरा हेतु मोसकिल भऽ जाइत अछि। सुधाकर तँ अपन पिताक बात नहि सुनलाह। कहाँदनि ओ बहुत कहलखिन। मुदा सुधाकर तँ जे छथि से सभकेँ बूझल अछि। "

"आब की कएल जाए? एहिठाम तँ सुधाकर अपन मकान बना रहल छथि। एतेक तेजीसँ एकर काज आगू कोना बढ़ि गेल, से सोचि आश्चर्य लागि रहल अछि। हमरा लोकनिक गेला सात दिन भेल अछि। एतब समयमे मकानक काज एतेक आगू भऽ गेल।"

ओ सभ आपसमे गप्प कऽ रहल छलाह कि ओहिठाम सुधाकर आबि गेलाह। हुनका संग लठैत सभ सेहो छल।

"कहिआ गाम अबै गेलह?"

"आबिए रहल छी?

"ओ! हम तँ सुनने नहिऐक जे आब तूँ सभ जयन्तक संग जानकीधाममे रहबह।"

"बीच रस्तासँ वापस होबऽ पड़ला।"

"स किएक? गाम काना स्गल जाङ्गा छलैक। किछु दिन जानकीधामम नहिगाह। नीक"वजाए वूमिगाहका। -

"सावन सएह नहिएक। मूदा स अहाँ कहाँ हावए दलिएक?"

"लएह। हम की कलिअह?"

"अहाँकँ ओही कुवृद्धि कना स्ल ज याOशालाकँ गाछि कए उाहिOाम अयन घन वना नहल छी। ओही गँ सार्वजनिक स्थान छलैका गामक एकटा प्रतिष्ठा छलैक। अहाँक यूर्वजसस्क कीर्ति छल। एना नहि कनक चाहैत छल।"

सुधाकन ल(Oतसस्कँ ओसाना कलथि। उासस्ल लाOी स्जैत हिनकासस्ल दिस वढल। ल(Oत सस्ल (गाविंद आ माधवयन दनादन प्रहान कनैत (गल। लाOीक प्रहान लगिगहि दुनु(गाट Oामहि खसलाह।

"कहैत छलिअह ज एहि मामलाम टाँग नहि अ(ाावह। मूदा गानासस्कँ वड्ड दावी स्ए (गल छह। हमन आयसी मामला अछि। ओही जगह सार्वजनिक काना स्ए (गलैक? सस्दिनसँ हमन यूनखाक एहियन अधिकान नहल अछि। हमन वावूक नाम नसीद कटैत छनि। गूँ सस्ल गँ जवनदस्ती यनसान छह। आवा समय छैका अयन काजम लागि जाह,नहि गँ"।.......

दुनु(गाट मानि लगलासँ कुहनि नहल छलाह। की

बजैथि?

"हिनका हनुमानजीक घर धरि पहुँचा देहुन । आ हँ! दवाइक दोकानवलासँ मलहम कीनि दिअहुन । बाटसँ पत्र लगबैत रहताह। से बाजि सु-"धाकर जानसँ 0हाका याउलनि । गोविंद आ माधव वसुध रहथि । प्रतिकार करबाक स्थिति नहि रहथि । हुनका लग0गसँ उ0ायू0ाक9 उानवानिटालक याकउीक - गाछतरम ठाढ़ी हालम नाखि देलक आ चलि गेल ।

-रवीन्द्र नारायण मिश्र, पिताक नामस्वर्गीय सूर्य नारायण मिश्र :, माताक नामस्वर्गी :या दयाकाशी देवी, जन्मवर्ष ६९ :, पैतृक ग्राम : तीर अतर, मातृकसिंघिआ चाठी :, वृत्तिसरकार सरकारक उप : (सेवानिवृत्त) सचिव, रक्षा मंत्रालयटिन मजिस्ट्रेट, दिल्ली(सेवानिवृत्त), शिक्षा-एम.एस.सी रसायनी मिथिला महाविद्यालयसँ वी : : रौतिक विज्ञानम प्रतिष्ठा .सीदिल्ली विश्वविद्यालयसँ विधि स्नातक, प्रकाशित कृति.१ प्रकाशन वर्ष:२०११ :मैथिलीम :रागसँ साँस धरि (आत्म कथा),२(निबंध) प्रसंगवश ., ३यात्रा) स्वर्ग जाहि अछि. (प्रसंग; प्रकाशन वर्ष:२०१८ ४ नमस्तस्यै .ज (कथा संग्रह) रुसाद . (उपन्यास)महराज.७ (निबंध) विविध प्रसंग .६ (उपन्यास) (उपन्यास)लजकाटन.८; प्रकाशन वर्ष:२०१९ ९डाहि सीमाक. (उपन्यास)मातृभूमि.११ (निबंध संग्रह)समाधान.१०(उपन्यास)यान (उपन्यास)स्वप्नलोक.१२; प्रकाशन वर्ष:२०२० १३ (उपन्यास)शंखनाद. (उपन्यास)ढहैत देवाल.१ज(संस्मरण)ऽऽजह थिक जीवन.१४; प्रकाशन

वर्षः२०२१ १६संग्रह)पाथेय.नक्षत्र आबि नहल .१७ ((उपन्यास)प्रलयक पनाग.१८ (उपन्यास)छी; प्रकाशन वर्षः२०२२ १९वदलि .२१ (उपन्यास)प्रतिबिम्ब.२० (उपन्यास)बीति गेल समय. (उपन्यास)नाष्ट्र मंदिर.२२ (उपन्यास)नहल अछि सरकिछ (उपन्यास)नाचि नहल छलि वसुधा.२४ (कथा संग्रह)संयोग.२३ (उपन्यास) दीप जरैत नहल.२५।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.६.कुमार मनोज कश्यप- प्रतिदान



कुमार मनोज कश्यप

१ टा लघुकथा

प्रतिदान

"तोरा तीन-तीन टा संतान भगवान देलकह हो...... एकरा आइन लै रहि घर अन्न आ देऽब कपड़ा तऽ झमिरा न हल्की....... बानिम लै ऊन कहाँ स झमि तौ? बुधनी! उधनवाला ज कनेग छथिन स नीक लागी.....अपन बौआ क लाग म बाजबाग हल्की...... बाज कनी.... बाज! अपना आइन जउ नहूँ ई तहूस की...... हल्की

गs अयन खुन! अयन जनमल सुख-चैन स नहो.... उहु न हुन माञ्ञी-वाय वाहे है! आन ज हाउ.....व७ रागमंग ह्रै ह्रौंग.... अयना नाज रागग आ हुमना आउन क दनिद्रा मटलक.......!" मुश्किया्ञीग नमलखना नाटक गडी सs वृधनी क मूँहु यन हाना कनs लगलै। हाटल समटायल कथ७ी यन विफ य७ल

वृधनी चानक रुन वाट हुलकी देग सूर्यक नाशनी क निर्विकान ७क टक्क गकेग नहुलै।

उाहून दुन शहुन म कगहु समानाहु मनाउाल जा नहुल ह्रलै.....गीन टा वटी क वाद वटा ज रुल ह्रलै!

-कुमान मनाज कश्यय, सम्प्रगि: रानग सनकान क उय-सचिव, **संयर्क:** सी-11, टावन-4, टाञ्ञ्य-5, किदनञ्ञी नगन यूर्व (दिल्ली हाट क सामन), नञ्ञी दिल्ली-110023 मा. 9810811850 / 8178216239 ञ्ञी-मल : writetokmanoj@gmail.com

अयन मंगव्य editorial.staff.videha@gmail.com यन यठाउ।

२.१.निर्मला कर्ण- अग्नि शिखा (खय-१६)



निर्मला कर्ण (१९६०-), शिक्षा - एम् ए, नैहर - खनाजपुर,दरभङ्गा, सासुर - गोढियारी (बलहा), वर्तमान निवास - राँची,झारखण्ड, झारखंड सरकार महिला एवं बाल विकास सामाजिक सुरक्षा विभाग मे बाल विकास परियोजना पदाधिकारी पद सँ सेवानिवृत्ति उपरान्त स्वतंत्र लेखन।

मूल हिन्दी- स्वर्गीय जितेन्द्र कुमार कर्ण, मैथिली अनुवाद- निर्मला कर्ण

अग्नि शिखा (भाग - १६)

पूर्व कथा:

उर्वशी राजा पुरुरवा के मंगल टीका लगा कऽ दानव सँ युद्धक लेल विदा करैत छथि। एकर पश्चात् ओ अपना भऽ दुर्बल भऽ जाइत छथि। राजा पुरुरवा उर्वशी के प्रति आकर्षित भऽ जाइत छथि।

आब आगू:

युद्धक दुंदुभि बाजि उठल। ओकर हृदय-विदारक ध्वनि पाताल लोक मे अत्यंत तीव्र गति सँ प्रविष्ट भऽ गेल। देवता क द्वारा कएल आक्रमणक समाचार दानवराज बलि क भेटल,मुदा ओ क्षण मात्र क लेल विचलित अथवा चिंतित नहि भेल। कारण एकर आशंका सऽ ओ तऽ ओहि दिन सँ युद्धक तैयारी करवा मे लागल छल जाहि दिन इन्द्र सँग पुनुरवाक भेंट होयवाक बात ओ सुनने छल अपन दूतक मुख सँ। अपन दानव सेना क श्रेष्ठ योद्धा सभ क सँग सैन्य व्यूह रचना कऽ पाताल लोक सऽ युद्धक निमित्त प्रयाण कएलक दानवराज बलि। ओकर हुंकार सऽ पृथ्वी काँपऽ लागल,दसो दिशा त्रस्त भऽ गेल।

देवताक सैन्य-दल क मध्य आकाश मार्ग सऽ पुष्पक वृष्टि होमय लागल। त्रिदेवक रथ आकाश मार्ग मे स्थित छल। आशीर्वाद स्वरुप हुनक रथ सँ त्रिदेव क द्वारा पुष्प-वृष्टि कएल जा रहल छल। ई देखि देवतागण मे हर्ष क लहरि पसरि गेल,अत्यन्त उत्साहित भऽ गेल छलाह ओ सभ।

किछु क्षण उपरान्त आकाश मार्ग मे दी दूनू पक्ष मे युद्ध प्रारम्भ भेल। सर्वप्रथम इन्द्र अपन सैनिक क सँग दानव सेना सऽ युद्ध-रत भेलाह। अस्त्र-शस्त्र क सनसनाहट-खनखनाहट वातावरण मे गूँजि उठल। शनैः-शनैः युद्ध भयंकर भेल जा रहल छल। देवता क पक्षक वीर सैनिक धराशायी भेल जा रहल छलाह। युद्ध मे दानव पक्ष क बहुत कम योद्धा घायल अथवा मृत भेल छल। दानव-गण मे उत्साहक तरंग उमगल छल।

इन्द्र क रथ टूटि गेलनि,ओ युद्ध क्षेत्र मे रथ सऽ खसि पड़लथि,मुदा ओहि समय पुनुरवा आबि स्थिति क सम्हारि लेलथि। खसऽ सऽ

इन्द्र क ई बात कहलथि। आर इन्द्र विश्राम हेतु चलि गेलथि,आ सेना पुरुरवा के नेतृत्व मे युद्धरत रहल। दक्षिणादि देवि मे दानव पक्षक वीर योद्धा धराशायी होमय लागल। स्थिति एकदम नियंत्रण भऽ गेल,आर देवतागण मे उत्साह उमगि पड़ल छल। दानव-गण धान-गहुमक बालि सन कटि-कटि कऽ खसल जा रहल छल। केशि के रौद्र क्रोध सऽ लाल भऽ गेल। आर अपन सेना के नेतृत्व सम्हारऽ ओ स्वयं आबि गेल।

घमासान युद्ध होमय लागल ,इन्द्र पक्षक वीर धराशायी होमय लगलाह। जखनि अस्त्र-शस्त्र के युद्ध मे दानव-पक्ष के अधिक वीर धराशायी होमय लागल,तखनि आसुरी माया के प्रपंच दानवराज केशि पसारनाइ प्रारंभ कलक। आग्नेयास्त्र,सर्पास्त्र इत्यादि के प्रयोग होमय लागल। अंधकार ओ तीव्र प्रकाशक माया रचऽ लागल। एक सऽ अनेक केशि दृष्टिगत होमय लागल। मुदा पुरुरवा तात्कालिक केशि के चिन्हबा मे कनिको गलती नहि कलथि आ ओकरा कुशलता सऽ चीन्हि कऽ अपन तीरक वर्षा करऽ लगलाह ओकरा ऊपर। ओ घायल भय खसि पड़ल। ओ आपस चलि गेल पाताल लोक विश्रामक लेल। आर दूसर-दूसर दानव सेनापति सबहक नेतृत्व मे युद्ध होमय लागल। ई युद्ध लगातार चारि दिन तक होइत रहल। मुदा आर दानव-गण मे उत्साहक कमी आबि गेल छल दानवराज केशि के घायल भऽ युद्ध क्षेत्र सऽ बाहर होयबाक कारण। तहि पर राजा पुरुरवा के कुशल नेतृत्व मे अति विशिष्ट अस्त्र-शस्त्रक प्रहार के कारण एहि युद्ध मे दानव अत्यंत कमजोर पड़ि कऽ हारि गेल आ ओ सब युद्ध क्षेत्र सऽ पलायन करऽ लागल। दानव सैनिक गणक उत्साह समाप्त भऽ गेल छल

। युद्ध समाप्त भेल, देवता विजयी भेलाह ।
विजित देवगण मँ हर्षक लहरि पसरि गेल । देवगणक जयघोष क नाना सऽ दिग्दिगंत गूंजि उठल । देवगण क द्वारा इन्द्रक संग नाजा पुनुनवा क जयघोषक नाना गीत्र स्वर मँ वहूलता सऽ लगाउल गेल । पुनुनवा क जय घोषक ध्वनि क संग देवगण पर पुनःपुष्प-वृष्टि भेल । हर्षोल्लसित पुनुनवा इन्द्र एवं अन्य देवता क संग स्वर्गक दिशा मँ आयसी लल प्रयाण कऽ गेलथि ।
अमनावती मँ प्रविष्ट होइतहि मात्र देवांगना सभ पुष्प-वृष्टि प्रारंभ कऽ देलनि । सम्पूर्ण स्वर्गलोक आनंद सागर मँ सनावोर भऽ गेल छला । आइ स्वर्ग लोक मँ परम आश्चर्य क वात भऽ रहल छल कि इन्द्र क स्थान पर पुनुनवा क जय घोषक ध्वनि गुंजित भऽ रहल छल । एना बुझाइत छल जेना स्वर्ग का नाजा इन्द्र नहि पुनुनवा ही होथि ।

....

जखनि सऽ देवताक विजय भेल दानव-गण पर,ओहि दिन सऽ नितदिन कोना न कोना उत्सव मनाउल जा रहल अछि स्वर्ग लोक मँ । प्रत्येक उत्सव मँ पुनुनवाक सम्मान भऽ रहल अछि । आश्चर्य तऽ सभ क एहि वातक होइत छनि कि इन्द्र अपन प्रमुख गुण ईर्ष्या क विसारि चुकल छथि । ओ तऽ स्वयं पुनुनवाक पराक्रम पर मोहित भेल छथि। ओ हुनक समक्ष अपना क अयोग्य तुच्छ अनुभव करऽ लागल छथि । हुनका अनुभव होइत छनि जेना कि स्वर्गक सिंहासन क वास्तविक अधिपति पुनुनवा होथि इन्द्र नहि! ओ अपन मोन मँ

पुरुरवाक विशिष्ट याचना स्वीकार कऽ लेल छथि। ओ अपना के पुरुरवाक समक्ष अपन निम्न स्तर पर पाबि रहल छथि। पुरुरवा के समक्ष ओ मात्र एक सामान्य सैनिक सन मानि रहल छथि अपना के।

मुदा पुरुरवाक विचार भिन्न छनि। ओ विजय करि सम्पूर्ण श्रेय पुरंदर के अपन समर्पित कऽ रहल छथि । राजा पुरुरवा के हृदय या मस्तिष्क के गर्वक लेश मात्र स्पर्श तक नहि कएलक अछि । ओ अपना के सामान्य मानव बुझि रहल छथि । अपन एतेक प्रशंसा सुनि ओ कनिको गर्वित नहि भेलैथि।

लेकिन एकर अर्थ इहो नहि जे राजा निःस्पृह छथि। राजा के हृदय में निःस्पृहता नहि रसयुत उत्साह छनि - कारण थिकीह उर्वशी! राजा के उत्साह छनि उर्वशी सऽ पुनः भेंट होयबाक! ओ उर्वशी जे अप्रतिम सुंदरी!अप्सरागण में सर्वाधिक सौंदर्यवती सँग गुणवती छथि ! एहि कारण तऽ ओ पुरुरवा के हृदय के सम्मोहित करि छथि! पुरुरवा मुग्ध छथि हुनका पर ! पुरुरवा! जे पृथ्वी पर अपना के ब्रह्मचर्यव्रत के महान पुजारी बुझैत छलाह! स्वर्ग में अपन ओ विशिष्ट धन गुमा चुकल छथि! उर्वशी के प्रेम में विदग्ध,विह्वल प्रेमी समान ओ तऽ उर्वशी सऽ मिलन करि कारहुना उपयुक्त अवसर प्राप्त होयबाक प्रयास में छथि!

मुदा प्रतिदिन के व्यस्तता में ओ अपना के असहाय सन अनुभव कऽ रहल छथि । उर्वशी सऽ कोना पुनः भेंट होनि ओ बुझि नहि पाबि रहल छथि । उर्वशी सऽ मिलन करबा हेतु हुनक हृदय अत्यंत व्यग्र छनि ।

ओम्हर उर्वशी के मनः स्थिति एहि सऽ किछु भिन्न नहि छनि। हुनका

हृदय मे पुरुरवा विराजमान छथि । उर्वशी क हृदय कमल अछि पुरुरवा मे । स्वर्ग मे आयोजित कोनो उत्सव मे ओ नहि जाइत छथि । कोनो निमंत्रण क ओ अस्वीकृत कऽ दैत छथि । पुरुरवा सऽ मिलन केर अवसरक संधान मे स्वयं उर्वशी अपने व्यस्त छथि। अन्य समस्त कार्य हुनका समक्ष ओहि समय गौण भेल छनि।

बहुत समय तक दानवगण सँ त्रस्त शासन व्यवस्था क बाद पुनः नवीन युग मे स्वर्गक शासन मे आमूल परिवर्तन करबा हेतु इन्द्र अपन सब सभासद क दरबार मे आमंत्रित कएने छथि । देवर्षि नारद ओहि अवसर पर विराजमान छथि स्वर्गलोक मे। पुरुरवा क ओहि सब कार्य मे कनिको रुचि नहि छनि,तथापि ओ अन्यमनस्क भाव सऽ बैसल छलाह सभा मे ।

सप्तर्षि क विचार छलनि कि स्वर्ग क सिंहासन पर पुरुरवा क बैसाओल जाए,मुदा हुनक ओहि प्रस्ताव क पुरुरवा स्वयं अस्वीकृत कऽ देलनि । ओहि अनुचित प्रस्ताव सऽ इन्द्र अपने भयभीत भऽ गेलथि,मुदा सप्तर्षि क सम्मुख ओ किछु बाजि नहि सकलाह । ओहि संबंध मे सब कओ विचार मग्न छलाह ओहि समय आकाशवाणी भेल -

"पुरुरवा क स्वर्गक अर्द्धशासक बनाओल जाए" - ई धीर गंभीर प्रिय वाणी भगवान विष्णु क छलन्हि । इन्द्र ई आकाशवाणी सुनि निराश भऽ गेलाह। सप्तर्षि क सम्मति ओहि देववाणी सँ आर दृढ़ भेलैन्हि । इन्द्र क स्वर्ग मे अपन अर्द्धासन पुरुरवा का देबय पड़लन्हि । ओना तऽ पुरुरवा क सहमति ओकर पक्ष मे नहि छल,मुदा भगवान विष्णु क आदेशक अवहेलना कराइ पुरुरवाक वास्ते असंभव कार्य छल ।

स्वर्ग मं यूनुनवा क नाग्नारिषक क विशाल आयाजन रामय लागल । सदासदगण मं अति प्रसन्नताक लहनि व्याप्त रल । सद दनयूनूष दनांगना प्रसन्न छलथि,मूदा नाजा क काना विशेष प्रसन्नता नहि रलनि । उा गs उर्वशी क नियाग जनित यीडा सँs अयन हृदय मं उठि नहल दर्दक लहनि क सहन कनवा मं असमर्थ रs नहल छलाह । हुनक हृदय मंदिन मं गs एक अनिन्द्य सुंदनी कामलांगी दवी प्रतिष्ठित रय गेल छलीह । उा छलीह त्रिलाकक सद सौंदर्यवती नानी मं सर्वश्रेष्ठ सौंदर्यवती अप्सना उर्वशी ! हुनक हृदय गs जना काँच सुत सs वद्धायल हुनक दिस प्रनित रा्हत छलहि । अनमनायल सन राव सs उा सदा क कार्यकलाप क दखि नहल छलाह । सुनसनि क जल सs हुनक अरिषक रलैहि,एवं नाजमुकुट स्वर्गक यनंयनानूय हुनका धानण कनय यडलहि ।

क्रमशः

अयन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पन पठाउ।

२.८.जगदीश प्रसाद मण्डल-जिनगी रान वनि गेल



जगदीश प्रसाद मण्डल

जिनगी भार बनि गेल

नोकरीसँ निवृत्त भेला पछाति रमेन्द्र कुमार गामेमे रहैक विचार मनमे राखि लेलैन। किछु छी तँ गाम-समाज गामक समाज छी। कारण आरुद्र-आसमानी, बाढ़ि-रौदी किए ने भेल मुदा गामक समाज अखनो ओहिना अछि जहिना हजार बरख पूर्व छल। एकर माने ई नइ बूझब जे गामेमे रास्ता-सड़क ओहिना अछि आ पोखरिया-इनार ओहिना अछि जहिना हजार बरख पूर्व छल। एकर माने ई जे अखनो गामक किसान खेतीसँ जुड़ल छैथ, गाए-महींस पोसबसँ जुड़ल छैथ। ओना, किछु नव व्यवसाय सेहो बढ़ल अछि आ किछु पुरान व्यवसाय सेहो समाप्त भऽ गेल अछि। समयानुसार जीवन चलैए। जँ से नहि चलत तँ ओ नष्ट भऽ जाएत। जेना बैलगाड़ी, हाथी, घोड़ाक सवारी नष्ट भऽ गेल आ नव-नव इंजीन-चालित सवारी आबि गेल अछि।

गामेमे रहैक विचार रमेन्द्र कुमारकेँ ई छलैन जे सेना निवृत्त

हाऊससँ साग दिन यहिन धनि गामकँ विसनल छला। जहियासँ नाकनी शुनु कलैन गहियटा सँ किछ कहव ज गहुसँ यहिनसँ, माटा-माटी जन्मसँ वूमु, किछक गँ यिगा सनकानी नाकनी कनै छलैन, यनिवान संगे नखे छला, कहिया काल मान सालम मास दिनक छुट्टी रुनि, गामम विगवै छला। नउन्ह उक मासक छुट्टीक समयक गाम हमन्द कुमानक मनकँ यकँउ नन छलैन। यकँउ ऊ्ली नन छलैन ज शहन-वाजानक उहन जीनन अछि। ज उक मकानम अनका नायाक लाका नहि छैथ, जिनकन जीनन शैली सहा रिल्न छैन। गैसंग शहन-वाजानम काजक व्यस्तता सहा वसी नहिग अछि, जऊूसँ दासनसँ सम्बन्ध वनैम कठिन रुऊूय जाऊूउ। गामक जीनन अखना डाहन अछि जकन सम्बन्ध-सूत्र अत्यांशे किछ न मुदा अखना जीनिग अछि ज जागि, याँजि आ सम्प्रदायसँ जयन उठल अछि। मान ऊ्ली ज जकना समाजम निम्न वूमै छिउ, गहु यनिवानक वृद्धजनकँ समाजक आना जागिक वच्चा-जआन �वावा�, �काका�, �रैया� कहि छैन आ डाही नजैनसँ आदन सहा कनैग आवि नहल छैन। उठाम उकना उक सामाजिक धानाक प्रनाह कहि सकै छिउ। मुदा उक जागिकँ दासन जागिक वीचक किनदानी की कहव ज जागि-जागिक रीगन कटुगा सहा उगा दुनी वनौन अछि ज सदिकाल उक-दासनकँ निम्नाँ दखैउ। खाउन ज अछि, गऊूसँ हमन्द कुमानकँ कान मगलव छैन, मगलव छैन अयन सना-निवृत्तिक यछागिक शेष जीननसँ।

सूर्यास्तक समय। न सूर्य यूर्णनुयधा डूमल छल आ न दिनक प्रकाश जकाँ प्रकाशिग छला। हमन्द कुमानकँ ▯हिसम सूचना रुट गेल छलैन ज उगला आठम दिन अहाँक लल ऊ्ली कार्यालय नहि नहगा। सागम दिन सना-निवृत्तिक सूचना रुट जाउग।

जहिना सामाग्या लाक बूझैत जे सरह दिन ओहिना नहवा। मान मृत्यु नहि हएत, तहिना अखन एक हेमन्त कुमार सेहो बूझै छला। गाँत नाम नामक लूट अछि, जे लूटि लेब से अपन सुख हएत। अखन एक हेमन्त कुमारकेँ गाम करोँ मान छलैन, जेँ से नहिऐन गाँ दिल्लीम फ्लैट किनत किननैथ। यटनम मकान कीनवाक कान खगता छलैन। सनकारी क्वाटरम सरह दिन नहला तखन मकानक कान खगता छलैन। गामम अखनो बाबाक बनलहो झोँपड़ा-खपड़ाक घन छैन।

दिन हनिक सूर्यक किनघ यब जहिना स्कूल चकचकाइत नहैत आ सूर्यास्त होइत जना मलयन यसनत लगै छै तहिना हेमन्त कुमारकेँ याँच बजे अपन कार्यालयसँ निकलला पछाइत, हलैन। मूदा, होइ स्मनक अहूसन जहिना अपन स्मनक मनटन कर्ने छैथ तहिना हेमन्त कुमार सेहो कलैन। ओना, □हिससँ निकलला पछाइत, मान अपन कार्यालयसँ निकलला पछाइत, शेष जे दुटा स्याह कार्यालयम छैन, ओ दुनू बूझि गेल छला जे सातम दिन सादेव सेवा निवृत्त हऽ चलि जेता। ओगला अहूसन कहून अबै छैथ से देखा चाही। गाँत कार्यालयसँ अपन जे काना सम्बन्धि काज अछि ओ सरह कना लेब, हनिविक लल नीक नहता।

कार्यालयसँ अपन सेवा-निवृत्तिक सूचना-पत्र हाथम नन हेमन्त कुमार अपन ठेना पहुँच ज्ञाइँग नूयक टेबुलयन नखलैन। कयडा खालि, हाथ-पएन, मूँह-कान धोइकऽ बैसकम बैसब कलाह कि पत्नी- नश्मि जलयानक प्लेट आगूम नखि, पुन: किचन दिस बढि गेली। अपूछ-नस्तुक किचन छलैन्ह। हनि मन हेमन्त कुमार जलयान कनि, चाह पीवत लगला। नश्मि सेहो चाहक कय नन आगूम बैस पीवत

लगली। तही बीच हेमन्त कुमारकेँ सेवा-निवृत्तिक चिट्ठी भेटलैन
गेलैन। ओना, अपना अपन आयुक हिसाबसँ बुझिते रहल छला
जे एक दिन नोकरी करलौं। मुदा से बिसैर गेल छला जे आइ पुन:
चिट्ठी हाथमे एला पछाइत मोन पड़लैन। मोन पड़िते बारहक चिन्तीमे
गणितमे आबए लगलैन। मोन जेना बाहर धीबे छला, तेहेन खर्चांब
उत्पन्न हुलैन। बजला-

"सेवा निवृत्तिक चिट्ठी भेट गेल। काल्हिसँ सेवा-मुक्त भए जाएब।"

बाल-बच्चा सेहो नश्चि बजली-

"अहींटा सेवा-निवृत्त हएब आकि सभ होइ छै।"

ओना, हेमन्त कुमार अपन जीवनक चढ़ा-उतरी देख रहल छला
मुदा पत्नी छियैथ बजला-

"हँ, से तँ सभ होइए अछि। मुदा एते तँ मनमे खुशी अछिए
जे बत्तीस सालक नोकरीक जीवन बेदाग रहल।"

पत्नीक मनमे किए अबिते जे जीवन बदलने सभ किछु बदलैए
आ दोसर जीवन पड़िते शुरू होइए।

चारि दिनक पछाइत चिट्ठी पढ़ि हेमन्त कुमार पत्नीकेँ कहलैन-

"अखन अहाँ अपन काज देखू, मन किछु हनियाएल बुझि पड़ैए,
तेँए थोड़काल आराम करू।"

एक तँ ओहुना पढ़ल-लिखल गुणशील होइत छैथ तेहुमे ओयन सुनक
जे महिला छैथ ओ तँ आरो बेसी होइत छैथ। जहिना हेमन्त कुमार
बजला तहिना पत्नी ध्यानसँ सुनसँ बहुना गेली। साहायन ओठो,
आँखि मूनने हेमन्त कुमार अपन जीवन गुनए लगला। जीवनक
ओहो माइयन आइ आबि गेल छी, जेमसँ एक जीवन बदैल
दोसर जीवनक सिमानमे पएर राखब। अखन तेकक अपन जीवन

यएह ने भेल जे पिताजीकेँ नीक नोकरी छलैन, एखनधरि कमाइते छलैन, परिवारक संग बाबू गाँमक एकघर-परिवारक आ नीक पिता-पीसा सेहो रहल, जइसँ नीक-नीक नोकरी बाबू गाँमकेँ अछि। मुदा बाबू गाँमक बीच अपन जीवन नरखा की अछि, तही बीच ने आगुक जीवन निर्धारित करब। अपन गाँ यएह ने अछि जे माता-पिता मरि गेला। बीचमे अपन दूनू परानी छी। मात्र पति-पत्नी, गेबीच दुटा बेटी अछि। ओ दूनू ठाँकुरी पिता पौतहि अछि। दूनू अपन-अपन सासुर बास करैए।

नाटिक नअ बाजि गेल। गमन साँझक सीमा सेहो टपि गेल। मुदा आँखि बन्न कए कुरसीपर ओठंगल रमेश कुमार काल्हुक जीवन ले निश्चयात्मक विचार नहि कऽ सकल छला। निश्चयात्मक विचार कइये कहा सकितैथ। किएक तँ दू जीवनक बीच विचार रहसल छलैन। एक जीवन ओ छलैन जे सरकारक हाकिम रमनक अछि आ दोसर सामाजिक जीवन छलैन। बहराल नुपम सरकारी छलैन आ विचार नुपम सामाजिक छलैन, जइसँ बीच अपन शेष जीवन बिताएब छैन...।

तहूमे विश्राम नहि भ्राँइग नुमम आबि कहलकैन- �अहाँटा सदा निवृत्त एलौं हुन आबि सभ हाइए, तइले अपना किए एते मथहानि कए छी।�

पत्नीक विचार सुनि रमेश कुमार बजला- �यएह नइ गप कऽ पाबि भरल छी जे आगुक जिनगी कोना आ कोना बिताएब?�

अपन पिताक सदा निवृत्तिक जीवनकेँ अखियासैत नहि बजली- �ओतम अपन की अछि जे भरब। अपन गाँ सभ किछु गाममे अछि, गाँए नीक हएत जे गाम चली।�

𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲𑒏 𑒢𑒱𑒡𑒢 𑒯𑒹𑒧𑒢𑓂𑒞 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩𑒏 𑒯𑒵𑒠𑒨𑒧 𑒢𑒲𑒏 𑒑𑒛𑓃𑒰𑒢 𑒑𑒛𑓃𑒪𑒻𑒢 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒁𑒐𑒢 𑒞𑒏 𑒖𑒹 𑒮𑒳𑒫𑒱𑒡𑒰 𑒕𑒪𑒻𑒢, 𑒍 𑒑𑒰𑒧𑒧𑒹 𑒢𑒯𑒱 𑒠𑒹𑒐 𑒣𑒥 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪𑒰। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒋𑒞 𑒞𑒿 𑒧𑒢 𑒧𑒰𑒢𑒱𑒨𑒿 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪𑒻𑒢 𑒖𑒹 𑒣𑒳𑒩𑒳𑒭-𑒠𑒩-𑒣𑒳𑒩𑒳𑒭 𑒪𑒼𑒏 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒡𑒢𑒲𑒨𑒢 𑒥𑒱𑒞𑒥𑒻𑒞 𑒂𑒥𑒱 𑒩𑒯𑒪𑒰 𑒁𑒕𑒱। 𑒧𑒢𑒏 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒮𑒦 𑒢𑒱𑒔𑒰𑒢 𑒞𑒢 𑒣𑒛𑓃𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒻𑒢, 𑒂 𑒋𑒏𑒰𑒋𑒏 𑒧𑒳𑒯𑒮𑒿 𑒥𑒯𑒩𑒰 𑒑𑒹𑒪𑒻𑒢-

�𑒏𑒰𑒪𑓂𑒯𑒱 𑒑𑒰𑒧 𑒔𑒪𑒱 𑒖𑒰𑒋𑒥।�

𑒋𑒏 𑒞𑒿 𑒮𑒹𑒫𑒰-𑒢𑒱𑒫𑒵𑒞𑓂𑒞𑒱𑒏 𑒣𑒕𑒰𑒞𑒱𑒏 𑒖𑒹 𑒪𑒹𑒢-𑒠𑒹𑒢 𑒕𑒪𑒻𑒢 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒂 𑒢𑒼𑒏𑒩𑒲𑒏 𑒥𑒲𑒔 𑒖𑒹 𑒥𑒿𑒔𑒪 𑒕𑒪𑒻𑒢, 𑒖𑒹 𑒥𑒻𑓀𑒏𑒧𑒹 𑒕𑒪𑒻𑒢, 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒮𑒦𑒙𑒰 𑒧𑒱𑒪𑒰𑒏𑓄 𑒖𑒐𑒢 𑒯𑒹𑒧𑒢𑓂𑒞 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒠𑒹𑒐𑒪𑒰 𑒞𑒿 𑒧𑒢 𑒏𑒯𑒱 𑒠𑒹𑒪𑒏𑒻𑒢 𑒬𑒹𑒭 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒏𑒙𑒥𑒰 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒞𑒢𑒯𑒏 𑒁𑒮𑒼𑒏𑒩𑓂𑒖 𑒯𑒋𑒞। 𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒞𑒢𑒯𑒏 𑒁𑒦𑒰𑒫 𑒢𑒯𑒱𑒨𑒹𑒿 𑒯𑒋𑒞, 𑒞𑒯𑒴𑒧𑒹 𑒣𑒹𑓀𑒬𑒢 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒧𑒰𑒮-𑒧𑒰𑒮 𑒦𑒹𑒙𑒥 𑒏𑒩𑒞। 𑒏𑒱𑒋 𑒧𑒢𑒧𑒹 𑒁𑒥𑒱𑒞𑒻𑒢 𑒖𑒹 𑒖𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒖𑒢𑓂𑒧𑒏 𑒣𑒕𑒰𑒞𑒱𑒋 𑒥𑒔𑓂𑒔𑒰𑒏 𑒠𑒹𑒐-𑒩𑒹𑒐 𑒖𑒿 𑒧𑒰𑒋-𑒥𑒰𑒣 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒩𑒻𑒟 𑒞𑒿 𑒍 𑒥𑒔𑓂𑒔𑒰 𑒡𑒢𑒲𑒨𑒢 𑒢𑒯𑒱 𑒙𑒱𑒏 (𑒖𑒲𑒫) 𑒣𑒾𑒞, 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒫𑒵𑒠𑓂𑒡𑒰𑒫𑒮𑓂𑒟𑒰 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒋𑒏 𑒠𑒱𑒮 𑒬𑒩𑒲𑒩𑒏 𑒁𑓀𑒑-𑒣𑓂𑒩𑒞𑓂𑒨𑓀𑒑 𑒬𑒱𑒟𑒱𑒪 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒠𑒱𑒮 𑒩𑒼𑒑-𑒥𑒹𑒧𑒰𑒩𑒲𑒏 𑒂𑒏𑓂𑒩𑒧𑒝 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱, 𑒞𑒿𑒃𑒪 𑒠𑒼𑒮𑒩𑒏 𑒖𑒩𑒴𑒩𑒞 𑒣𑒛𑓃𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒮𑒒𑒢 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩 𑒖𑒿 𑒩𑒯𑒪 𑒞𑒿 𑒥𑒹𑒙𑒰-𑒣𑒳𑒞𑒼𑒯𑒳, 𑒣𑒼𑒞𑒰-𑒣𑒼𑒞𑒲 𑒮𑒹𑒫𑒰 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒂 𑒖𑒿 𑒮𑒹 𑒢𑒯𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒞𑒿 𑒢𑒼𑒏𑒩-𑒔𑒰𑒏𑒩𑒏 𑒥𑒪𑒹𑒿 𑒔𑒪𑒻𑒞...।

𑒖𑒲𑒫𑒢𑒏 𑒮𑒒𑒢 𑒫𑒢𑒧𑒹 𑒯𑒹𑒧𑒢𑓂𑒞 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩𑒏 𑒧𑒢 𑒍𑒞 𑒔𑒏𑓂𑒏𑒩 𑒢𑒯𑒱 𑒪𑒑𑒰 𑒮𑒏𑒪𑒻𑒢 𑒖𑒞 𑒔𑒏𑓂𑒏𑒩 𑒪𑒑𑒥𑒻𑒏 𑒖𑒩𑒴𑒩𑒞 𑒕𑒪𑒻𑒢। 𑒯𑒹𑒧𑒢𑓂𑒞 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒥𑒖𑒪𑒰-

�𑒏𑒰𑒪𑓂𑒯𑒱𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒏𑒰𑒪𑓂𑒯𑒱 𑒮𑒼𑒔𑒱 𑒪𑒹𑒥। 𑒔𑒪𑒴 𑒣𑒯𑒱𑒢𑒹 𑒦𑒼𑒖𑒢 𑒏𑒩𑒥।�

𑒩𑒬𑓂𑒧𑒱 𑒥𑒖𑒪𑒲- �𑒎𑒮𑒳𑒏 𑒮𑒼𑒔𑒪-𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩𑒪 𑒮𑒿 𑒢 𑒏𑒰𑒪𑓂𑒯𑒱 𑒔𑒪𑒞।�

𑒯𑒹𑒧𑒢𑓂𑒞 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒥𑒖𑒪𑒰- �𑒏𑒰𑒪𑓂𑒯𑒱 𑒑𑒰𑒧 𑒔𑒪𑒱 𑒖𑒰𑒋𑒥। 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒪𑒼𑒏 𑒔𑒰𑒯𑒹 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒯𑒼𑒟𑒳 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒣𑒳𑒩𑒳𑒐𑒻𑒢𑒲 𑒮𑒧𑒰𑒖 𑒞𑒿 𑒕𑒱𑒨𑒰𑒯।�

गाम आबि, छअ् मासक बीच रुमन्द कुमान अयन नरुैक उारुन सरु वनस्था, मानि सुनिधायुर्ण जीनन चलैल, कs ललैन। जऽ्ऽ्सँ मन मानि गेलैन ज शान्तियुर्ण ढंगसँ शेष जीनन विगा लव।

आऽ्ऽ् गसन दिन, मानि अखन गक रुमन्द कुमान घन-आँगन, दुआन-दनवज्ञा वनवैक याछू लगल छला गँ ओ गाम दिस कानि धियानि न छलैन, दुनू यनानी दनवज्ञाक उासानयन वैसल गाम दिस दख नरुल छला। नशि वजली-

�अखन गकक वीगल जीनन की नरुल आ अवैवला रुनिश्चक जीनन कारुन रुओग?�

निर्वलक वल जरुिना आभ्मानाम रुाऽ्ऽ्ओ गरुिना रुमन्द कुमान आभ्मवलक संग वजला-

�जिनगी गँ रुान वनियँ नरुल अछि, मुदा आँखि गँ गकै छी।�

-जगदीश प्रसाद मण्डलजीक जन्म मधुबनी जिलाक बनमा गामम 5 जुलाऽ्ऽ्ई 1947 ऽ्ऽ्स्वीम रुलैन। मण्डलजी हिन्दी ओनं नाजनीगि शास्त्रम ओम.ओ.क अरुर्ग यावि जीनिकायार्जन रुगु कृषि कार्यम संलग्न रुs नुचि यूर्नक समाज सनाम लागि गेला। समाजम व्याप्त नुढिनादी ओनं सामन्ती व्यनरुान सामाजिक निकासम रिनका नाधक वूमि यओलैन। रुलग: जमीन्दान, सामन्तक संग गामम यूनजान लओऽ्ऽ् ०।ढ रुs गेलैन। रुलग: मण्डलजी अयन जीननक अधिकांश समय कस-माकदमा, जरुल यात्रादिम व्यगीग कलारु। 2001 ऽ्ऽ्स्वीक यछाऽ्ऽ्ग सारुित्य लखन-उाग्रम ओला। 2008 ऽ्ऽ्स्वीसँ निरिन्न यत्र-यत्रिकादिम रिनक नचना प्रकाशिग रुअ् लगलैन। गीग, काव्य, नाटक, ओकांकी, कथा, उयन्यास ऽ्ऽ्यादि सारुित्यक मौलिक निधाम रिनक अननग

लेखन अद्वितीय सिद्ध भऽ रहलैन अछि। अखन धरि दर्जन भरि नाटक/एकांकी, पाँच साएसँ ऊपर गीत/काव्य, उन्नैस गोट उपन्यास आ साढ़ आठसाए कथा-कहानीक संग किछु महत्वपूर्ण विषयक शोधालेख आदिक पुस्तकाकार, साएसँ ऊपर ग्रन्थमे प्रकाशित छैन। मिथिला-मैथिलीक विकासमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक योगदान अविस्मरणीय छैन। ओ अपन सतत क्रियाशीलता आ रचना धर्मिताक लेल विभिन्न संस्थासभक द्वारा सम्मानित/पुरस्कृत होइत रहला अछि, यथा- विदेह सम्पादक मण्डल द्वारा गामक जिनगी' लघु कथा संग्रह लेल 'विदेह सम्मान- 2011', 'गामक जिनगी व समग्र योगदान हेतु साहित्य अकादमी द्वारा- 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड- 2011', मिथिला मैथिलीक उन्नयन लेल साऊन दरभंगा द्वारा- 'वैदेह सम्मान- 2012', विदेह सम्पादक मण्डल द्वारा 'नै धारैए' उपन्यास लेल 'विदेह बाल साहित्य पुरस्कार- 2014', साहित्यमे समग्र योदान लेल एस.एन.एस. ग्लोबल समिति द्वारा 'कौशिकी साहित्य सम्मान- 2015', मिथिला-मैथिलीक विकास लेल सतत क्रियाशील रहबाक हेतु अखिल भारतीय मिथिला संघ द्वारा- 'वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' सम्मान- 2016', रचना धर्मिताक उत्तम अमूल्य योगदान हेतु ग्राम्या-मण्डल द्वारा- 'कौमुदी सम्मान- 2017', मिथिला-मैथिलीक संग अन्य उत्कृष्ट सेवा लेल अखिल भारतीय मिथिला संघ द्वारा 'स्व. बाबू साहेब चौधरी सम्मान- 2018', चेतना समिति, पटनाक प्रसिद्ध 'यात्री चेतना पुरस्कार- 2020', मैथिली साहित्यक अहर्निश सेवा आ सृजन हेतु मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समिति, गुवाहाटी-असम द्वारा 'राजकमल चौधरी साहित्य सम्मान- 2020', भारत सरकार द्वारा 'साहित्य अकादमी पुरस्कार- 2021' तथा साहित्य आ संस्कृतिमे महत्वपूर्ण अवदान लेल अमर शहीद

नामरूल मंडल निवान मंव द्वाना 'अमन शहीद नामरूल मंडल नाष्ट्रीय यूनस्कान- 2022'

नवना संसान : 1. ऽऽङ्गधनूषी अकास, 2. नागि-दिन, 3. गीन ज0 अगानरूम माघ, 4. सनिगा, 5. गीगांजलि, 6. सूखाअल यारवनिक जाऽऽ0, 7. सगवध, 8. वूनौगी, 9. नरूसा वौनी, 10. कामधेनू, 11. मन मथन, 12. अकास गंगा - कविगा संग्रह। 13. यंवनटी- अकांकी संवयन। 14. मिथिलाक वटी, 15. कम्प्रामाऽऽज, 16. समालिया विआरू, 17. नम्नाकन उकौग, 18. स्नयंनन- नाटक। 19. मौलाऽऽल गाछक रूल, 20. उछान-यगन, 21. जिनगीक जीग, 22. जीवन-मनध, 23. जीवन संघर्ष, 24. नै धाउँअ, 25. वअकी वरिन, 26. रादनक आ0 अह्वान, 27. सधवा-विधवा, 28. 00 गाछ, 29. ऽऽञग गमा ऽऽञग वँवलौं, 30. लरूसन, 31. यंगु, 32. आमक गाछी, 33. सूविगा, 34. माअयन, 35. संकल्प, 36. अन्हिम उध, 37. कृष्ठा- उयन्यास। 38. ययस्विनी- प्रवन्ध-निवन्ध-समालावना। 39. कल्याधी, 40. सगमाअ, 41. समभौगा, 42. गामक गमधैल, 43. वीनांगना- अकांकी। 44. गनगन, 45. वजन्मा-वूसन्मा- वीरून कथा संग्रह। 46. शंगुदास, 47. नटनी खढ- दीर्घ कथा संग्रह। 48. गामक जिनगी, 49. अर्द्धांगिनी, 50. सगरैंया यारवैन, 51. गामक शकल-सूनग, 52. अयन मन अयन धन, 53. समनथाऽऽक रूग, 54. अयुयन-वीनान, 55. वाल गोयाल, 56. रकमाअ, 57. उलवा वाउन, 58. यगमाअ, 59. गढ़ैनगन राथ, 60. लजविजी, 61. उकटू समय, 62. मधूमाछी, 63. यसनाक धनम, 64. गुअ- खूद्दीक नाटी, 65. रूलराग, 66. खसौग गाछ, 67. अगह्वा आमक

गाछ, 68. शुरुचिक्कक, 69. गाछयन सँ खसला, 70. उरियाञल गाम, 71. गुलगी दास, 72. मूठियाञल घन, 73. वीनांगना, 74. स्मृति शेष, 75. वटीक यैनूख, 76. क्रान्तियाग, 77. त्रिकालदर्शी, 78. यैंतीस साल यछुआ गेलौं, 79. दारुनी रुाक, 80. सुरिमानी जिनगी, 81. दखल दिन, 82. गयक यियाहूल लाक, 83. दिनालीक दीय, 84. अयन गाम, 85. खिलगाउ सुमि, 86. चिगनक शिकान, 87. वौनस खगक वौनस उयज, 88. समयसँ यहिन वग किसान, 89. रौक, 90. गामक आशा टूटि गेल, 91. यसनाक माल, 92. कृषियाग, 93. रुानल वरुना जीगल नुय, 94. नरु जाकन यनिवान, 95. कर्गक नंग कर्मक संग, 96. गामक सूनग वदैल गेल, 97. अन्तिम यनीआ, 98. घनक खर्च, 99. नीक Oकान Oकलौं, 100. जीवनक कर्म जीवनक मर्म, 101. संवनध्व, 102. रुनि मन काज, 103. आञल आशा चलि गेल, 104. जीवन दान तथा 105. अयन सागी- लघु कथा संग्रह।

उनवनायन **अयन**

मंगद्य editorial.staff.videha@gmail.com **यन यOाउ।**

२.९.आचार्य रामानन्द मण्डल-गोनी आ प्रेम मे धोखा



आचार्य रामानंद मंडल

गौरी आश्रम म धोखा

१

गौरी

पंडित महादेव मिश्र बीस बीघा जमीन के जोतनिया रहथि। जमींदार लेखा ठाठ बाट। कनाती वाला हवेली आ छतदार दरवाजा। नौकर-चाकर,दू जोड़ा बैल,हरवाह,जन,एगो भैंस आ दुगो गाय,चरवाह। पंडित जी पूजा न करावथि नरन् पूजा करैं। मान की यजमानी ना।

सुबह पूजा पाठ के बाद दरवाजा पर बैठकी। जहां मूंहलगा सब के संग चाय-पान आ गपबाजी। एकर छोड़ न मान कि खेती पर ध्यान न,से बात ना। खेती के समय खेत के आड़ि पर बैठ के जन मजदूर पर ध्यान। खेती से दू सौ मन धान,एक सौ मन गेहूं आ भरपूर तेलहन-दलहन हो जाइन। गांव के राजनीति करे म माहिर रहतन। प्रतिष्ठा खूब रहैन।

पंडित जी के पत्नी सती देवी रहथिन। सति देवी खूब सुन्दर रहथ। मृदुभाषिणी आ वाकपटुनी सेहो रहथ। त पंडित जीयो कम ना। सामान्य कद के गोर शरीर, बड़ बड़ आंख आ धारदार नाक। माथा पर त्रिपुंड। परिवार खुश हाल।

परंतु विधना के विधान। सती देवी एगो सुन्दर लतिका के जनम देलक। परंतु छठियार के बिहान सती देवी परलोक सिधार गेल।

पंडित जी क विधवा बूढ़ी माय बाऽऽ लड़िका पाल लक। पंडित जी दुखी नइ लगलन।

पंडित जी आबि भगवान शंकर क आउर पूजा करऽ लगलन। अपन हाथ माटी क महादेव बनावथि, बेलपत्र पर राम राम लिखैत। बाऽऽ बेलपत्र आ कनर-धथुर फूल स पूजा करैथ।

पंडित जी आबि पैदल काँवर लक बाबा बैद्यनाथ धाम जाय क बिचार कैलन आ अपन मुँहलगुआ सब क कहलन। बिचार भेल कि अऽऽ माघ श्री पंचमी क बाबा बैद्यनाथ पर जल चढ़ायल जाय। सब तैयारी भेल नौकर-चाकर संग रसोऽऽया एक काँवर लक जायत। माने कि खाय पिय क सब समान भरिया लक चलत। खाली जलावन ठहराव स्थान पर खरीदल जायत।

पंडित जी अपन चवना ससुर क बाबा धाम चल क संवाद पठेलन। चवना ससुर गिरीश पाठक स खूब पटैत।

पहिलाहि कहीं तीर्थाटन म जायत रहलन त पाठक जीया संग रहैत। पाठक जी बाबा धाम जाय क लेल पंडित जी क घर कैलाशपुर अऽऽलन। पठंतु संग मं रहैन पच्चीस साल क पूरी बेटी गौरी। पाठक जी सोचलैन कि अऽऽ साल गौरी क हाथ पीला क देब। अऽऽस पहिल गौरी क बाबा बैद्यनाथ क दर्शन करा देबक चाही।

गौरी कालीदास स्मारक महाविद्यालय, चंदौना स बी.ए समाजशास्त्र कैल रहै। गौरी गोरांगी, कोमलांगी आ व्यवहार कुशल

𑒢𑒫𑒨𑒾𑒫𑒢𑒰 𑒩𑒯𑒨। 𑒣𑓀𑒛𑒱𑒞 𑒧𑒯𑒰𑒠𑒹𑒫 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩 𑒑𑒾𑒩𑒲 𑒏 𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒥𑒺𑒠𑓂𑒨𑒢𑒰𑒟 𑒡𑒰𑒧 𑒠𑒩𑓂𑒬𑒢 𑒏𑒩𑒥𑒰 𑒏 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒮 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒢𑓂𑒢 𑒦𑒹𑒪𑒢। 𑒣𑓀𑒛𑒱𑒞 𑒧𑒯𑒰𑒠𑒹𑒫 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩 𑒂 𑒑𑒾𑒩𑒲 𑒏 𑒨𑒠𑒰 𑒏𑒠𑒰 𑒅𑒧𑒰-𑒮𑓂𑒫𑒰𑒧𑒲 𑒫𑒰𑒪𑒰 𑒧𑒢𑒼𑒫𑒱𑒢𑒼𑒠 𑒦𑒹𑒪 𑒩𑒯𑒨। 𑒁𑒯𑒴 𑒦𑒹𑓀𑒙 𑒮 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒑𑒼𑒙𑒹 𑒯𑒩𑓂𑒭𑒱𑒞 𑒩𑒯𑒨।

𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒡𑒰𑒧 𑒨𑒰𑒞𑓂𑒩𑒰 𑒬𑒳𑒩𑒴 𑒦𑒹𑒪। 𑒮𑒦 𑒣𑒱𑒨𑒩-𑒣𑒱𑒨𑒩 𑒫𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩 𑒧𑒹। 𑒮𑒦𑒮 𑒂𑒏𑒩𑓂𑒭𑒏 𑒣𑓀𑒛𑒱𑒞 𑒧𑒯𑒰𑒠𑒹𑒫 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩 𑒂 𑒑𑒾𑒩𑒲 𑒣𑒰𑒚𑒏 𑒪𑒰𑒑𑒹। 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒮𑓀𑒨𑒰𑒮𑒲-𑒮𑓀𑒨𑒰𑒮𑒱𑒢। 𑒮𑒦𑒮 𑒣𑒯𑒱𑒪 𑒏𑒳𑒪 𑒠𑒹𑒫𑒞𑒰, 𑒑𑒰𑓀𑒫 𑒠𑒹𑒫𑒞𑒰 𑒂 𑒧𑒯𑒰𑒠𑒹𑒫 𑒧𑒚 𑒧𑒹 𑒣𑒴𑒖𑒰 𑒦𑒹𑒪 𑒂 𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒡𑒰𑒧 𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒣𑓂𑒩𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢। 𑒯𑒩 𑒯𑒩 𑒧𑒯𑒰𑒠𑒹𑒫 𑒏 𑒮𑓂𑒫𑒩 𑒮 𑒡𑒩𑒞𑒲 𑒂𑒏𑒰𑒬 𑒑𑒳𑓀𑒖𑒰𑒨𑒧𑒰𑒢 𑒯𑒼 𑒑𑒹𑒪।

𑒮𑒦 𑒚𑒯𑒩𑒰𑒫 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢 𑒣𑒩 𑒬𑒱𑒫 𑒣𑒳𑒩𑒰𑒝 𑒏 𑒔𑒩𑓂𑒔𑒰 𑒣𑓀𑒛𑒱𑒞 𑒧𑒯𑒰𑒠𑒹𑒫 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩 𑒏𑒩𑒺𑒟। 𑒮𑒳𑒢𑒱𑒯𑒰𑒩 𑒏𑒩𑒪 𑒂 𑒏𑒩𑒪 𑒑𑒾𑒩𑒲 𑒣𑒰𑒚𑒏। 𑒂𑒅𑒩 𑒪𑒼𑒑 𑒐𑒰𑒢𑒰-𑒣𑒲𑒢𑒰 𑒏 𑒫𑓂𑒨𑒫𑒮𑓂𑒟𑒰 𑒧𑒹। 𑒧𑒳𑒐𑓂𑒨 𑒫𑓂𑒨𑒫𑒮𑓂𑒟𑒰𑒣𑒏 𑒩𑒯𑒟𑒱-𑒑𑒱𑒩𑒲𑒬 𑒣𑒰𑒚𑒏।

𑒬𑒱𑒫 𑒣𑒳𑒩𑒰𑒝 𑒏 𑒏𑒟𑒰 𑒧 𑒬𑒱𑒫-𑒮𑒞𑒲 𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧, 𑒮𑒞𑒲 𑒏 𑒯𑒫𑒢 𑒏𑒳𑓀𑒛 𑒧𑒹𑓀 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒝 𑒞𑓂𑒨𑒰𑒑 𑒂 𑒑𑒾𑒩𑒲 𑒏 𑒬𑒱𑒫 𑒮 𑒣𑒳𑒢𑒩𑓂𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯। 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧 𑒏𑒟𑒰 𑒮 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒑𑒼𑒙𑒹 𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒦𑒰𑒫𑒱𑒞 𑒯𑒼𑒨 𑒪𑒰𑒑𑒪 । 𑒡𑒲𑒩𑒹 𑒡𑒲𑒩𑒹 𑒣𑓀𑒛𑒱𑒞 𑒖𑒲 𑒂 𑒑𑒾𑒩𑒲 𑒧 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧 𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒮𑓂𑒤𑒳𑒙𑒢 𑒯𑒼𑒨 𑒪𑒰𑒑𑒪। 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧 𑒏 𑒩𑓀𑒑 𑒧 𑒩𑓀𑒑𑒰𑒨 𑒪𑒰𑒑𑒪। 𑒁𑒢𑓂𑒨 𑒪𑒼𑒑 𑒁𑒯𑒴 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧 𑒮 𑒁𑓀𑒖𑒰𑒢 𑒩𑒯𑒨।

𑒂𑒥𑒱 𑒞 𑒑𑒾𑒩𑒲, 𑒣𑓀𑒛𑒱𑒞 𑒖𑒲 𑒏 𑒣𑒺𑒩𑒰𑓀 𑒠𑒥𑒰𑒥 𑒪𑒰𑒑𑒪। 𑒣𑒩𑒢𑓂𑒞𑒳 𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒥𑒺𑒠𑓂𑒨𑒢𑒰𑒟 𑒡𑒰𑒧 𑒠𑒩𑓂𑒬𑒢 𑒂 𑒖𑒪 𑒔𑒜𑓃𑒰𑒫 𑒏 𑒡𑓂𑒨𑒰𑒢 𑒩𑒯𑒨। 𑒣𑓀𑒛𑒱𑒞 𑒖𑒲 𑒂 𑒑𑒾𑒩𑒲 𑒮𑒰𑒏𑓀𑒅 𑒩𑒯𑒪𑒢। 𑒨𑒰𑒞𑓂𑒩𑒰 𑒮𑒧𑒰𑒣𑓂𑒞𑒱 𑒦𑒹𑒪। 𑒚𑒲𑒏 𑒧𑒰𑒒 𑒬𑓂𑒩𑒲𑒣𑓀𑒔𑒧𑒲 𑒏

बाबा वैद्यनाथ क दर्शन भेल आ पंडित जी आ गौरी लिंगाकार बाबा वैद्यनाथ पर जल चढ़ौलन। सभ लोग जल चढ़ौलन।

पंडित महादेव मिश्र अपन कुल पुरोहित पंडा क पहाँ डेरा डाल लेन आ गिरीश पाठक स कहलन-दु सप्ताह बाबा धाम मे रुकबा दु गो कमरा लेल गेल। भोजन बनाब क लेल अलग सँ एगो कमरा मे पंडित जी, गौरी आ गिरीश पाठक। बासन कुम मे बाँकी लोग। परंच गिरीश पाठक क ज्यादा समय भोजन आदि क व्यवस्था मे बीत। ज्यादा मन बासन कमरा मे रहथि। पंडित जी आ गौरी क एकरा लाट मिलैत रहय। दुनू गोटे क प्रेम परवान चढ़ैत रहय। एक मनहु स शिव आ गौरी क कथा दुहराब क विचार करए लगलन।

एकटा दिन पंडित महादेव मिश्र बजलन-गौरी। बाबा धाम म दुनू गोटे क बिआह क लेल क चाही। एहन पवित्र स्थान आ समय कहाँ पायब।

गौरी बाजल-हाँ। डामा जी। बात त पवित्र आ नेक हय। हमहूँ आबि अहाँ बिना न जीब सकैय छी। अहाँ स हमरा पवित्र प्रेम हो गेल हय।

पंडित महादेव मिश्र बजलन-विधाता क ऊहे मंजूर बुझाय हय। भगवान भोलनाथ क जीवन घटना सन हमरा संग घट रहल हय।

गौरी बाजल-विधाता ज करय छथिन,अच्छा करय छथिन। परंतु बाबू जी स पूछ लिय क चाही।

पंडित महादेव मिश्र बजलन -हम गिरीश बाबू स पूछ लेबैय। हमरा विश्वास हय जे ओ मान लेतन।

गौरी बाजल -जी। हमरा विश्वास हय जे बाबू जी मान लेथिन।

दोसर दिन रात म जब गिरीश बाबू सुत ला अइलन त पंडित जी बजलन -गिरीश बाबू। एगो महत्वपूर्ण बात कर क चाही छी।

गिरीश पाठक बजलन -उमा जी। बाजू।

पंडित जी -हम अंहा स गौरी क हाथ मांगै छी। हमरा विश्वास हय जे हमरा गौरी क हाथ देब।

गिरीश पाठक -अचानक ई मांग सुनक सन्न रह गेलन आ सोच लगलन।

गौरी बाजल -हां। बाबू जी। उमा जी ठीक मंगलैन हय। हमहूं उमा जी स प्रेम हो गेल हय। हमरा ओ साक्षात महादेव लगैत छथि। हम हुनकर गौरी। हमरा विश्वास हय जे अंहा उमा जी क मांग मान लेबैय।

गिरीश पाठक बजलन -ठीक हय। काल्हि रात म बतायब।

गिरीश बाबू मन म गुनधुन करय लगला। सांझ तक निष्कर्ष निकाल ला कि उमा पंडित महादेव मिश्र आ गौरी क विआह सर्वथा उचित होयत।

बाद म जब सुनि गिरीश बाबू अएलन त यतिन जी पुछलैन -गिरीश बाबू कि विचार कैलियन।

गिरीश बाबू बजलन -ई अहाँ आ गौरी क विचार हय सएह विचार हमरा हय। ई उचित आ मंगल विचार हय।

कालिय बाबा क मंदिर म शुभ पाणिग्रहण सम्पन्न कैल जाय।

आइ सबर धायरहन स पहिल गिरीश बाबू, गौरी क हाथ यतिन महादेव मिश्र क हाथ म सौंप देलन। बाबा रतननाथ क साक्षी मानैत यतिन महादेव मिश्र गौरी क मांग म सनूर दान देलन। निआह बाबा धाम क पंडा कैलैन। आइ गौरी महादेव क अर्धांगिनी बन गेल। सब खुश नहा। बाबा क जयकारा लागल।

एगो स्कार्पियो आ एगो मिनी बस राखल रहल। स्कार्पियो स दुल्हिन गौरी - दुल्हा महादेव आ बस स गिरीश बाबू आ अन्य लोग घर कैलाशपुर अइलन। यतिन महादेव मिश्र क माय दुल्हिन गौरी आ दुल्हा महादेव क आरती उतार लैन आ गृह प्रवेश कैलैन।

कुछ काल बाद गौरी एगो लतिका विश्वनाथ क जनम देलक। सगी क जनमल लतिका काशीनाथ कया गौरी खुब मानै। दुनु लतिका काशीनाथ आ विश्वनाथ जवान रहल। शादी निआह रहल। गौरी आ यतिन महादेव मिश्र आइ दादी-दादा बन गेलन। परंतु गौरी पाठक आ यतिन महादेव मिश्र क प्रेम आइयो दिगान म चर्चित हय।

२

प्रम म (धाखा

आ०्ृ प्रा श्याम मारुन क खुन वाकनै०्ृग यनान यखनु ३७ (गला। ना रुमन मुरुल्ला म मकान वना क नरुग नरुलना रुम अगीग म खा (गली। जव रुम खमका कालज म यढ़ैग नरुी। रुम साँ०्ृस क निद्यार्थी नरुी। ना समाजशास्त्र क प्रारुसन नरुलना ना रुंसमुख, मिलनसान आ लाकप्रिय नरुग। निद्यार्थी सरु रुनकन यढ़ा०्ृी (शैली स संतुष्ट आ खुश नरु। रुम रुनका कालज क कामन नुम म वैडमिंटन खलै०्ृग दखी। कहिया एकल ग कहिया डवल वैडमिंटन खलै०्ृग। लकिन रुनकन प्रतिस्पर्धी खिलाड़ी रुा०्ृग नरु ननुन कुमान ज खमक कालज क एगा प्रारुसन क वटा नरु। ननुन कुमान आ प्रारुसन श्याम मारुन क दास्ताना संवंध नरु। कानन कि एक तुनिया नरु।

जव मैच रुाय ग प्रा श्याम मारुन अयन सुन्नन यत्नी सानिया क मैच दखाव क लल अनश्य लाव। सानिया अयना संग अयन साल रुन क नुयनान वटा, एगा यानी क वाग्ल आ चाय स रुनल थनमस री लाव। मैच क दौनान जव प्रा सारुव क कं० सुख ग सानिया स लक यानी यियैथ आ थकान मरुसुस रुाय ग चाय यियैथ। लकिन ना ननुन क अनश्य यानी आ चाय यिआवथि।

मैच म प्रा सारुव आ ननुन क प्रतिस्पर्धा दखै०्ृग वना शानीनिक कसावट म ननुन प्रारुसन सारुव स वीस नरु। जकान रुायदा अंगग४ वनुन क मिल री जाय। प्रारुसन सारुव वनुन स मैच रुान जाय।

मानि कि पांच मैच होय त दु मैच आरुसन साहेब जीत त तीन मैच बनून जीत जाय। अहूँ मैच क असन त आरुसन साहेब आ बनून पन त न पना। लेकिन असन आरुसन साहेब क पत्नी सानिया पन अनेथ्य पठ। सानिया बनून क तनरु आकर्षित होय लागल। धीरे धीरे सानिया प्रा थ्याम मारुन स करे लागल।

जब प्रा थ्याम मारुन छूटी पन कालेज जाय त बनून आरुसन साहेब क आवास पन आ जाय। बनून आ सानिया थ्यान क वात करा। आ एक दिन थ्यान करैत करैत दुनू क देह एक हो गेल। मानि कि सानिया आ बनून में वासना क थ्यान नहि। हालांकि बनून क विआह भ गेल नहि।

आरुसन साहेब दुनू क नासलीला एक दिन देख ललन। आरुसन साहेब सानिया क खूब समझेलन। अंहा अहूँ सर कियेक करै छी। अंहा एगो बटा क माय री छी।

लेकिन सानिया कहे लक कि हम बनून स थ्यान करैछी। हम बनून क संगे नहेबा। आरुसन साहेब कहलन-हमना घन स निकल जाउ। लेकिन सानिया कहलक-अंही घन स निकल जाउ। ई मकान त हमन हअ। हमना नाम स जमीन आ घन हअ। अपना बटा क री ल जाउ।

आरुसन साहेब त सानिया स सच्चा प्रेम करैत नहि। आंखि स लोन चूअवैत बटा प्रियांशु क लेऽऽत घन स निकल गेलन। नौ आ शहन म अपना घन स दून राउत पन उना लक नहि लगनन। बाद म

यही मरुल्ला म जमीन खनीद क मकान वना ललन। वटा क री यढाव लगनन। अयन यत्नी क दल प्रम म धाखा आ यत्नी क प्रम क वियाग म शनाव आ सिगनट यिय लगला। वटा इंजिनियनिंग यढैत नहा। दुर्दिन शुरू भ गेल कि इंजीनियनिंग कॉलज स आवास अवैत काल वाढ़ मं उफनैत नदी म नावि उलैटि गेला स डूव क मन गेल। प्रारूसन सारूव प्रम मं धाखा आ ई आघात नहिं सहि सकिला। वा खाट यकडि ल ला। यडासी सब ताना स दखैलन। यन वा खून वाकनैत दुनिया स विदा भ गेलन। सानिया क अनुकंपा यन कालज म किनानी क नौकनी मिल गेल। साना बिनासत क मलकाइन वन गेल। अइला कि प्रा श्याम मारुन यत्नी क दल प्रम म धाखा क वादा अयन प्रम क कानण गलाक न दल नहथि। वनून आइ सानिया क छाउ क अयना यनिवान संग जीवन जी नहल रुथ। सानिया अकल जीवन विता नहल रुथ। अयना काठनी म प्रा श्याम मारुन क फाटा टंगलै रुथ। जे यन सूखल माला टांगल रुथ।

-आचार्य नामानंद मंडल सामाजिक चिंतक सीतामढ़ी, *सवानिवृत्त प्रधानाध्यापक, माता-चन्द्र दवी, पिता-स्व०नाजश्वन मंडल, पत्नी-प्रमिला दवी, जन्म तिथि-01 जनवनी 1960 याथता- एम-एससी (नसायन शास्त्र), एम ए (हिन्दी)। नुचि- साहित्यिक, मैथिली-हिन्दी कविता - कहानी लखन आ आलखा। प्रकाशित याथी - मैथिली कविता संग्रह रासा क न वांटिया। २०२२ प्रकाशित नचना - समिया कविता संग्रह याथी - जनक नंदिनी जानकी आ शौर्य गाना। २०२२ यत्रिका -मिथिला समाज, घन -वाहन आ अयूर्ना (मौसाम)। अखवान -दैनिक*

मैथिल पुनर्जागरण प्रकाश। सामाजिक-सामाजिक चिंतन, दायित्व- पूर्व जिला प्रतिनिधि, प्राथमिक शिक्षक संघ, रुन्ना, सीतामढ़ी। स्थायी पता- ग्राम-पिपरा विशनपुर थाना-परिहार जिला-सीतामढ़ी। वर्तमान पता- पिपरा सदन,मुरलियाचक वार्ड-04 सीतामढ़ी पोस्ट-चकमहिला जिला-सीतामढ़ी थाना-परिहार पिन-843302

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१०. डॉ. किशन कारीगर- मिथिला मैथिली क घून जंका खाखैन क खा गेल (हास्य कटाक्ष)



डॉ. किशन कारीगर

मिथिला मैथिली क घून जंका खाखैन क खा गेल (हास्य कटाक्ष)

बाबा बउबउआक्ष बजैत रहै जे क्ष सब घून जंका खा गेल सब किछ? क्षया ओकना सबहक घर नै एनलै? ओकन सब दुआन मिथिला क ओहन दुर्गति छै की. सबटा उलआ अयन कवलिीओ

चुन ये ज हमना सव सन काविल किया न? मगधिया सनकान मिथिला क वाधक छै? ओक्का टा मिथिला नला अयन दाख काहग किन्नौ? ओ्ली सव घुन ओंका सव किछ खा (गल?

हम वावा स यूछली ज कि हाले हो वावा, गाहन खटिया घुन खा (गलहा की? ओनी गान यागवा सव खटिया गानि दलको स ओग गनमाओल छहु? वावा वजलै हो कानीगन गहूं मीतिया नला सव की हमन मान अघान कनै म लागल छह? हम हून वजली हो वावा होलौ की स कहु न गव न हमना अनु वूसवे ग? गव वावा वालले धु जी यहिल गमाकुल खुआवह ग निवन स कहै छियअ.

हम वावा क खेनी वना क खुओली आ यूछली ज आव कहा न कथि घुन खाओ (गलै कान वनगांहो सव ठग काविल वन नहलौ? हून वावा वाललकै ज दखे नै छहक मिथिला मैथिली क घून ओंका खाखेन क खा (गल ओ्ली हाहकानी, यटयसूआ नगा, साहित्यिक दलाल सव. गओ्या यथार्थक मूँह मंयवह? हम वजली ज वावा यूना हैनआ क कहु न ज की हालै? वावा मँह विजकवैग वाललकै हो सवटा हमहीं कहियअ गूं सव मीतिया नला नै दखे छहक मिथिला मैथिली क दुर्दशा? हम कहलियै गांह कहा न हो वावा मिथिला मैथिली क हाल.

वावा वजलै दखे छहक मिथिला मैथिली म हाहकानी, यटयासूआ नगा, साहित्यिक दलाल सव अहूनजाग हs (गल. ओ्ली सव मिथिला मैथिली क घुन ओंका खा (गल? हाहकानी छौगा सव न किछ वूसगह

गमाह आ मुट्ठी झा झा कर फिराह जे सबटा मैथिलीए छथि त दरभंगा। से दरभंगा जनकपुर से गोड्डा तक सबटा मिथिल छथि आ राजधानी दरभंगे हवाक चाही? ई सरकारी सब भंगीयबहा सब बाकुड्डबेल टा करै जाइ? करब नै देखाह आ जाति देख लोकक आकलन कराह की? बहिना ई पटयासुआ रा सब मिथिला राज झा झा कैरो दलाली कर हिरा. आई बलिक एकरा सबक चिन्नी मिल चालू कराउल नै हलै आ मिथिला राजक नाम पर चंदाखोरी पाखण्डबाजी आ ठंगन मंगन पर भाषणबाजी टा कैरै जाइए?

हम बाबा के कहली जे बाबा मिथिला राज बनत त ताहि मंत्री संत्री बनाइ देत त नीक रहत न अपन भाषा मैथिली में राज काज हेतै? ई सुनि बाबा आरो खिसिया गेलौ. हमरा से बालकौ जे कानीगर ताहू साहित्यिक दलाल बला चलकयनी बगियाइ लगलह? हम बाबा से पूछली जे साहित्यिक दलाल कहल हाइ हई?

बाबा के हंसी छुटि गेलै बजलै अई जे कानीगर ताहि अई साहित्यिक दलाल सब दिया नै बूझल छह? जे ऐह मानकी दलाल सब त मैथिली भाषा के शुद्ध अशुद्ध, केन्द्रीय मैथिली राए बाली, दैठघाहा ऐठमाहा कासिकरहा मधेशी के रूद करए खंड बिखंड करलक? हम पूछली से की? बाबा बाललकै जे कानीगर ताना लिखब बाजब के ई सब माजरा न कराह? बहुजन वर्गक बाली के ई सब राए बाली कहराह. लिखबा काल सहा ताहन बालीक मौलिक स्वरूप के बदैल संस्कृताह मैथिली बना देह की? सबटा पूनुस्कार

आयाजन म अयन टा आ दु चानी टा मानलङ्ग यिछलगुआ क संग नखाह? ॐ साहित्यिक दलाल सव धुर्ाे क मैथिली राषा क नर्ग रदी वना घुन ऊंका खा (गलै. कहला यन ङ्का टा दलाल यथार्थ गय मानग किन्नौ उनट यथार्थक मूँह टा मांयग की?

हम वावा स यूछली ज ॐ कहा ग यथार्थ क टायी यहिना मूँह मांयि रगहा की? वावा वाललकै हं हो ॐ सव टायी येहनवै म यानंगग सव छै. अङ्का ॐ कहअ् ग वसहा वनद क गां की कहवहक? हम वाललियै ज हम ग (00ी म वनद कहवै न? वावा वजलै धू जी मैथिली मानक नला सव ग वसहा वनद क काम(धनु गाअ वना रगै आ कहगै दूनू रखै म उजन ह०० ग मनमाना ज मान हअग स कहवै. यथार्थ रखौला गकैला यन ज वसहा वनद की काम(धनु गाअ की नहै गकन यथार्थ लाकक सामहा अवाक चाही ग उनट ॐ साहित्यिक दलाल सव हमन गाना जागिनादी आ मंचलारी कैह यथार्थक मूँह मंयवाक हिनाक म नहगह की? ज रखान विद्वान न र जाअ? जाव गक हाहकानी, यटयासूआ आ साहित्यिक दलाल सवहक रखान विद्वान न हगै गाव गक ॐ सव मिथिला मैथिली क घुन ज०ंका खाखनि क खा०ग नहग की?

अयन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com यन यठाउ।

२.११.लाल देव कामत- तीन टा पोथीक समीक्षा



लाल देव कामत

तीन टा पोथीक समीक्षा

१

प्रक्रियाधीन सामाजिक परिवर्तनक स्वर

मैथिली साहित्यमे राजनीति शास्त्रीय आ मनोवैज्ञानिक साहित्य क' रचना कम देखल जाइत अछि। आइक परिवेश मेँ एकठाहा

नवकविता ना कहि सकैत छी अकविता लिखबाक बाढ़ि आयल छैक। पद्यक बनिस्पत गद्य लेखन काज कम भ' रहलैक हुन्। एहि व्यवसायिक ढ़िठियावैत आत्मकथा, निबंध, यात्रा प्रसंग, कथा संग्रह आ एकर संस्मरण दिश उन्मुख रहैत श्री **रविन्द्र नारायण मिश्र** जी एगारह गोट उपन्यास धरि प्रकाशित कए चुकल छथि। हालहिमे हुनक "**बदलि रहल अछि सब किछु**" मैथिली उपन्यास पढ़लौंह। जकर ओ स्वयं लेखक आ प्रकाशक छथि। एहि पोथी मेँ १३२ टा पन्ना अछि। नीमन कागतमे छपल पोथीक सरकारी आईएसबीएन प्राप्त भेल छैक आ २५० टाका दामधरि निर्धारण कएल छथि। १४ अप्रैल २०२२ कँ ग्रेटर नोएडा (उ०प्र०) दिल्ली एनसीआर प्रेस सँ छपल एहि पोथीक ओ अपन पितामह स्व० श्रीशरण मिश्र जीक स्मृतिमे समर्पण कएल छथि। पोथीक मादे पाठक कँ अपन रचना सबहक विषयमे सहज करैत छथिन जे "ई- पत्रिका विदेह" मेँ नियमित अबैत रहलाह हुन्। धरि आनन्द रंगील गप्पक विषयमे पृथक सँ जनतब देलनि,जे पोथी काशी दिससँ दिल्ली पर उतरल गेल चित्र थिकैनि। हिनकर पूर्व प्रकाशित उपन्यास निम्न यथा-: नमस्तस्यै,महराज,लजकोटर,सीमाक ओरियान , मातृभूमि ,स्वप्नलोक, शंखनाद, ढहैत देवाल,हम आबि रहल छी,प्रलयक प्रात,बीति गेल समय, प्रतिबिम्ब आओर सद्य:प्रकाशित नव उपन्यास ' बदलि रहल अछि सब किछु ' छन्हि। हिन्दी आ अंग्रेजी मेँ सेहो पुस्तकक रचना कएल छन्हि, जे ईन्टरनेट पर उपलब्ध छैक। एहिमे पाठककँ राजनीति दलक नेताक आन्तरिक चरित्र आ व्यवहारिक चरित्रमे जे अन्तर छैक तकर ठेह लगैत पा। कुल ३४ टा पाठक एकसूत्रमे गहींर अभिरुचि कऽ संग पढ़ल जा सकैत छै। ओना मैथिलीमे

या0कक आव अकाल अछि। गँ यत्र_ यत्रिकाक संगहि स्नीय याथीक किननिहान लाक आ संस्था कमशम दखाऽ्र छथि। वहु्ा यनियन्न या0क याथी समीक्षा यढि - गमि नन याथी किनेम प्रकाशन आ दाकानधनि यहुँवो छथि। ओखन नाजनीति ज विहानक वलो आछि स यूर्णा: नाजनिनिह क' आगु- याछ्र घूमो अछि। गे मँ समाजक लाकक समय आ यनिश्रम सहा जाऽ्रा छैन्। संाखक लल रुटो छहि संननजक सँ प्रयज ना यनाज नुयँ संनजथ। नहयमय स्थिनिक नाज वनाकय उययाग कनो ज नायक कार्यकर्ता जा ल(0ेा - समांग वनाकय यासन नहो ; अयना याँछा टिकोन नहो छथि, सयह येघो वनल दखाऽ्रीछ। मूदा जहिना उदय रुलासन्धा सुनुजा कमान हाऽ्रीछ,नहिना स्थायिा नाजी कँ समयक सँग यनिस्थिनि रागय यजा छैक। प्रस्तुा उयन्यासक कथ्य, राल-रंगिमा क' नाय शिर्षस्थ उत्कर्ष धनि यहुँचल छैक। आखिन समकालीन उयन्यासकान हाकन मा ज "ककना ल अनजव ह !" मँ जत्रीय निम्ना _यंचकाशी,दजिधाहा आ रुयोसक प्रयाग कयन छथि,जाहि0ाम ननिछ्र नानायथ मिश्र रुनीछ स्थान शक्तियुनम आ निजययुनम सन रानाम प्रचलिा दजिध ऽ्रीलाकाक नाम मूह्र्य कयलनि अछि। दहाजी मयन्‌अन-वयन्‌अन अवाध वालिका'क रुनथ- याषथ जाकन मामाजी अयना गामम कनो वी ओ धनि यढवो छैक। ओक प्रनायी नाजी कँ जा वालिका कन मामुजी जाहि0ामक अवनजाा नहो छैक। स हुनक गहिंकी नजेन अनथ्य यजल छलैक,गँ सुसान दो छैक ज ओकना नियाहक चिन्धा ओखन नँय कनी। हमना जना यन शहनम लन अवियोक। जाय नीक जकाँ जनियाजन क' संगहि नाकनी धना दवेनि। जाहि सँ कथा-संवंध येघ घन-वजम आसान सँ र' जायत।

मूदा हुनका हृदयमे किछु दाहक राग उमरैत रहैक। आन किछु लोकसभ संदीपजी सन्हा उमरा गेलाह राणाजीक संग। उपन्यास'क पाठक पढ़ैकाल आसन्न मे वास्तविक जीवनिक अनुभव करैत संस्मरण: स्व0 रेलमंत्री ललीत नारायण मिश्र जीक बम हत्याकांड आ स्व0 प्रधानमंत्री राजीव गांधी जीक मृत्यु बमविस्फोट कांड , मंच पटलक दृश्य सँ हत्याकाण्ड र' उठैत छथि। उना आगू ज दृश्यांत हटैछ राणाजीक पत्नि महिमाक ' राज्यप्रमुख बनैत घरी स्वत: वास्तविक जीवनमे विहार'क एक मुख्यमंत्री जीक धर्मपत्नि मान पड़ैत। ज हो पलंच दीर्घ कथा क' विस्तार पबैत ई सामाजिक उपन्यास एक राजनीतिक षडयन्त्र क ' रहस्य बता जेमकँ देखबैमे समर्थ हल छैई।

नवतुनिया लोकनीक राजनीतिक दल गठन होइछ-जनक्रांति दल। एहि दलक हम 'शब्द' सँ तात्पर्य अछि- लेखक स्वंय , ज कदाचित लेखकक हृदयमे बसैत अछि। शक्तिनाथ आ संदीप कँ संग पूरैत नारी निकेतन सँ लागि बनायल शिक्षा प्रमुख पात्र रहैत छथीन। उम्हर समग्र विकास दलक राज्यप्रमुख राणाजीक सब तनहुँ चलती रहैत छैन। एक तनहुँ अन्तनराष्ट्रीय तस्करी गिरोह 'क पराउ समर्थन रहैत छैन। नारी निकेतनक अपना ईच्छा सँ अनैतिक प्रयोग करैत छथि। पाँचटा मुशदण्ड निजी लठैत सदा हुनकम अपन छाह जकाँ काज आबै छैन। सनिया गाममे शीखा नहिँ हटैत छैक मुसकदण्ड सबका। विकट स्थिति भलैत उहन आजीवन कारावास लागय छथि,तँ पत्नीक सहारे पार्टीक तागैत अपन लग राखै छथि। उहि अपनाधी मुशदण्डक देखलंदाजी सँ ग्रस्त होइत,हृदय पनिवर्तन होय छैन महिमा जीक। आ उा संदीप सँ ज पहिल पूर्व पनिचित कार्यकर्ता

नेताजीक रहनि, ओसकर रंग करय आबि जाइत छथिन। ताहि सँ पूर्वधनि अपना पद सँ त्याग -पत्र देबाक जवाब मीडिया कँ सेहो द' देने नहि छथीह। आब विपक्षीक नेता शिखाजीक नेतृत्वकला सँ लोक बढैत छथि जे विजियासन मनावैत पाछु हाइछि। पाँचटा सीट मात्र निर्दलीय उम्मीदवार जीतै छैक,सेहो वयस जे हिनका अपनहि पार्टीक असंतुष्ट टिकट वंचित क्रान्तिकारी छथि। राज शासनक सब प्रत्याशी हारि गेलै,कारण दू गुट बनल छलैक आ मतदाता'क बीच सेहो छवि धूमिल भेल रहैक। श्वेत रक्षपानी आब गुलाबि परिधान मेँ प्रतिनिधि सभाक बैसारम आबि अपना जगह पर स्वयं नँय बनि श्री शक्तिनाथ कँ फूलमाला लाधेत राष्ट्र प्रमुख मनोनीत करैत सभा सांपलीह। ओहि स्वच्छावादिता ल समर्थक जनता लोकनि जिन्दाबाद नाराक जयघोष करैत रहल। चूनावी राजनीति समयमे महिमाजीक पार्टीक किछु असंतुष्ट नेता आ कार्यकर्ता जे अलग गुट बनाकय पार्टीक प्रतिष्ठा मलीन करैत देशा बैसा दलकैक, ताहि गुटक नामधारी लेखक महोदय नै क' सकलाह। आउर नेताजीक शुरु संस्था सेहो किछु राइख सकै छलाह। श्री मिश्र जीक उपन्यास लेखन शैलीक हम कायल छी,किछु उदाहरण पाँति द्रष्टव्य अछि-:

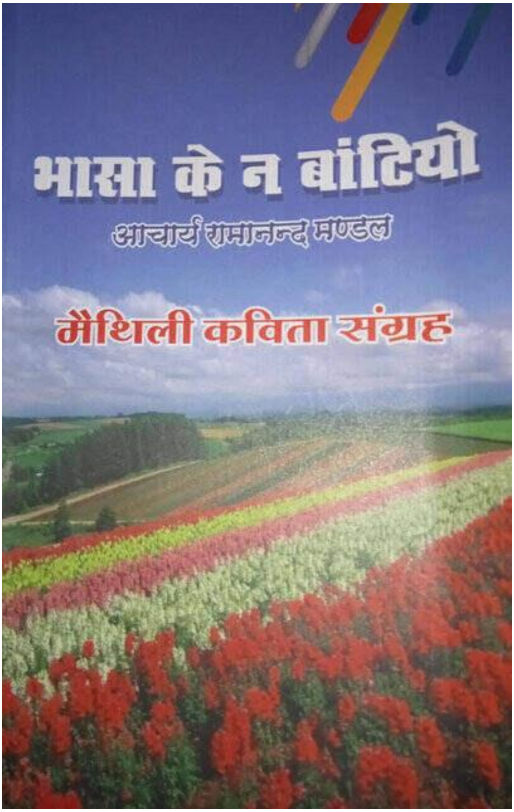
सरकारी घोषणा सँ जनता बहुत खुश रहय। मास-मास पानि बिजलीक बिल नहिं देबय पड़ैक। मासमे दू बेर किलोक किलो मंगनीमे राशन भेटि जाइक। सभ अपन-अपन दरबाजा पर तास खेलाउ,भोजन करउ आ सांझ पड़ताहि सूति रहउ। पृष्ठ-११० सँ उद्धृत।

उपन्यासमे दू दलक उपनबल , पुलिसिया कार्रवाई , हवाई जहाज यात्रा , अस्पतालक दृश्य, सीबीआइक जांच , माननीय उच्च अदालत कर निष्कर्ष राखक लागत। आब २० साल सँ बसिय राष्ट्र

करैत समै खसि गेलैक। समाजक अनुकूल वातावरणमे सृजन रहलैक, जाहि सँ बालिका सब डाक्टर, इँजिनियर बनि रहलैक। सर्व जातीय एकता बढ़ल आ सामूहिक रहन- उत्सवमे समरसता देखल जाइक। खानपियन सबजाना हुअ लगलै आ शिक्षाक प्रयोग सँ हुनक स्वप्न साकार होइत गेलैक। एहि तरहेँ सामाजिक परिवर्तन सतत् सकारात्मक दिशमे बढैत रहल बुझाय। सामाजिक सम्भावना सदा जखन-जखन करैत कहथि तँ आखिरमे एक विशेष शब्द -चरैवेति - चरैवेति अवश्ये शिक्षाजी कहथि।

२

मिथिलामे मांगैन खराब छइ!



जगत जननी माय मिथिला उर्फ जानकी'क पर्यायवाची नाम ए जिला अछि , अति प्रधानता सँ ए सीतामढ़ी सँ चर्चित नाम उभरैत आयल अछि **आचार्य रामानंद मंडलक** । मैथिली भाषा'क कवि श्री मंडल जीक हालहिम एक नव पोथी कँ मिथिला समाज ट्रस्ट - दिल्ली, प्रकाशित कएलक अछि। एहि कविता संग्रह "**भासा के न बाँटियौ**" ९९ पृष्ठक पोथी कँ अध्ययनार्थ पढ़ल। मनलग्गू विषय सब पाठक कँ सद्यप्रकाशित ओ ८१ गोट नव काव्यम सब रसक रसास्वादन करबैत, अपन तरहक अनूठा सन्देश प्रदान करैछ। सीमावर्ती उत्तरक

नरुनासिक मैथिली राषा मँ नयालक नञािका टान दखा़ीछ। यथा - मिथिला म की छ़ ? मिथिला म सीता छ़! सीता'क जनम अस्थान छ़! मिथिला म नदी आ पाखन ओ़! यान माछ आ मखान छ़ ! मिथिला म दनरंगा नाज छ़ ! लाल - लाल मकान छ़! मिथिला म नाजकनि निद्यायति छ़! मिथिला म मांगेन खनाश छ़ ! यवगछिया घनाना क नाग छ़! मिथिला म रानगी आ मंतन छ़! सूझा यठ़ा यूनान छ़! मिथिला म अयाची छ़! यनसोत कलियानी माय महान छ़! नवना म मारि क सौंव छ़ ! मिथिला म शहीद नामरुल मंतल छ़! दस लल सहादन महान छ़ ! मिथिला म याग छ़ ! यगठी छ़! मिथिला क शान छ़! नामा मिथिला महान छ़ !!

ओहि निशिष्ठ शैलीक राषाक उयराषा ,वाली - वाणीक मानक कन रुनम किछ लाक आनंद सँ नहैत अयलाह रुना। यनंव ताहि सँ मातृराषा अनुनागी समक्ष लाक वीच सार्वजनिकता मँ संकीर्णता रुटैक काज मानल जा़छ। उना राषाक मानकीकनण कनय वाला किया क हाय छथि? जहन मायक मूखानविह सँ निकलल वाणीकँ नाह्निटा सँ वच्चा सूनैत - सिखैत आगू वढैत अयना यनिवश मँ अयन गाय सँ अगिला मँग यन नहल लाक कँ तथ्य वूझैना़ी म सहल हा़त छैक। तखन ़ी तिाश्चा Oाढ कनवाक कान काज? ग्रियर्सन सर्वम मानलनि ज मैथिली राषा अतिाम वाहनक नहिं नहनि। हुनक राषा संस्कृत आ लाकवाणी वादम अनहट नहनि,जाहिम निद्यायति जीक नचना प्रमाणित नूयँ छह्नि। मिथिला क' साह्नकन समाजक ज राषा वाली नहय सयह मैथिली थीक। ओहिक नाह्ना नाति माद्यता दैत शासकीय स्मन यन महत्व वढल नहैक। सर्व मं ़हा रुटलनि

मिथिला'क नारी हिन्दू समाज बीच चौदह दलान युगल जाइक। कानू - कानू व्यक्ति जाति आ नर्गम एकहुटा दली दलना आ ओष्ठ गुनुकँ नुयम एगलान् एगली अनाथ दल नहेत आयल छैक। घनक अर्थात् गरुलनम एकटा दलान नुयम ' साहेब खवास ' क ' युजा एान सहो हाइत नहल छैक। एक गोसाईं घनक एगत मूहँ एान खलैत,नाक् देत सुनल अछि - "हा सलक! गाँ सब खवास शद्रक येघोत खुब मानैत अयलह। ज यहिल समयम खवास नहि सम्भावन कनय गँ मानि खाए छलै आ आब जौं उहि वंशजक किया लाकनिक खवाश कहबहक गँ मानि उकना हाथे खवटा कनवह। आजादीक नाद जमाना उनैट गेलैक। उना समाजम ज दियादि येघ संख्याँम नहेत अछि ,स अत्य दियादि वालाक हुटवैत माजन नहिँ देत, उयजा कनय सँ नाज नै अवैछ। एानीय संविधान क' नाष्ट्रीय स्वीकृत लक्ष्य य - समानता। मुदा असमानता एनल छैक। सामाजिक न्यायक जगह सामाजिक अन्याय मवल छैक। गँ कविवन महादय अयन याँति सँ मुखन ए' कविताधाना क' अजस्र स्रात वहन छथि।
यथा :-

संस्कृत म लिखाइत अ शपथ ननाम्नन।
हिन्दी म लिखाइत अ चतुनी चमान ।।
मैथिली म लिखाइत अ सतिया धनुकाइन।
लिखवाला छइथ नर्वसम्नादी नवनाकानगन।।
वर्वसम्नादी क सनमान दलित क अयमान।
सए ग्रन्थन म हय नर्वसम्नादी क गुनगान।।
दलित उयजित क हय कइलन अयमान।
दलित उयजित कन जाति क कनइत प्रहगान।।

तँ वा दलित उपेक्षित क करैत छैथ गुणगान!
आइयो समाज म पूजल जाइ निरक्षकगन!! कवि जीक तात्पर्य छन्हि उनका तिथि मेँ लोक खास बनय चाहैत छैक। खास शब्दक पर्यायवाची तुयम खवास निहितार्थ याँत उ तनहुँ क्र०-६९ शिर्षक या० "खवास" मेँ गवैत छथि। यथा -: खवास छी, राजाक खवास छी।

राजा छी, राजाक खवास छी।
साधू - संत छी , ईश्वरक खवास छी।
हनूमान छी, रामक खवास छी।
संत तुलसी छी , रामक खवास छी।
उगना महादेव छी , विद्यापति क' खवास छी।
सामाजिक व्यवस्था म , राजनीतिक प्रक्रिया म ,आइयोधरि बहुसंख्यक आबादी वाला मिथिला क' लोकक हर क्षन यन उपेक्षा आ दोहन-शोषण होइत रहलैक। सत्ता सामायटी क' रीढक हिस्सा बनैत बैकवार्ड क' बीच मंचक शोभा बढवैत हाकमन्डे कँ सचेत करैत अपना कविता म कवि विद्यान कय उठवैत छथि। याँत द्रष्टव्य अछि-
:
अहाँ क सूतली,हम्मन सूतूं ।
अहाँ क मानली, हम्मन मानूं।
अहाँ क जानली, हम्मन जानू ।
अहाँ क पढली, हम्मन पढू।
अहाँ क पूजली, हम्मन पूजू।
अहाँ क गइली, हम्मन गाउ।

३

शेष युद्ध " जीवटपन" कें नाम थीक।



मैथिली साहित्यकार प्रो० (डॉ०) राजाराम प्रसाद जीक सद्यप्रकाशित लघु उपन्यास "शेष युद्ध" एक निकट समयमे लिखल गेल ऐतिहासिक कृति थीक। मैथिली विषय सँ एम०ए० पी एच डी श्री राजारामजी पूर्व प्रति कुलपति,पटना विश्वविद्यालय मेँ रहि चुकल छथि। आ एम एल टी कालेज सहरसा कें पूर्वमे प्राचार्य रहि चुकल छथि। शेष युद्ध मैथिली पोथीक किमत १५० टाका, पृष्ठ संख्या ११२ पहिल संस्करण २०२० ई० ; सनसनी प्रेस पटना सँ मुद्रित आ कपिलपुर लहेरियासराय (दरभंगा) कें अभिषेक प्रकाशन सँ बहराएल छहि। एक बदनाम शब्द 'कामाना' संदर्भमे हिनक ई पोथी

लिखल गेल अछि। एहि सँ पूर्व श्री प्रसाद जीक अन्य मौलिक नचनावलीम कथा यनिधि-१९९१, मघ लागल आकाश २०११ छयि चुकल नहनि। मैथिली लाक नाट्य- (आलाचना २०१०) आ साहित्य सनानुह -२०१२ प्रबंध निबंध निधाक अगिनिक्त मैथिली लाक साहित्य क' विस्तृग इगिहास - २०१९ प्रकाशिग भेल छन्हि। यवमनियाँ समाजिक यहचानकन वीच चाटीक' नचनाकान श्री० नाजानाम वाबू अध्ययन- चिन्तनम लागल नहैग छथि। आ लखन सृजनक काज क्रमिक नूप सँ कनैग नहैग छथि। हिनक सहभागिगा नाष्ट्रीय - अन्तर्नाष्ट्रीय संगाष्ठी क' व्याख्यान आउन साहित्यिक विधा यन भेल अधिवशनम मिशान भेय मुखन नहैग छथि। यहिल कहलहुँ,एक वदनाम शब्द "कानीग-१९" यन हिनक कलम ज चललनि स एक लघु उपन्यास नूपँ सामा आयल अछि। या०क दु साल पूर्वहिक समय कँ धियानम आनि अकानथि गँ एहि शब्दक अनुगूँज सँ कान धनि वहिनसन ए' जाइछ। कानाना नाइनस सन वैश्विक महामानी आइ जाहि नूपँ संसान भनिम यसनल आ गकन समाधान ल वैज्ञानिक लाकनि टीका अविष्कान कय समान्य लाकक सुनक्षा क' उपाय स्थाइ गौगयन सामा आनि हलकैन ; जँ सँ आब चैनक शांस भेट नहल छैक।

चीनक वुहान शहन सँ प्रथमगया इ छुआछूग नाग निकलल ,ज प्रायः सब महादशम गुनीग गगिय नाप्ू ब्लाना यसनल। एहि नाग कन लडअ हेगु गत्काल नबाउक गनीका अयनायल गेल। किछु ठि०गन लाक नियम यालनम सर्वथा शिथिलगा वनगैक सँ इगन अकउयन हखावै ज अथाह चिंगाक विषय नहैक। गैया सब समुदाय आ वर्गक नागगक अयना -अयना प्रगान सँ समाजम जागनुकगा

बढ़ौलनि। भारतवर्षक यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र भाइ मोदी जी सब तरहक हथकंडा अपनाबैत जन जागरण करैत रहलाह। एहि महत्वपूर्ण काजमे हुनकर बात मानि जे कर्मी स्वार्थ छोड़लाह से अदम्य साहसक' काज कयलन्हि। सरकारी कर्मीमे डाक्टर - नर्स आ सहयोग करैत स्वास्थ्य पौनियन गजबक साहस आ जीवटपन देखलनि। ताहि कार्य बादक ओहि कठिन परिस्थितिक आकलन करैत एक नीमन पोथी क' लेखन काज अलबत्त अविस्मरणीय रहलैक। पोथीक पाठकगणक संग पढ़ल जाए ताहि लेल उपन्यास मेँ प्रचलित लोकोक्ति आ अमर वाणी एहि ठाँ जगह - जगह देल गेल छैक। यथा - नाशे काल विनाशे बुद्धि, मानि कम बयनाहनि बेसी, एसगर बृहस्पतियो मूढ़, उनटा चोर कोतवालक डाँटय, बन - बन घाटी हासिल जाउ - नदी घाटी करय काक यानि, सादा जीवन उच्च विचार, बहुजन हिताय बहुजन सुखाय, बसुधैव कुटुंबकम् ।

गोस्वामी जीक संदेश -:

ईश्वर अंश जीव अविनाशी।

चेतन अमल सहज सुख राशी।।

कवितावलीमे उपन्यासकार महोदय गबैत छथि-

माइ हे! कोरोनाक कहर कहलो न जाय.............

दोहा -: कोरोना काल नहिं महाकाल थिक।

लोकक जीवनक लेल महाजंजाल थिक।।

जगत धरतीक विनाशक बबाल थिक।

विश्व मानवता 'क अभिशाप थिक।।

कोरोनाक महामारी कर बचाव मेँ लागल महापराक्रमी कर्मीक याद दियाबैत अपनाक महायात्रा सिद्ध करय ल हुनका महाकवि विद्यापतीक

याँहि सहो मनक कनौ दुःख आ असफलता स्थिति सँ उबारय होऽक मनावल प्रधानता देखलनि अछि-:

" दऽऽ दऽऽ श्रां कना है , दऽऽ दऽऽ मीनिहानि।
जाये सुख चाहना लियाँ ,ताकाँ दुखहि न हनी!!"

याथीक एगानहो या0 धनि या0कक ऊ विषय मँ एक -एक यल काना मानव मात्रक हित नहलैक आ आगुक समय काना खयल जाए, स विन्हित नहौ अयन लखन कार्यम युनान श्लोक संस्कृत मँ सहो 0ाम - 0ाम प्रयाग कयन छथि। जनाकि-:

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानम धर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।

एहि तरहँ देखल जा सकैछ -:

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे - युगे।।

गीता - रामायण, महाभारत मँ वर्णित कथा तथ्यक एहिम समटल छथि । जाहि सँ उपन्यास पढ़ैत काल आस्था प्रगाढ़ भ' उठैछ ।

यथा -:

कर्मप्रधान विश्वकरि राखा
जो जस करहि सो तस फल चाखा
जस करनी तस भोगहु ताता नरक जातपुनि क्यों पछताता

सर्वेभवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया: /
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःख भागभवेत् //

छौहाँ न लागए नाउन माया
अछि वृथा न जाए देव - ऋषि वाणी

आब संस्कृत भाषा सँ समाप्त या0क दून होऽत जाऽछ,स एहि

उपन्यास 'शेष युद्ध ' कें पढ़ैत घनि सहज अभ्यास क' सकैत अछि
-: कर्मणा मनसा वाचा सर्वावस्थासु सर्वदा ।
सर्वत्र मैथुन त्यागो ब्रह्मचर्य प्रचक्षते ।।
दासन दखु -: दम्भो दर्पोऽभिमानश्च क्रोध: पारुष्यमेव च ।
अज्ञानं चाभिजातस्य पार्थ सम्पदमासुरीम् ।।
असत्यमप्रतिष्ठं ते जगदाहुरनीश्वरम् ।
अपरस्परसम्भूतं किमन्यत्कामहैतुकम ।।
एतां दृष्टिमवष्टभ्य नष्टात्मानोऽल्पबुद्धय: ।
प्रभवन्त्युग्रकर्माण: क्षयाय जगतोऽहिता: ।।
भूमिरापोऽनलो वायु: खं मनो बुद्धि रेव च ।
अहंकार इतीयं मे भिन्ना प्रकृतिरष्टधा ।।
एहि तरहें देखल जा सकैछ जे दुर्गासप्तशती सँ सेहो पाँति मान पाओलनि अछि -:
जयन्ति मंगला काली भद्रकाली कपालिनी।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते।।
उपन्यासकार जीक'क पहिल जे विश्वास छल उठलहि अछि, तें भाषल तेँ नहिय छथि,पर्नच गाँथल वा गुथल प्रचलित देशी शब्द कत जगह पर पिनायल नष्टप्राय शब्दक प्रयोग कयने छथि। अपन कविता भावें जे तरहें नाजानाम प्रसाद जी पाँति नैवक मैला आँचलक अमर कथा शिल्पी हरीश्वननाथ रेणु जीक शैलीकँ जीवन्त रखलनि हन्।
कातिना जायत अपन कलिकपून गाम ।
सानती आँगन वस्त मनानम नाम ।।
नव घान नव - विहान सँ दनकी सायत प्रयाण ।
जन - जन कतत नाष्ट्र गुणगान ।

सर्वधर्म समन्वय सँ सत्क होयत उत्थान।
हुनकी जन - लोकमे नव अरियानक होयत मान ।।

आ कतेको महायोद्धा लोकनिक समर्पित करैत अपन उपन्यास मे सेहो कनि हृदय हुनक जागि गेल छथि। आब मूलतः चर्चा करै सँ पूर्व जखन सुख शांति प्राप्ति पर आ मगन भ' गाबि रहलाह ,से पाँति हुनसँ0 मोन पड़ैत अछि -:

अयं निजं परावेति गणना लघु चेतसाम्।
उदार - चरितानां तु वसुधैव कुटुंबकम्।।

एहन काल समय संकट उपस्थित होइछ त सनातनधर्मी लोक थपरी पारनाइ,शंख फूकनाइ आ थारी बजेनाइ आदि काज करैछ। से दिनांक २२-३-२०२० कँ ७ भोर धरि रातिदिन सांझकेँ ७ बजे जनता कर्फ्यू केर आगाज भेल। प्रधानमंत्री नरेन्द्र दामोदरदास मोदी जीक रेडियो पर "मन की बात" कार्यक्रममे जनाव सेहो देल गेलैक। तकरा बादमे प्रथम चरण कँ २४ मार्च सँ २१दिन ले ९ मीनट तक दीप लेसकाय मध्य रात्रि २९ मार्च ९ बजे रात्रि सँ शुरू भेलैक। फेर द्वितीय चरणक ३ मई सँ २० मई धरि आ पुनः घोषणा। १४ -४-२० कँ माननीय मोदीजी जयनाद कयलन्हि। रोग बढैत गेल,मर्ज बढैत गेल। शासन बन हुनां लोकडाउन कँ बढाओल गेल , जे ४ मई सँ ११ मई २०२० ई0 तक दु सप्ताह लेल आदेश जारी भेलैक। १८-५-२० सँ ३१-५-२०२० तक १४ दिनक लेल प्रशासनी लोकडाउन रहल। जाधरि दवाइ नञ पावत् धरि ढिलाय नहिँ ! सेन नाना गामगाम शहर-बजारधरि जानसान सँ चलल। चारीमे १ ८- ७ सँ ३१ तारीख धरि दु सप्ताह लेल बढाओल गेलैक। चारीमे १ सितम्बर २० कँ निर्देश जारी भेलैक जाहिमे देशक

विभिन्न नाटकमे आधुनिक विशेष सुविधाक संग जानी रहलैक। अनलाक ८ जून २० सँ चालू रहल, २१ जून कँ होयवाला छल। अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस कोरोना कँ बेल बढि गेल। १५ जुलाई सँ ३१ मार्च तक लोकडाउन रहल। ई तिथि ऐतिहासिक महत्व क छैक जे कोरोना विषय पर शोध करनिहार शोधकर्तागण कँ एहि उपन्यास सँ बहुत किछु ज्ञान रहतनि।

कहल गेल छैक ' सेवा ही परमो धर्म:' स " वयं सेवा मह" रहना करै मिशन थीक - सेवा करब, सहायकारी होयब। हनक गामक स्कूल, सार्वजनिक मकान मेँ गामक लोक जे प्रवासी शहर सँ कोरोना कालीन समयमे अपन गाम आयल ओँ खाइक ,चाह जलखै, साबुन सेनिटाइजर आ लुंगी- गमछा धनि मुखिया- वार्ड सदस्य कँ आपूर्ति करबाक आदेश बीडीओ सँ रहलैक। मुदा काजमे अनियमितता करय वाला सब नहाल रहल। जिला प्रशासन अनुमंडल कँ , डाकुक अधिकारी अंचलमे अपन जिम्मा छोड़लनि। एहि उपन्यास पढैत काल बुझा पड़ सब पाठक कँ समझ आओत। कोरोना वारियर्स मास्कक आदेश धनि सबक लगाक छोड़लक। नव विलास नायकँ सेहो अपन मैथिली कथामे बिनु मास्कक प्रहरी चकपाहु लग गेनाप पुलिसकर्मिगणक मोटरसाइकिल सेवान सँ मास्क नहिं लगेवाक कारणेँ दण्ड डासुलैत रखल नहिं गेलैक। गाम आयल आगंतुक अतिथि कँ लोक वहाव करबाय छोड़ि देल रहय। आवश्यक काज सँ अन्य समयमे हाट बजारक काज निपटाबैक। बाल्मीकि नव जान पहचान छोड़ि, विद्वान लोक सँ सेहो लसधैन करै आशंकामे लोक सचेत रहथि। एहनामे नाश्ता सरकार द्वारा सख्त घोषणा रहल रहैक - मृतकक दाह संस्कार मेँ मात्र १० लोक ,आ वैवाहिक

कार्यक्रम मेँ दुनू यऊ सँ २० (गाट नन-नधू सहित राग लिअ। हमना कवाट य ज रागीजाक आदर्श नियाहम हीग अयिजग कँ वनागि सियोल नहिं ल ' जा सकलौंह। जौं कदाचित किया मावाऽ्ल सँ रहाटा खिचकय जिला प्रशासनम निर्तिया नाऽ्नल कर्गेग गेँ , समधीन जीक यनशानी वढि जयगैन। खायन अ0वरना ल' कँ गँ जनऊ उयनाऽ्नम यानघाट नीका समयम लागिय जाऽ्छि। कानाना महामानी एक गनह सँ जीननक हन मा७ यन किछु न किछ समय अनुनुय सहजीनन सीखलक। लाकम स्फुर्गि स्नग: वढलैक। मानव जाक राग कानाना समयम रागलक स अयन अनूरन सँ नाजानाम प्रसाद जी सन अनकां लखक ले व्रालंग मृत्यु यन सव निधाम खूव नवना कयल। यनंच छयाऽ्ी कन समया वहुग नाश नहैक। एहनाम 'यनिवय प्रकाश' कन लखन काज स्वयं दीनानाथ प्रसाद " ज्ञवनाज" अयन कविगा क' टीका कयलन्हि, स (श्लोक प्रकाशन दनिरंगा सव गनहक धनि याय७ वलनाऽ्ी सीखा छा७लैक छयाऽ्ी काल। दासन कानू नवनाकान धनि एगक लगनयन सँ काना समयक एहन उदाहनण अगिम नँय य, जहन कानाना समय वृहद नूयँ धनि साहित्य सृजन रल य। ऽ्ी याजटीन वाग रल यनंच याजटीन हाय सँ सवक वँचय यऊेक। ऽ्यह विनाश लीला कन वीच अदम्य साहसक यनिवय दलनि महायाखा लाकनि। हुनक संघर्षक दस्मान थीक ऽ्ी याथी। एहि कृगिकँ जहन -जहन यढल जाएग , ग्राम-ग्राम यूलकित हाऽ्ग नहग स आश जगैग अछि। दश - विदश, दासन नाग्य नगन सँ प्रवासी (धैर्यक सँग अयन गृह यहुँच कय आगिनाद गावथि -:

जननी जन्म हुमिश्च स्वर्गादयि गनीयसी।

-मो०१६३१३९०१६१

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

३.पद्य खण्ड

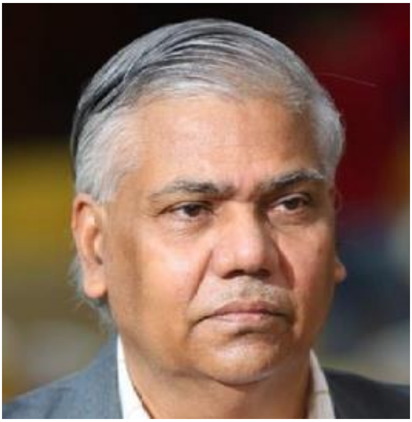
३.१.राज किशोर मिश्र-नारी

३.२.मुन्नी कामत- रामायण

३.३.बाबा बैद्यनाथ- गजल- आभास- "रजनी छन्द"

३.४.डॉ. किशन कारीगर- हौ गाम त गौंआ छियऽह

३.१.राज किशोर मिश्र-नानी



राज किशोर मिश्र, रिटायर्ड चीफ जनरल मैनेजर (सेल), बी(मुख्यालय).एल.एन.एस., दिल्ली,गाम -अन्दन डीह, पाअन्दन . हाट, मधुबनी

नानी

सृष्टि म, शक्ति क नुय अछि ना नी ,
सर्वा ब्र,नि धि नवना क खा ढी ।

गुप्त उा श्री ल सँ चमकौ ण आनन,
का नना - सि न यन (शा रि ण कुन्तल

यणि ब्रना जा नकी, (गली रु यगु ना म संग नन म,
गा गी उगली रु नऊ्र सन, व्रह्मस्ना न गगन-मा।

दी ७ली सा नि ग्री,जमना जक दा आनि ,
सयना न् जी (गलथि,(गला यम रा नि ।

नां गना करुन नी, यना क्रमी ,
ठली रु, माँ सी क ना नी ?
(शी यंक अनगनि ण- ना नी
ूूणि रा स म अछि करा नी ।

अहि वा गी वनि कऽ यणि क' सि नरु,
भि शु लल मा ७, ममणा क (गरुा

वृद्धि, यना क्रम, (शी यं,नि स्ना न,
सरु ऊ्र म वटी,वटा समा ना।

ना नी चला वथि अंगनि ऊ या न,
खगा म नज्ह,कटैग ळथि धा न।

य७ल चनध ७नमस्क गि खन,
रा मि नी वि नू घन नद्दि ह्रा ळूठ घन।

कगका कंयनी क, सी ऊा.ळूी.,
का न ऊत्र म यठा ७ग ना नी क कि ऊा?

नत्री, अरि नत्री , नि दूषी , गुनूआळूनि ,
गि नह्स्नी क नज्ह ळथि ह्व गि नथा ळूनि ।

प्रशा सनि क, यूलि स ,सैच्य अधि का नी ,
का न ऊत्र म नद्दि अठि ना नी?

चू७ी- सा ह्रा गि नि ह्रा थ म लह्0ी,
सीं थि म चमकैन सि हुन,
रा नस लल यजा नथि चूलह्रा,
आ, नि स्हा नक (शा ध क कनथि यूना।

चिं गन कम्यूटनक गकनी क यन,
नज्ह टाँ गथि मटकू७ी सी क यना।

का सि प्रशा ष्ठ वनि सक आॅद्दि,

जमा ७क क' नह्ली ह चूमा न,
ना नी क य्रगि रा दखि कS,
रS नहल ज्ञग क अछि गुमा ना।

ज्ञग मा नि (गल, का ना गनहँ
नहि यूनूख सँ या ठ्ठ अछि ना नी,
यढा वथि नहि ज वटी क,
कS नहल डा ठथि , गलगी व७ रा नी ।

कि ७क, महि ला नहगी अवला ?
य्रगि रा का न नहि ठहि, रला ?

वृमि डौ वा ग कँ सSर कि डा,
'यूजल जा ॐग ठथि जग७ ना नि '

शा स्रका न कहैग ठथि,
'दन वसैग ठथि डहि दा आनि '।

अयन मंगघ editorial.staff.videha@gmail.com **यन यOाउ।**

३.२.मुन्नी कामत- रामायण



मुन्नी कामत

रामायण

राजा दशरथ अवधक भूप
तीन रानी छनि सरूप।
कौशल्या केँ पाहुन नाम
कैकई पुत्र भरत ललाम।
सुमित्राक दु टा लाल
लक्ष्मण, शत्रुघ्न शोभित भाल।
विहुँसैत लागल अवध धाम
बाल रूपम विष्णु अभिराम।
अलौकिक छटा रघुनंदन भाई
बाल-क्रीडा देख शिवशंभु ललचाई।
ज्ञान उपार्जन लेल चलल आगी
ऋषि वशिष्ठ लग पहुँचल चारु सहभागी।
ऋषि वशिष्ठक शिक्षा महान
गुणी बनल सब बालक कैर गुरुक मान।
भेल उजागर सर्वदिशा रामचरित्र

उाय यहुँचला निश्वामित्र ।
संगहि लऽ नघुननक ऋषिनन
चलला दुर्गम यथ यन।
किछ काज छल ज 0मकल गन
दथिन यनुषाम्मं उाकन उम्न।
रल निश्वास मुनिनन कँ
कनागि अनथ्य येह खण्डिग धनुख कँ।
मंद मुस्कान संग यहुँचला जनक धाम
आयाजिग छल सियाक स्वंयमनन उाहि0म।
शिनक सिद्ध धनुख काय नै हिला सकलक
दख ऽऽ। जनक मुख अयन मलीन कलक।
ज यहा७ वनल सव लल छल
उाव सहज प्रगु नाम लल छल।

चानु धिया जनक कँ,अनध कुलक मान वनल
सीगा-नाम, मांडवी -रनग,उर्मी-लक्ष्मण,श्रुगकीर्गी -शत्रुघ्न संग चलल।
मिथिलाम याहुन नाम जेला
घन -घन मंगल गान वजल
जनक दुलनी आव अनधक लाली
माहहा संग सह सखी चलल।
दख नंग -नुय सियाक
गीनां नानी हर्षिग रल
वन -वन उगानि नजलेन
साना -वांदी लुटाउल गेल।

नाग्राध्रिषक ह्वउप नामक
सीता नाजनानी रुपी
राम सव ऋषि मुनियक वीच
पुनुषाध्म नाम उच्चाधिकानी रुपी।
यन विधान लिखल किछ डौन छल
मंथनाक कुटनीतिम कर्कय रुांसल छल।
कुटरुवन मं स्वयं कँ कौद कलक
नाजा दशनथ लग अयन सरुवन यठोलक।
यौद दियलक उाऽ गीन नवन
ज दन छलखिन युद्धक उधा।
मांगेय लल अखन गयर्य रुल
विनाश काल वृद्धि रुनि गेल।
नाजा दशनथ नै दखलक
कर्कय संग कानी नाग
कौरु वैसल वाउ कि लव ववन अछि रुमन नाखव अरुाँक मान।
मांगि वैसल जिद्दा यन वैसल नाग
तसि ललक अकहि शत्रुम युना व्रह्मांत।
रुना लल नाग्राध्रिषक
नाम लल १४वनखक ननवास
सुना अगव दशनथ कँ नुकि गेल सांस।
यागलक गखन कुलटा नानी
वनल काO नाजा गेल मनि मानी।
सुऽऽना नाम धेलक ननवासी नुप

वाल्मी,त्राता सगे आगलक हुया।

एनमनौ नहल गिलकक साज

नै -नै कनौ कनौ नहल अवध समाज ।

कवट, निशान्द,शवनी उवाना

गयस्नि नाम सवहक सहाना।

नुय लक्ष्मणक दख हल सूर्पनखा मारिग

विया अंकुनैल अगेय सीगाक अहिग।

नाक कटा सूर्पनखा कलक चिगकान त्राता

नानीय,नानीक लिखलक दुख गाथा।

सीगाक हनण नावणक यायक अंग छल

अहिलल गँ हनवन अवगनिग हल छल।

हनूमान सन नै हक काना

सुद्दनकाण्ड सजल अछि

ह्रदयम जकन वसल सियावन

छागी हानि दखवौ अछि।

यायक घैला हूटल नावणक संहान हल

अवध नगन मं सियाक (धावी मूँह अयमान हल।

हनल काखि नाजमहल आग

सिया असगन हन वनवासी हली

हम अवला नै छी सभक नानी

वौन लव -कुशक जननी

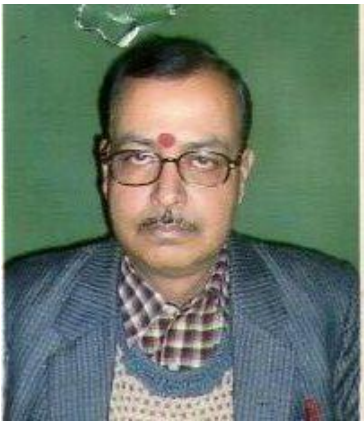
ह्नका सर निधाम नियूर्ण कली।।

माउकं दियावउ उचिग सम्मान

वालक लव- कुश घुमि खेला
प्रायश्चित करैय लल अवध नाथी कँ
जाऽ नाम -सिया कथा कैह सुनला।
हनल सगर बजाउल गेल माँ जानकी एक वन
दियैय लल कहल गेल हुनका अग्नि परीक्षा हुना।
वन -वन अहि परीक्षा लल मर्यादित सिया नै नजली
फाटल धरती सानियैल सुमित्रा जाहिम विलुप्त हऽ गेली।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

३.३.𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒥𑒻𑒠𑓂𑒨𑒢𑒰𑒟- 𑒑𑒖𑒪- 𑒂𑒡𑒰𑒩- "𑒢𑒖𑒩𑒲 𑒕𑒢𑓂𑒯"



𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒥𑒻𑒠𑓂𑒨𑒢𑒰𑒟

ॐ

𑒑𑒖𑒪

𑒂𑒡𑒰𑒩- "𑒢𑒖𑒩𑒲 𑒕𑒢𑓂𑒯"

2 1 2 2 2 1 2 2 2 1 2 2 2

𑒮𑒐-𑒧𑒢𑒼𑒩𑒟𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒱𑒮𑒩𑒱𑒏𑒨 𑒧𑒰𑒩𑒧 𑒠𑒰𑒥𑒲।
𑒥𑒴𑒜𑓃 𑒩𑒯𑒪𑒯𑒳𑒿 𑒞𑒿 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒢𑒯𑒱 𑒂𑒥 𑒩𑒮𑒱𑒨𑒰𑒥𑒲।

𑒣𑒳𑒞𑓂𑒩 𑒢𑒰 𑒣𑒳𑒞𑒯𑒳𑒏 𑒁𑒢𑒩𑓂𑒑𑒪 𑒥𑒰𑒞 𑒪𑒲 𑒮𑒳𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿,
𑒠𑒰𑒥𑒱 𑒪𑒲 𑒞𑒰𑒧𑒮 𑒁𑒣𑒢 𑒢𑒯𑒱 𑒂𑒑𑒱 𑒮𑒳𑒢𑒑𑒰𑒥𑒲।

𑒂𑒃 𑒬𑒱𑒭𑓂𑒙𑒰𑒔𑒰𑒩 𑒞𑒰𑒏𑒥 𑒋𑒏 𑒮𑒣𑒢𑒰 𑒟𑒱𑒏,
𑒏𑒯𑒱 𑒅𑒔𑒱𑒞 𑒧𑒑𑒞𑒰 𑒥𑒜𑓃𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒖𑒰𑒢 𑒁𑒖𑒧𑒰𑒥𑒲।

आपसी मतभेदकँ नहि आन क्यो जानय,
प्रेम बुधियानी सहित सब बात सुलझाबी।

माँ भवानीपन जखन निश्वास दे "बाबा"-,
खूद नहब निश्चल तखन ऐश्वर्य-सुख पाबी।

-बाबा बैद्यनाथ, पूर्णियाँ(बिहार)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

𑓓.𑓔.𑒛𑒽. 𑒏𑒱𑒬𑒢 𑒏𑒰𑒩𑒲𑒑𑒩- 𑒍 𑒑𑒰𑒧 𑒞 𑒑𑒾𑓀𑒂 𑒕𑒱𑒨𑒻𑒏



𑒛𑒽. 𑒏𑒱𑒬𑒢 𑒏𑒰𑒩𑒲𑒑𑒩
𑒍 𑒑𑒰𑒧 𑒞 𑒑𑒾𑓀𑒂 𑒕𑒱𑒨𑒻𑒏

𑒍 𑒑𑒰𑒧 𑒞 𑒑𑒾𑓀𑒂 𑒕𑒱𑒨𑒻𑒏

𑒢𑒲𑒏 𑒯𑒳𑒋 𑒏𑒲 𑒁𑒡𑒪𑒰𑒯 𑒏𑒲 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒪𑒹𑓀?
𑒏𑒰𑒪𑓂𑒯𑒱 𑒯𑒰𑒏𑒲𑒧 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒲 𑒏𑒰𑒪𑓂𑒯𑒱 𑒯𑒻𑒥 𑒯𑒩𑒥𑒰𑒯?

𑒋𑒏 𑒫𑒰𑒮𑒢𑒰 𑒏 𑒯𑒰𑒪 𑒔𑒰𑒪 𑒣𑒴𑒕𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒥𑒯𑒏
𑒍 𑒑𑒰𑒧 𑒮𑓀 𑒑𑒾𑒂𑓀 𑒕𑒱𑒨𑒢𑓂𑒯𑒱.

𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒑𑒰𑒧 𑒧𑒺 𑒋𑒢𑒰 𑒕𑓄 𑒑𑒺𑒪𑒻 𑒄 𑒏𑒬𑓂𑒧𑒲𑒩 𑒏 𑒑𑒺𑒪𑒻
𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒯𑒪𑒰𑓁 𑒥𑒛𑓃 𑒢𑒰𑒧𑒲 𑒯𑒪𑒰𑓁 𑒖𑒧𑒲𑓁𑒠𑒰𑒩
𑒡𑒴 𑒖𑒲 𑒁𑒯𑒰𑓀 𑒏𑒲 𑒥𑒰𑒖𑒥? 𑒁𑒯𑒰𑓀 𑒑𑒰𑒧 𑒧𑒺 𑒋𑒢𑒰 𑒕𑒪?
𑒂𑒥 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒥𑒰𑒡 𑒥𑒪𑒰 𑒪𑒼𑒏 𑒮𑒥 𑒏𑒯𑒰𑓀 𑒢𑒯𑒱 𑒑𑒺𑒪?

𑒂𑒥 𑒢𑒺 𑒍𑒯𑒢 𑒑𑒰𑒧 𑒩𑒯𑒪𑒻 𑒂 𑒢𑒺 𑒑𑒧𑒻𑒨𑒰 𑒪𑒼𑒏
𑒢𑒲𑒏 𑒥𑒖𑒰𑒋 𑒮𑒳𑒢𑒪𑒰 𑒥𑒰𑒠 𑒑𑒰𑒧 𑒮 𑒮𑒲𑒢𑒯
𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒢𑒰𑒧 𑒑𑒳𑒧𑒰𑒢 𑒁𑒦𑒱𑒧𑒰𑒢 𑒯𑒢𑒱𑒭𑓂𑒚𑒰 𑒪𑒥 𑒧𑒰𑒢
𑒏𑒰𑒪𑓂𑒯𑒱 𑒢𑒺 𑒥𑒰𑒪 𑒯𑒰𑒮 𑒠𑒞 𑒖 𑒑𑒰𑒧 𑒞 𑒑𑒾𑒂𑓀 𑒕𑒱𑒨𑒢𑓂𑒯𑒱?

𑒂𑒥 𑒖𑒰𑒞𑒱 𑒧𑒺 𑒥𑓀𑒙𑒰 𑒑𑒺𑒪 𑒑𑒰𑒧
𑒧𑒳𑒐𑒱𑒨𑒰 𑒮𑒩𑒣𑓁𑒔 𑒏 𑒑𑒳𑒪𑒰𑒧 𑒕𑒪 𑒑𑒰𑒧
𑒏𑒏𑒩𑒰 𑒁𑒢𑒏𑒰 𑒮 𑒧𑒰𑒢 𑒧𑒞𑒪𑒥 𑒢𑒻?
𑒂𑒯𑒞 𑒫𑒱𑒨𑒼𑒑 𑒧𑒺 𑒏𑒰𑒪𑓂𑒯𑒱 𑒏𑒏𑒩𑒰 𑒮𑓁𑒑 𑒢𑒺 𑒠𑒞?

𑒖𑒢 𑒯𑒪𑒫𑒰𑒯 𑒧𑒱𑒢𑒯𑒞 𑒫𑒰𑒢𑒱𑒯𑒰𑒢 𑒯𑒰𑒏𑒲𑒧 𑒁𑒯𑒮𑒢
𑒮𑒥 𑒋𑒏𑒫𑒰𑒮𑒢𑒰 𑒮 𑒛𑒴𑒥𑒪 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒻
𑒂𑒥 𑒮𑒥 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒮𑒳𑒂𑒢𑒟 𑒕𑒪 𑒂𑒢𑒯𑒢
𑒏𑒞𑒾 𑒥𑒱𑒪𑒰 𑒑𑒺𑒪 𑒑𑒰𑒧 𑒞 𑒑𑒾𑒂𑓀 𑒕𑒱𑒨𑒢𑓂𑒯𑒱 𑒥𑒪𑒰 𑒑𑒰𑒧.

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

